www.indiatodayhindi.in

देश के सर्वश्रेष्ठ बी-स्कूल

आदिवासियों की दीपावली: जहां अंधकार भी उम्मीद है

अखिलेश-राजभर की दोस्ती के मायने

17 नवंबर, 2021 50 रुपए

इंडिया टुडे

डेटिंग के नए नियम

डिजिटल दुनिया का मेला भारतीय अविवाहित लोगों को महामारी के डर और हिचक से बाहर आकर रोमांस तलाशने में मदद कर रहा है

RNI NO 45823/86 REGISTERED NO. DL(ND)-11/6042/2021-22-2023; LICENSED TO POST WPP NO U(C)-31/2021-23; FARIDABAD/46/2020-22

अग्रिम सप्ताह के लिए प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित; एलपीसी दिल्ली-आरएमएस-दिल्ली-110006 से प्रत्येक शनिवार और सोमवार को प्रेषित; कुल पन्नों की संख्या 70 (आवरण सहित)

OO

VISIT…

प्रधान संपादक की कलम से

मनुष्य सामाजिक प्राणी है. संग-साथ के बिना कैसे रहेगा! शारीरिक और मानसिक अंतरंगता की मानवीय चाहत आदिम जमाने से है. रिश्ते ही हमें और हमारी जिंदगी को परिभाषित करते हैं. पिछले 75 सालों की सबसे भीषण वैश्विक महामारी कोविड-19 ने इनसान के शरीर और मन पर बुरा असर डाला, उनके आपसी रिश्तों को भी उतनी ही गहराई से प्रभावित किया. पिछले साल दुनिया के शायद सबसे कठोर लॉकडाउन में हम अपने घरों में बंद हो गए और एक दूसरे से सामाजिक दूरी बना ली. कहर रिश्तों पर टूटा. एक लोकप्रिय डेटिंग ऐप के वैश्विक सर्वे से पता चला कि इसमें शामिल 48 फीसद लोगों का अपने साथी के साथ अलगाव हो गया या उन्होंने मिलना बंद कर दिया और जनवरी 2020 के बाद किसी से संबंध नहीं बनाया. इनमें जेनरेशन जेड या नई सहस्त्राब्दि के आसपास जन्मी और हाल के सालों में जवान हुई पीढ़ी के लोग 53 फीसद थे. जब लॉकडाउन में ढील दी गई, तो एक नया डर हावी हो गया. एक डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म के दुनिया भर में किए गए अध्ययन से पता चला कि इसमें शामिल अधिकांश लोग नए रिश्तों को लेकर जितने रोमांचित थे उतने ही सशंकित भी थे.

मगर तकनीक ने फिर राह दिखाई. पिछले साल 30 मार्च को महामारी पर हमारी पहली आवरण कथा 'कोरोना के दौर में जिंदगी' पर मैंने लिखा था कि तकनीक और इंटरनेट से निर्मित तंत्र ने किस तरह इस आपदा की तकलीफों को कम करने में अनिवार्य भूमिका अदा की थी. बीते डेढ़ साल में महामारी की वजह से डिजिटल कायापलट की रफ्तार तेज हो गई है. घर से काम और वीडियो कॉल अब सामान्य हो गए हैं. यह डिजिटल जीवन अब तय कर रहा है कि लोग किस तरह एक दूसरे से मिलते हैं. ऑनलाइन डेटिंग पहले भी होती रही है, लेकिन अब कोविड और ऐप की भरमार ने डेटिंग का खेल बदल दिया है. फोन पर साथ नेटफ्लिक्स देखना, पार्टी के ऐप और यहां तक कि वीडियो डिनर डेट भी सामान्य हो रहे हैं. इसे डेट फ्रॉम होम या घर से डेटिंग कहा जा सकता है.

मार्च 2020 में एक लोकप्रिय डेटिंग ऐप ने 24 घंटों के भीतर दुनिया भर में 3 अरब स्वाइप दर्ज किए, जो एक दिन में उसके सबसे ज्यादा स्वाइप थे. एक अन्य डेटिंग ऐप के अनुसार मार्च से मई 2020 के बीच पूरी दुनिया में डेटिंग में 700 फीसद का इजाफा हुआ. एक तीसरे ऐप ने दुनिया भर में वीडियो कॉल में 70 फीसद की उछाल दर्ज की. ब्लाइंड डेट या अजनबियों के साथ डेटिंग के दिन अब पीछे छूटते दिखाई देते हैं. एक डेटिंग ऐप के सर्वे से पता चला कि 72 फीसद अविवाहित हिंदुस्तानी अब सोचते हैं कि रू-ब-रू मिले बिना ऑनलाइन किसी के प्यार में पड़ जाना अब मुमकिन है.

नए रुझानों से जाहिर होता है कि वन नाइट स्टैंड या एक रात के दैहिक रिश्तों की बजाय जरूरत ज्यादा वफादार और मजबूत रिश्तों की है. डिजिटल डेटिंग के क्षेत्र में महिलाएं कहीं आगे हैं और जाहिर है कि इसकी वजह उनकी अपनी सुरक्षा भी है क्योंकि मुलाकात के लिए निकलने से पहले वे वर्चुअल माध्यम से बात कर सकती हैं. पारदर्शिता और प्रामाणिकता पर जोर अब अधिक है. ऑनलाइन डेटिंग अपना व्याकरण लेकर आई है. कुछ नए शब्द हैं, मसलन एफओडीए या फोडा यानी 'फियर ऑफ डेटिंग अगेन' या फिर डेट करने का डर; 'हार्डबॉलिंग' यानी अपने इरादों के बारे में ईमानदार होना; 'क्वारंटीन बेइ' यानी महामारी के दौरान संबंध, और 'जम्प्ड' यानी जूम पर डंप कर देना या छोड़ देना.

हमारी आवरण कथा 'डेटिंग के नए नियम' इस बात की पड़ताल करती है कि डेटिंग के इस नए संसार में अविवाहित लोग क्या चाहते हैं. यह सोनाली आचार्जी ने लिखी है. स्थितियों के धीरे-धीरे सामान्य होने के साथ डेटिंग का भविष्य क्या होगा? भारत के एक ऑनलाइन डेटिंग प्लेटफॉर्म के एक अध्ययन से पता चला कि वीडियो डेटिंग का दौर लंबा चलने वाला है. उसके 39 फीसद यूजर ने कुबूल किया कि 2021 में पहली डेट के विकल्प के तौर पर वे वीडियो डेट में संभावना तलाश रहे थे. डेटिंग का तरीका बुनियादी तौर से बदल गया है. महामारी का दुस्वप्न जब खत्म होगा, इस दौर में हासिल हुए भावनात्मक जुड़ाव और हमदर्दी की अहमियत शायद तब भी बनी रहेगी. यह अच्छा संकेत होगा.

अरुण पुरी

(अरुण पुरी)

17 फरवरी, 1999 का आवरण

6 दिसंबर, 2006 का आवरण

26 मार्च, 2008 का आवरण

20 फरवरी, 2013 का आवरण

29 जून, 2016 का आवरण

इंडिया टुडे

www.indiatodayhindi.in

चेयरमैन और प्रधान संपादक: अरुण पुरी
वाइस चेयरपर्सन: कली पुरी
ग्रुप चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर: दिनेश भाटिया
ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टर: राज चेंगप्पा
चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर: मनोज शर्मा
एडिटर: सौरभ द्विवेदी
डिप्टी एडिटर: आशुतोष भारद्वाज
सीनियर एडिटर: मोहम्मद वक़ास
एसोसिएट एडिटर: शिवकेश मिश्र, आशीष मिश्र (लखनऊ)
असिस्टेंट एडिटर: मनीष दीक्षित, सुजीत ठाकुर
राज्य ब्यूरो:, अभिताभ श्रीवास्तव (पटना), रोहित परिहार (जयपुर), एम.जी. अरुण (मुंबई), राहुल नरोन्हा (भोपाल), अमरनाथ के. मेनन (हैदराबाद)
ग्रुप क्रिएटिव एडिटर: नीलांजन दास
एसोसिएट आर्ट डायरेक्टर: चंद्रमोहन ज्योति
असिस्टेंट आर्ट डायरेक्टर: असित रॉय
ग्रुप फोटो एडिटर: बंदीप सिंह
फोटो डिपार्टमेंट: यासिर इकबाल, राजवंत रावत, चंद्रदीप कुमार, मंदार सुरेश देवधर (मुंबई)
चीफ फोटो रिसर्चर: प्रभाकर तिवारी
प्रिंसिपल फोटो रिसर्चर: सलोनी वैद
प्रोडक्शन चीफ: अभिनव पुगला

एसोसिएट पब्लिशर: विद्या मेनन (इंपैक्ट)
इंपैक्ट टीम
नेशनल हेड: सुपर्णा कुमार (गवर्नमेंट ऐंड पीएसयू)
सीनियर जनरल मैनेजर: जीतेंद्र लाड (वेस्ट)
जनरल मैनेजर: मयूर रस्तोगी (नॉर्थ), उपेंद्र सिंह (बेंगलूरू)
डिप्टी जनरल मैनेजर: इंद्रनील चटर्जी (ईस्ट)
ग्रुप चीफ मार्केटिंग ऑफिसर: विवेक मल्होत्रा
सेल्स एवं ऑपरेशन
सीनियर जनरल मैनेजर: दीपक भट्ट (नेशनल सेल्स)
जनरल मैनेजर: विपिन बग्गा (ऑपरेशंस)
डिप्टी जनरल मैनेजर: राजीव गांधी (नॉर्थ)
डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजर: योगेश गोधनलाल गौतम (वेस्ट)
डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजर: एस. परमशिवम (साउथ)
सीनियर सेल्स मैनेजर: पीयूष रंजन दास (ईस्ट)

INDIA TODAY GROUP

वर्ष: 35; अंक: 51; 11-17 नवंबर, 2021; प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित

- **संपादकीय कॉर्पोरेट कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, इंडिया टुडे ग्रुप मीडियाप्लेक्स, एफसी-8, सेक्टर 16-ए, फिल्म सिटी, नोएडा-201301, फोन: 0120-4807100;
- **ग्राहकी चंदा भेजें:** इंडिया टुडे (हिंदी), पो. बॉक्स 114, नई दिल्ली-110001
- **ग्राहक सेवा:** कस्टमर केयर, इंडिया टुडे ग्रुप, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301, टोल फ्री फोन नं. 1800 1800 100 (बीएसएनएल/एमटीएनएल लाइनों से) फोन: दिल्ली, फरीदाबाद से (95120) 2479900; शेष भारत से (0120) 2479900. (सोम से शुक्र-सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक), फैक्स: (0120) 4078080. ई-मेल: wecare@intoday.com
- **सर्कुलेशन कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301
- **इंपैक्ट कार्यालय:** 1201, 12वां तल, टावर 2ए, वन इंडियाबुल्स सेंटर, (जुपिटर मिल्स) एस.बी. मार्ग, लोअर परेल (पश्चिम)-मुंबई-400013. फोन: 022-66063355 फैक्स: 022-66063226
- **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** ए1-ए2, एनके सेंटर, विनुज्य निकुंज, उद्योग विहार, फेज-5, गुड़गांव, हरियाणा, फोन: 0124-4948400;
- 201-204 रिचमंड टावर्स, द्वितीय मंजिल, 12 रिचमंड रोड, बंगलूरू-560 025 फोन: 2212448, 226233, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. फैक्स: 080-2218335.
- रजिस्टर्ड कार्यालय: एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
- सभी विवादों का निबटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा.
- **लिविंग मीडिया इंडिया लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मनोज शर्मा द्वारा एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और थॉमसन प्रेस इंडिया लि., 18-35, माइलस्टोन, दिल्ली-मथुरा रोड, फरीदाबाद-121 007 (हरियाणा) में मुद्रित. संपादक: राज चेंगप्पा**

भीतर

सुर्खियां
पेगासस पर फैसला: गोपनीयता का लबादा
पेज 6

तमिलनाडु: शशिकला की पहेली
पेज 12

फुरसत
दीपावली विशेष: अंधकार है उम्मीद जहां
पेज 62

सवाल-जवाब/शशि थरूर: उम्र भर का काम
पेज 68

14

आवरण कथा

इश्क में उतरने के नए नियम

टीकाकरण के बाद भारत में डेटिंग हुई हाइब्रिड, ऑनलाइन और ऑफलाइन विकल्पों की भरमार

इलस्ट्रेशन: नीलांजन दास

उत्तर प्रदेश

22 राज दिला पाएंगे राजभर?

विधानसभा चुनावों के लिए ओमप्रकाश राजभर ने सपा से हाथ मिलाया. भाजपा पर आखिर कितना असर पड़ेगा?

बाड़मेर

32 नखलिस्तान बनता एक नगर

नमक की क्यारियों के लिए जाना जाता रहा एक कस्बा पचपदरा अब रिफाइनरी के जरिए विकास का केंद्र बना

देश के बेस्ट बी-स्कूल

37 श्रेष्ठ शिक्षा का कारोबार

जब कुछ भी स्थायी नहीं है, बी-स्कूलों के क्रम में उलटफेर स्वाभाविक है. लेकिन यह उन्हें छात्रों को महामारी के बाद की दुनिया के लिए तैयार होने से रोक नहीं रहा

इंडिया टुडे

इंडिया टुडे मैगजीन मिलने में दिक्कत हो रही है?
9311409555 पर नाम पता या 'हेलो' संदेश भेजें.
या मेल करें: Moreinfo@intoday.com
हम आपसे संपर्क कर लेंगे.

आवरण: नीलांजन दास

पाठकों के लिए सूचना: कभी-कभी आपको इंडिया टुडे पत्रिका में 'इम्पैक्ट फीचर' या 'एडवरटोरियल' या 'फोकस' के पन्ने नजर आएंगे. ये विज्ञापन होंगे और इन्हें बनाने में पत्रिका के संपादकीय स्टाफ शामिल नहीं होते.

INDIA TODAY GROUP

पाठकों को सलाह दी जाती है कि पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सेवा या व्यक्ति के विज्ञापन और प्रचार से संबंधित सामग्री से वचनबद्धता कायम करने, पैसा भेजने या खर्च करने से पहले उचित जांच-पड़ताल कर लें. विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व इंडिया टुडे ग्रुप का नहीं है. ऐसे किसी भी तरह के दावों को विज्ञापनदाता अगर नहीं पूरा करता है तो इंडिया टुडे ग्रुप के प्रकाशनों के मुद्रक, प्रकाशक, एडिटर-इन-चीफ और एडिटर इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे.

समाचार सारः
विमान वार्ता
पेज 9

आरक्षणः क्या कोटा प्रतिभावान उम्मीदवारों को बेदखल कर रहा?
पेज 10

तमिलनाडु :शशिकला की पहेली
पेज 12

सुर्खियां

इलस्ट्रेशनः सिद्धांत जुमडे

पेगासस पर फैसला

गोपनीयता का लबादा

कौशिक डेका

''राज को राज रखना चाहते हो, तो तुम्हें इसे खुद से छिपाना होगा.''

यह पंक्ति जॉर्ज ऑरवेल के उपन्यास *1984* की है. प्रधान न्यायाधीश एन.वी. रमन की अगुआई में सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों की पीठ ने 27 अक्तूबर को पेगासस स्पाइवेयर विवाद पर अपने आदेश में इस पंक्ति को उद्धृत किया. अदालत ने इस मामले में याचिकाकर्ताओं के आरोपों पर विस्तृत जवाब दाखिल करने से केंद्र सरकार के इनकार पर कड़ा ऐतराज जाहिर किया और कहा कि ''जब नागरिकों के बुनियादी अधिकार खतरे में हों तो उसे विरोध का रवैया नहीं अपनाना चाहिए.''

तीन जजों की पीठ ने माना कि राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों में न्यायिक समीक्षा की गुंजाइश सीमित है. पर उसने दोटूक कहा कि सरकार 'राष्ट्रीय सुरक्षा' का हौवा खड़ा करके 'खुली छूट' हासिल नहीं कर सकती. अदालत ने नागरिकों की जासूसी के लिए स्पाइवेयर के विवादित इस्तेमाल में सरकार की कथित मिलीभगत की जांच करने के लिए तीन सदस्यों की एक विशेषज्ञ समिति गठित कर दी.

राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर गोपनीयता की जायज सीमाएं स्पष्ट करते हुए अदालत का आदेश कहता है कि सरकार राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी सूचना देने से सिर्फ तभी मना कर सकती है जब राज्यसत्ता को कानून के तहत निश्चित बचाव प्राप्त हो, पर तब भी उसे 'अदालत में साबित करना और औचित्य बताना होगा'. अदालत ने अपने हस्तक्षेप का बचाव किया, ''सरकार के राष्ट्रीय सुरक्षा की दुहाई देने भर से अदालत मौन तमाशबीन नहीं हो जाती.''

फैसला ऐसे वक्त आया जब प्रधान न्यायधीश ने कहा था कि ''कार्यपालिका के दबाव को लेकर काफी चर्चा है.'' ऐसे में कई लोगों ने अदालत की कार्रवाई का यह कहकर

स्वागत किया कि यह नागरिक अधिकारों के संरक्षक के रूप में न्यायपालिका की भूमिका का पुरजोर आग्रह करता है. आदेश मोटे तौर पर तीन मुद्दों की चर्चा करता है, जो हाल के दिनों राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में रहे हैं. ये हैं नागरिकों की निजता का (बुनियादी) अधिकार; कार्यपालिका की ओर से 'राष्ट्रीय सुरक्षा' की दुहाई देने की न्यायिक समीक्षा; तथा बोलने की स्वतंत्रता और स्वतंत्र प्रेस की निगरानी के निहितार्थ.

कई कानूनी विशेषज्ञों ने इसे भारत के संवैधानिक इतिहास का ऐतिहासिक क्षण कहा, क्योंकि न्यायपालिका ने पहली बार राष्ट्रीय सुरक्षा की पवित्र गाय की पड़ताल की है. सुप्रीम कोर्ट के वकील और साइबर कानून विशेषज्ञ पवन दुग्गल कहते हैं, ''पहले इससे जुड़े मुद्दों की जांच-पड़ताल करने से अदालत को रोकने के लिए सरकार की ओर से राष्ट्रीय सुरक्षा की दुहाई देना भर काफी होता था. देश में साइबर सुरक्षा के लिए समर्पित कोई कानून नहीं है. ऐसे में यह फैसला आगे का रास्ता प्रशस्त करता है कि न्यायपालिका राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों से कैसे निपटेगी.''

सुप्रीम कोर्ट का आदेश कई पत्रकारों, एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया, डेमोक्रेसी एक्टीविस्ट्स और एक राज्यसभा सांसद की ओर से दाखिल मामलों पर आया, जो कथित तौर पर पेगासस स्पाइवेयर के शिकार रहे हैं. पेगासस इज्राएली साइबरटेक फर्म एनएसओ ग्रुप ने बनाया है और इससे टारगेट के स्मार्टफोन को हैक किया जाता है. पेगासस विवाद 18 जुलाई को शुरू हुआ, जब यह खुलासा हुआ कि दुनिया भर में करीब 50,000 स्मार्टफोन इस स्पाइवेयर के संभावित टारगेट की सूची में थे. इनमें भारतीय केंद्रीय मंत्रियों, राजनीतिज्ञों, कार्यकर्ताओं, कारोबारियों और पत्रकारों के या उनके इस्तेमाल स्मार्टफोन भी थे. फॉरेंसिक जांच से पता चला कि इनमें से कुछ को न सिर्फ निशाना बनाया गया बल्कि हैक भी कर लिया गया. एनएसओ ग्रुप ने दावा किया कि उसका हैकिंग सॉफ्टवेयर गंभीर अपराधों की वैध जांच के लिए केवल और पूरी तरह सरकारों को ही बेचा जाता है. ऐसे में याचिकाकर्ताओं ने यह पता लगाने के लिए कि केंद्र सरकार ने अपने नागरिकों की जासूसी के लिए पेगासस का इस्तेमाल किया या नहीं, न्यायिक जांच की मांग की.

विवाद छिड़ने पर फ्रांस, इज्राएल और मोरक्को सहित कई देशों ने जांच के आदेश दिए. मगर भारत में भाजपा की अगुआई वाली केंद्र सरकार टालमटोल करती रही. उसने विपक्षी दलों की जांच और संसद में चर्चा की मांग को बलपूर्वक रोक दिया.

सुप्रीम कोर्ट में केंद्र ने 'सीमित हलफनामा' दायर किया. इसमें उसने पेगासस स्पाइवेयर के इस्तेमाल की न तस्दीक की और न इनकार किया. उसने कहा कि आरोप अटकलों और अपुष्ट मीडिया रिपोर्टों पर आधारित हैं तथा इस विषय पर चर्चा राष्ट्रीय हित के खिलाफ होगी. फिर उसने 'किसी भी गलत नैरेटिव को दूर करने' के लिए विशेषज्ञ समिति बनाने की पेशकश की. अदालत ने सरकार के हलफनामे को 'बहुत लंबा-चौड़ा और अस्पष्ट खंडन' करार देते हुए खारिज कर दिया. उसने विशेषज्ञ समिति बनाने की सरकार की मांग भी ठुकरा दी और खुद अपनी समिति बनाई. अदालत की बनाई समिति में नेशनल फॉरेंसिक साइंसेज यूनिवर्सिटी, गांधीनगर के डीन नवीन कुमार चौधरी, केरल की अमृता विश्व विद्यापीठ के

केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में सीमित हलफनामा दाखिल किया. उस हलफनामे में उसने पेगासस के इस्तेमाल की न तो तस्दीक की और न ही इससे इनकार किया

प्रोफेसर प्रबहरण पी. और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मुंबई के एसोसिएट प्रोफेसर अश्विन अनिल गुमास्ते हैं. सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज आर.वी. रवींद्रन उनकी देखरेख करेंगे और इस काम में उनके सहायक होंगे रिसर्च ऐंड एनालिसिस विंग के पूर्व प्रमुख आलोक जोशी और साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ संदीप ओबेरॉय.

अदालत ने समिति से कहा है कि वह जांच करे कि क्या भारत सरकार या उसकी किसी एजेंसी ने नागरिकों की जासूसी के लिए पेगासस का इस्तेमाल किया और यह कानूनी प्रक्रियाओं, नियमों और दिशानिर्देशों का पालन करते हुए किया गया या नहीं. समिति से यह भी उम्मीद की गई है कि वह अनधिकृत निगरानी की घटनाओं को रोकने के लिए कानूनों और तंत्र के बारे में सुझाव दे और साइबर सुरक्षा खतरों की जांच के लिए स्वतंत्र एजेंसी की स्थापना के बारे में अदालत को सलाह दे.

सुप्रीम कोर्ट ने निजता को 'सभ्य लोकतांत्रिक समाज' के लिए सबसे महत्वपूर्ण 'पवित्र जगह' बताया और अपने 2017 के उस फैसले पर बल दिया, जिसमें निजता के अधिकार को बुनियादी अधिकार माना गया है. राज्यसत्ता या बाहरी एजेंसी की ओर से कोई भी निगरानी व्यक्ति के निजता के अधिकार का उल्लंघन है. कोर्ट ने माना कि निगरानी सरकारों के हाथ में जायज औजार है, पर उसने बलपूर्वक कहा कि इसका इस्तेमाल भी निर्धारित मानदंडों और कानून की ओर से स्थापित प्रक्रियाओं के दायरे में ही किया जा सकता है. जजों ने कहा कि अंधाधुंध जासूसी का खौफनाक असर पब्लिक वॉचडॉग के रूप में प्रेस की बेहद अहम भूमिका पर हमला है और सटीक तथा भरोसेमंद जानकारी देने की उसकी क्षमता को खोखला कर सकता है.

विपक्षी नेताओं ने फैसले की तारीफ की, तो कुछ आलोचकों ने ऐतराज भी जताए. विधि सेंटर फॉर लीगल पॉलिसी में सीनियर रेसिडेंट फेलो आलोक प्रसन्न कुमार ने इसे महज 'सोशल मीडिया पर तालियां और सुर्खियां बटोरने के मकसद दिया गया फैसला' बताया. मद्रास हाइकोर्ट के वकील सुहरिथ पार्थसारथी ने लिखा: 'पेगासस के इस्तेमाल का खंडन या पुष्टि करते हुए समुचित हलफनामा दाखिल करने के सरकार के जिद्दी इनकार के आगे सोचा तो यह था कि अदालत प्रमाण पेश करने के लिए सरकार को मजबूर करने का फरमान जारी करेगी. इसके बजाए उसने तथ्यों की खोजबीन विशेषज्ञों की एक समिति पर छोड़ दी. इसकी कोई गारंटी नहीं है कि जिस सरकार ने अदालत के सामने खामोश रहना चुना, वह बाहरी समिति के आगे सब खोलकर रखेगी.'

इसको लेकर संदेह हैं कि कथित जासूसी के तथ्यों का पता लगाने में जांच समिति कितना आगे जा सकेगी. इसके बावजूद इसका बनाया जाना ही इस बात की स्वीकारोक्ति की तरह देखा गया कि निगरानी के मामलों पर लागू होने वाले भारतीय कानूनों को समीक्षा की जरूरत है. आइटी कानून विशेषज्ञ और लॉ फर्म टेकलेजिस के मैनेजिंग पार्टनर सलमान वारिस कहते हैं, ''इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि समिति निजता और डेटा संरक्षण में सेंध की रक्षा के लिए मौजूदा कानूनी ढांचे की भी समीक्षा करेगी और व्यापक कानून पारित होने तक नागरिकों के निजता के अधिकार की रक्षा के लिए अंतरिम कानूनी उपाय सुझाएगी. बाद में अंतिम फैसले में सुप्रीम कोर्ट इन पर विचार कर सकता है.'' इसकी कामयाबी अलबत्ता इस पर निर्भर करेगी कि जो जानकारियां केवल सरकार से ही मिल सकती हैं, उन्हें पाने के लिए यह कितनी स्वतंत्र और सक्षम है. सिर्फ उम्मीद ही की जा सकती है. ■

इलस्ट्रेशनः सिद्धांत जुमडे

समाचार सार

विमान वार्ता

दो हजार बाइस के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा के खिलाफ संयुक्त विपक्ष की चर्चा जोरों पर है. कांग्रेस महासचिव और यूपी प्रभारी प्रियंका गांधी ने हाल ही में दिल्ली-लखनऊ विमान यात्रा में सपा (समाजवादी पार्टी) के राष्ट्रीय प्रमुख अखिलेश यादव के साथ संक्षिप्त बातचीत की. किसी को नहीं पता कि उन्होंने क्या बात की. दोनों पार्टियों के नेताओं ने इस मुलाकात को इत्तेफाक बताया. लेकिन नौ दिन बाद प्रियंका राष्ट्रीय लोक दल के प्रमुख जयंत चौधरी के साथ एक चार्टर्ड विमान पर दिखाई दीं. चौधरी लखनऊ एयरपोर्ट के लाउंज में थे, तभी प्रियंका ने उन्हें दिल्ली के लिए उड़ान भरने के लिए राजी किया. आखिर क्या पक रहा है? क्या प्रियंका सपा-रालोद गठबंधन के बीच कूद रही हैं?

सलाहकार की तलाश

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार **अजीत डोभाल** अक्तूबर में लेफ्टिनेंट जनरल विनोद खंडारे के पद छोड़ने के बाद नए सैन्य सलाहकार की तलाश कर रहे हैं. हाल में सेवानिवृत्त सेना के एक जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ का नाम संभावित उत्तराधिकारी के रूप में चल रहा है. इस बीच, पीएमओ एक नया समुद्री सुरक्षा सलाहकार नियुक्त करने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है, जो डोभाल को रिपोर्ट करेगा. हाल ही में सेवानिवृत्त वाइस एडमिरल के संभावित उम्मीदवार होने की अटकलें हैं.

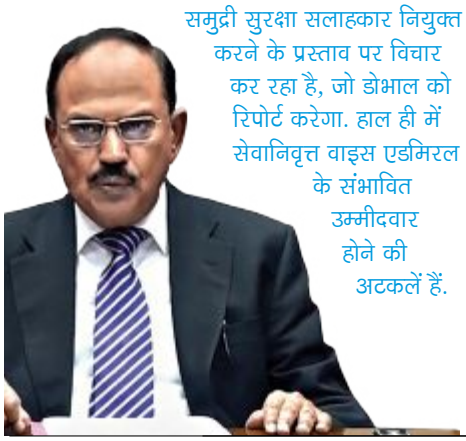

एएनआइ

विपश्यना अवकाश

बिहार के मुख्यमंत्री **नीतीश कुमार** के समर्थक उनके योग और ध्यान की दिनचर्या को मुश्किल गठबंधन संभालने का रहस्य बताते हैं. अब, ऐसा लगता है नीतीश चाहते हैं कि राज्य के लगभग 3,00,000 सरकारी कर्मचारी उनका अनुसरण करें. वे अब 15 दिन के विपश्यना अवकाश के हकदार हैं. सामान्य प्रशासन विभाग के एक आदेश में कहा गया है कि इसका कर्मचारियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा. शायद राजनेताओं को भी इसकी जरूरत है?

एएनआइ

—संदीप उन्नीथन, साथ में आशीष मिश्र, रोमिता दत्ता, किरण डी. तारे और अमिताभ श्रीवास्तव

बहुभाषी ममता दीदी

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री **ममता बनर्जी** गोवा के मतदाताओं के साथ बेहतर जुड़ाव के लिए कोंकणी सीखने की सोच रही हैं. हाल ही में चुनावी राज्य के तीन दिवसीय प्रचार दौरे ने उन्हें आश्वस्त किया है कि वे कोंकणी भाषा सीख सकती हैं. हिंदी, अंग्रेजी और बांग्ला के अलावा, दीदी गुरुमुखी, नेपाली, अलचिकी, असमिया, भोजपुरी और उर्दू के साथ भी सहज हैं. कहना होगा कि वे बिल्कुल बहुभाषी हैं.

टी-20 नहीं

विजय रूपाणी अपने फैसले लेने की गति का वर्णन करने के लिए अक्सर टी- 20 रूपकों का प्रयोग करते थे. यह तब तक था, जब तक कि वे सितंबर में भाजपा के बड़े पैमाने पर फेरबदल में क्लीन बोल्ड नहीं हो गए, जिसके चलते मुख्यमंत्री के रूप में उनकी विदाई हो गई. नए मुख्यमंत्री **भूपेन पटेल** अधिक चौकस हैं. हाल ही में अहमदाबाद में एक बैठक में उन्होंने कहा कि एक दिन में निर्णय नहीं लिए जा सकते हैं. वे टेस्ट क्रिकेट के प्रशंसक हैं?

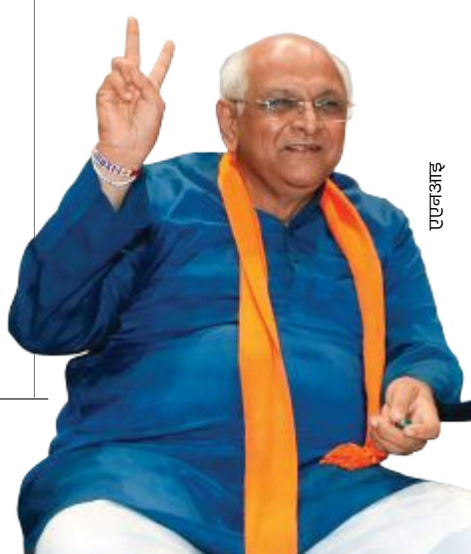

एएनआइ

केशव सिंह/गेट्टी इमेजेज

दाखिले का संघर्ष
12 सितंबर को चंडीगढ़ में नीट परीक्षा देने जाते अभ्यर्थी

आरक्षण

क्या आरक्षण कोटा प्रतिभावान उम्मीदवारों को बेदखल कर रहा है?

कौशिक डेका

केंद्र सरकार ने 29 जुलाई को एक अधिसूचना जारी की और चिकित्सा और दंत चिकित्सा कोर्स में स्नातक और स्नातकोत्तर के लिए, इस शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत से दो नए आरक्षण की व्यवस्था दी. अखिल भारतीय कोटा (एआईक्यू) के तहत उपलब्ध सीटों में से 10 प्रतिशत सीटें ईडब्ल्यूएस (आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग) श्रेणी के उम्मीदवारों के लिए और 27 प्रतिशत ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) उम्मीदवारों के लिए आरक्षित होंगी. एआईक्यू सीटों की व्यवस्था, 1986 में सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के अनुसार की गई थी ताकि किसी भी राज्य के विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के आधार पर अन्य राज्यों के अच्छे मेडिकल कॉलेजों में भी पढ़ाई का अवसर मिल सके और उस राज्य का निवासी न होना (डोमिसाइल) उनके लिए बाधक न बने. नई अधिसूचना के परिणामस्वरूप मेडिकल कॉलेजों में स्नातकोत्तर (पीजी) पाठ्यक्रमों में 2,500 सीटें ओबीसी उम्मीदवारों को मिलेंगी, साथ ही 1,000 ईडब्ल्यूएस उम्मीदवारों के लिए होंगी.

हालांकि इस साल पीजी पाठ्यक्रमों में दाखिला, जो 25 अक्तूबर से शुरू होने वाला था, वह अभी रुका हुआ है क्योंकि सरकार की अधिसूचना को स्नातकोत्तर डिग्री हासिल करने के आकांक्षी 40 से अधिक डॉक्टरों की तरफ से सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई है. ईडब्ल्यूएस दर्जा निर्धारित करने के लिए केंद्र की तरफ से निर्धारित 8 लाख रुपये की वार्षिक आय सीमा उन बिंदुओं में से एक है जिसके आधार पर याचिकाकर्ताओं ने केंद्र के 29 जुलाई के आदेश को चुनौती दी है. कोर्ट ने भी अन्य बिंदुओं के अलावा आय सीमा के औचित्य पर सवाल उठाए थे. केंद्र ने अब आश्वासन दिया है कि जब तक इस मुद्दे पर कानूनी प्रक्रिया पूरी नहीं हो जाती, तब तक दाखिला प्रक्रिया को आगे नहीं बढ़ाया जाएगा.

21 अक्तूबर को सुनवाई के दौरान जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़, जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस बी.वी. नागरत्ना की तीन सदस्यीय पीठ ने केंद्र सरकार के प्रतिनिधि से पूछा कि 8 लाख रुपये की आय सीमा तक पहुंचने के लिए क्या स्टडी की गई थी और ऐसा क्यों माना जाता है कि यह आंकड़ा पूरे देश में समान रूप से लागू किया जा सकता है. अदालत ने, यह पूछते हुए कि क्या यह ''असमानों को समान बनाने'' का प्रयास था, कहा कि केंद्र ''बिना किसी ठोस आधार के'' कोई आय सीमा नहीं खींच सकता है. अदालत ने इसमें एक विरोधाभास भी पाया: ''ओबीसी श्रेणी में 'क्रीमी लेयर' के तहत उन्हें समझा जाता है जो तरक्की कर चुके हैं और जिनकी वार्षिक आय 8 लाख रुपये से अधिक है. दूसरी ओर, आप ईडब्ल्यूएस श्रेणी के तहत लाभार्थियों को शामिल करने के लिए 8 लाख रुपये का समान आय मानदंड तय करते हैं. यानी, आप ओबीसी के एक वर्ग को दायरे से बाहर करने और ईडब्ल्यूएस के रूप में एक अन्य वर्ग को शामिल करने, दोनों के लिए समान मानदंड का उपयोग करते हैं. क्या यह उचित है?''

यह कहते हुए कि गरीबों की पहचान में कोई गणितीय सटीकता नहीं हो सकती, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने अपने हलफनामे में कहा कि 8 लाख रु. का आंकड़ा आंशिक रूप से सेवानिवृत्त मेजर जनरल एस.आर. सिन्हो की अध्यक्षता में गठित तीन सदस्यीय आयोग की सिफारिश से लिया गया है. इस आयोग ने आर्थिक पिछड़ापन तय करने की पड़ताल करते हुए निष्कर्ष निकाला था कि क्रीमी लेयर की पहचान करने के मौजूदा फार्मूले को सामान्य वर्ग में आर्थिक पिछड़ापन तय करने में इस्तेमाल किया जा सकता है.

हलफनामे में यह भी कहा गया है कि सिन्हो आयोग की रिपोर्ट एकमात्र आधार नहीं थी जिस पर आय की सीमा निर्धारित की गई थी. ईडब्ल्यूएस आरक्षण के मानदंडों की घोषणा 17 जनवरी, 2019 के एक आदेश के जरिये की गई थी जिनमें कृषि भूमि के आकार और आवासीय फ्लैटों और भूखंडों के आकार की सीमाओं आदि को बाहर रखने का प्रावधान शामिल किया गया था. राज्य को सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में ईडब्ल्यूएस उम्मीदवारों के लिए पदों और सीटों को आरक्षित करने की अनुमति देने के लिए 103वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 2019 के तहत ईडब्ल्यूएस कोटा पेश किया गया था. ऐसे आरक्षणों के लिए 10 प्रतिशत की सीमा निर्धारित की गई है, जो अन्य समूहों-एससी (अनुसूचित जाति), एसटी (अनुसूचित जनजाति) और ओबीसी के लिए किए गए अन्य सभी आरक्षणों से स्वतंत्र हैं. इस संशोधन की संवैधानिक वैधता को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट में 20 से अधिक याचिकाएं दायर की गईं और अगस्त 2020 में, सुप्रीम कोर्ट की तीन न्यायाधीशों की पीठ ने मामले को पांच-न्यायाधीशों की संवैधानिक पीठ के पास भेज दिया. मामला अभी भी विचाराधीन है.

कई विशेषज्ञों ने आर्थिक मानदंड पर आधारित इस कोटा प्रणाली पर सवाल उठाए हैं. उनका तर्क है कि संविधान मूल स्वरूप में, आरक्षण को आर्थिक उत्थान के उपकरण के रूप में नहीं देखता. सुप्रीम कोर्ट के कई न्यायाधीशों ने भी महसूस किया है कि आरक्षण की व्यवस्था उन लोगों को उचित हिस्सा देने के लिए की गई थी जो मुख्य रूप से अपने सामाजिक पिछड़ेपन के कारण इससे बाहर रह गए हैं. यह कुछ वर्गों के लोगों के खिलाफ भेदभावपूर्ण प्रथाओं से पैदा हुई असमानताओं के लगातार नकारात्मक प्रभावों को दूर करने के उपायों में से एक है.

सुप्रीम कोर्ट ने अब केंद्र से यह बताने को कहा है कि ओबीसी और ईडब्ल्यूएस कोटे की शुरूआत क्यों वाजिब मानी जाए क्योंकि यह इंदिरा साहनी मामले में सुप्रीम कोर्ट के 1992 के फैसले में निर्धारित आरक्षण की 50 प्रतिशत की सीमा का उल्लंघन करते हैं. एससी, एसटी और ओबीसी के लिए कोटा पहले से ही कुल 49.5 प्रतिशत है. जवाब में, केंद्र ने कोर्ट को बताया कि इंदिरा साहनी मामले में फैसला सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण के संदर्भ में आया था, न कि ईडब्ल्यूएस उम्मीदवारों के लिए. इसने यह भी कहा कि ईडब्ल्यूएस और ओबीसी उम्मीदवारों के लिए आरक्षण सामान्य श्रेणी के अन्य उम्मीदवारों को वंचित नहीं करता क्योंकि आरक्षित सीटों की भरपाई के लिए पिछले छह वर्षों में एमबीबीएस सीटों की संख्या में 56 प्रतिशत और पीजी सीटों की संख्या में 80 प्रतिशत की वृद्धि की गई है.

सरकार के हलफनामे ने डॉक्टरों की याचिका की वैधता पर भी सवाल उठाया और कहा कि यह योग्य ईडब्ल्यूएस उम्मीदवारों को वंचित करने और 103वें संशोधन के तहत संवैधानिक जनादेश और दायित्व के विपरीत सीटों को हथियाने का प्रयास था. 16 नवंबर को कोर्ट में फिर से सुनवाई होगी. ■

कैसे ईडब्ल्यूएस कोटे से अवसर सिकुड़े

सामान्य श्रेणी के आर्थिक रूप से कमजोर अभ्यर्थियों के लिए सीटें आरक्षित होने से एससी, एसटी और ओबीसी ग्रुप के लिए आरक्षित मौजूदा कोटे पर कोई असर नहीं पड़ता लेकिन इससे विभिन्न श्रेणियों के अभ्यर्थियों की प्रतिस्पर्धा के लिए मौजूद सीटों की संख्या घट जाती है

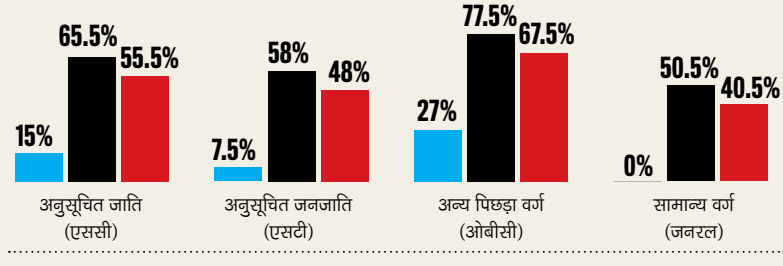

ग्राफिकः तन्मय चक्रवर्ती

नई व्यवस्था में आल इंडिया कोटे की 10 प्रतिशत सीटें ईडब्ल्यूएस के लिए और 27 प्रतिशत ओबीसी के लिए आरक्षित होंगी

तमिलनाडु

शशिकला की पहेली

अमरनाथ के. मेनन

तीस अक्तूबर को तमिलनाडु में हर पार्टी के राजनेता मुख्यमंत्री एम के स्टालिन के नेतृत्व में रामनाथपुरम जिले के पसुम्पोन में पसुम्पोन मुथुरामलिंग थेवर की 114वीं जयंती पर उनकी समाधि पर पहुंचे. लेकिन दिवंगत स्वतंत्रता सेनानी और आध्यात्मिक प्रतीक के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम को मुक्कलोथोर थेवर समूह के एक अन्य सदस्य वी.के. शशिकला की अन्नाद्रमुक में वापसी की चर्चा से ग्रहण लग गया.

66 करोड़ रुपये से अधिक संपत्ति के मामले में चार साल की लंबी कैद के बाद इस साल जनवरी में जेल से रिहा हुई दिवंगत जयललिता की यह सहयोगी अचानक फिर चर्चा में है. शशिकला एक दिन पहले अन्नाद्रमुक के झंडे वाले काफिले के साथ थेवर के पसुम्पोन मंदिर गई थीं. दक्षिणी तमिलनाडु के तंजावुर, मदुरै और रामनाथपुरम जिलों के हफ्ते भर के दौरे के दौरान कई जगहों पर समर्थकों ने शशिकला का स्वागत किया. उनमें से कुछ अन्नाद्रमुक पार्टी से भी थे, जिसने 2017 में उनकी सजा के बहाने उन्हें पार्टी से निष्कासित किया था, हालांकि वे तब की सबसे शक्तिशाली महासचिव थीं.

पार्टी में उनकी वापसी की संभावना तब बढ़ गई, जब पूर्व मुख्यमंत्री ओ. पन्नीरसेल्वम (ओपीएस)ने 25 अक्तूबर को घोषणा की कि अन्नाद्रमुक का शीर्ष संगठन इस मामले पर जल्द ही फैसला करेगा. ओपीएस खुद मुक्कलोथोर हैं. ओपीएस के जन्मदिन समारोह समिति को मुथुरामलिंग थेवर की प्रतिमा को सुशोभित करने वाला स्वर्ण कवच सौंपने के बाद यह घोषणा की गई. उन्हें शशिकला के दौरे की भनक थी. संयोग से, सात साल पहले जयललिता ने मुक्कालोथोर की सद्भावना बनाए रखने के लिए उपहार दिया था.

ओपीएस के समर्थन ने अन्नाद्रमुक के कुछ नेताओं को शशिकला का खुलकर समर्थन करने के लिए प्रेरित किया और उनके पुन: प्रवेश पर चर्चा की मांग की. इनमें पूर्व मंत्री सेलूर के. राजू, पार्टी संचालन समिति के सदस्य जे.सी.डी. प्रभाकर और पूर्व सांसद ए. अनवर राजा शामिल हैं. राझा का तर्क है कि कार्यकर्ता शशिकला की वापसी चाहते हैं, क्योंकि उन्होंने ही ''ओपीएस और ईपीएस (ई.के. पलानीस्वामी) दोनों को मुख्यमंत्री चुना था.'' 2017 के बाद से, ओपीएस और ईपीएस, दोनों ने शशिकला का समर्थन करने वाले कई पार्टी पदाधिकारियों को निष्कासित कर दिया है. उस समय ईपीएस के खिलाफ असंतोष की कोई आवाज नहीं सुनी गई थी, जो तब मुख्यमंत्री थे. लेकिन, अब सत्ता से बाहर ईपीएस ने हाल में शशिकला के बारे में टिप्पणी की, फिर अन्नाद्रमुक के उप संयोजक के.पी. मुनुसामी ने टिप्पणी की, जिसने पार्टी में थोड़ी हलचल पैदा कर दी है. दोनों नेताओं ने कहा है कि शशिकला को फिर स्वीकार करना पार्टी की चाबी एक खास समुदाय को सौंपने जैसा होगा और यह पार्टी संस्थापक एमजीआर और उनकी उत्तराधिकारी जे. जयललिता के सिद्धांतों के साथ समझौता करना जैसा होगा.

ओपीएस और ईपीएस के बीच टकराव और अन्नाद्रमुक के भविष्य को लेकर कैडर में व्याप्त अनिश्चितता शशिकला के पक्ष में काम कर सकती है

इसने अन्नाद्रमुक में नए सिरे से हलचल पैदा कर दी है, क्योंकि ईपीएस अब पार्टी के भीतर एक प्रभावशाली समूह का संचालन करते है. पूर्व मंत्री और पार्टी के वरिष्ठ नेता डी. जयकुमार का तर्क है कि इस मुद्दे को बहुत पहले सुलझा लिया गया था. वे कहते हैं, ''इस संबंध में एक फैसला पार्टी की आम परिषद ने लिया था और पार्टी की सभी जिला इकाइयों ने प्रस्ताव पारित किया था कि जो लोग (शशिकला के साथ) संपर्क में हैं, उन्हें निष्कासित कर दिया जाना चाहिए. यह निर्णय आज और हमेशा के लिए अच्छा है.'' कुछ नेताओं ने सुझाव दिया है कि सामान्य परिषद की एक और बैठक जल्द ही औपचारिक रूप से एक स्पष्ट प्रस्ताव अपनाने के लिए बुलाई जाए, ताकि उन्हें महासचिव कार्यालय से बाहर रखा जा सके. सामान्य परिषद की पिछली बैठक इस साल 9 जनवरी को हुई थी और एक बैठक होने वाली है.

लेकिन ईपीएस के विरोध के बावजूद शशिकला की वापसी की संभावनाएं पहले से कहीं ज्यादा नजर आ रही हैं. ओपीएस और ईपीएस के बीच की खींचतान और अन्नाद्रमुक के भविष्य के बारे में कैडर के

नई कोशिश
29 अक्तूबर को थेवर जयंती पर मुथुरामलिंग थेवर को श्रद्धांजलि अर्पित करतीं शशिकला

बीच अनिश्चितता उनके पक्ष में काम करने वाले कारक हो सकते हैं. ओपीएस और मुक्कलोथोर समुदाय (जाति आधार के रूप में) उसका समर्थन करेंगे. ये उत्तरी और पश्चिमी तमिलनाडु के नेता हैं, जो शशिकला को वापस नहीं आने देने के लिए दृढ़ हैं. दक्षिणी जिलों के कई लोग उनकी वापसी के बारे में असमंजस में हैं.

अन्नाद्रमुक अब भी 66 विधायकों (234 सीटों वाले सदन में) के साथ मजबूत विपक्षी दल है. राजनीतिक टिप्पणीकार एन. सत्यमूर्ति कहते हैं, ''विधायक दल में मुक्कलोथोर समुदाय के पास संख्या नहीं है, जहां ईपीएस को बढ़त हासिल है. फिर भी, ईपीएस खेमे के भीतर ऐसे लोग होंगे, जो नहीं चाहते कि पश्चिम से उनका वेल्लालर-गाउंडर समुदाय पार्टी पर हावी हो. संतुलन बनाना उनके लिए एक चुनौती होगी. ''

शशिकला की वापसी पार्टी के भीतर सत्ता समीकरणों को बदल देगी. पर्यवेक्षक बताते हैं कि वह और उनके भतीजे टी.टी.वी. दिनाकरण, जिन्होंने अम्मा मक्कल मुनेत्र कड़गम नामक पार्टी बनाई थी, को अन्नाद्रमुक में वर्चस्व के लिए जारी मौजूदा संघर्ष से सबसे ज्यादा फायदा होगा. शशिकला और उनके कुनबे पार्टी पर नियंत्रण रखेंगे, जैसा कि उन्होंने जयललिता के शासनकाल के अंतिम चरण में किया था.

राजनीतिक विश्लेषक रामू मणिवन्नान कहते हैं, ''उन्हें वापस साजिश रचने में समय लगेगा. अगर वे सफल भी होती हैं तो यह आसान नहीं होगा, क्योंकि अन्नाद्रमुक में असंतोष और फूट होगी. सबसे महत्वपूर्ण यह है कि उन्हें लोगों का दिल जीतना होगा, जो कभी नहीं होगा, क्योंकि उन्हें हमेशा हड़पने वाले नेता के रूप में देखा जाएगा. '' अन्नाद्रमुक- द्रमुक, कांग्रेस और अन्य की तरह एक 'पारिवारिक पार्टी' बन जाएगी. यही उसकी नियति लगती है....''

अन्नाद्रमुक के भीतर के कलह का फायदा सत्तारूढ़ द्रमुक को भी होगा. मुख्यमंत्री स्टालिन ने पिछले हफ्ते यह घोषणा करते हुए 'तमिल गौरव' मुद्दे को उभारा था कि अब से 16 जुलाई को तमिलनाडु दिवस के रूप में मनाया जाएगा, क्योंकि 1967 में उस दिन विधानसभा ने पहले द्रमुक मुख्यमंत्री सी.एन. अन्नादुरै के शासनकाल में मद्रास का नाम बदलकर तमिलनाडु करने का प्रस्ताव पारित किया था. उन्होंने बताया कि अन्नाद्रमुक सरकार ने 2019 में एक नवंबर को तमिलनाडु दिवस मनाने का फैसला किया था (वह दिन जब 1956 में राज्यों को भाषायी आधार पर विभाजित किया गया था). इसने राज्य भाजपा प्रमुख के. अन्नामलाई को यह पूछने के लिए प्रेरित किया कि क्या किसी बच्चे का जन्मदिन उसके जन्म के दिन से तय होता है या उससे जिस दिन उसका नाम रखा जाता है.

अन्नाद्रमुक के अंदरूनी मुद्दे भी भाजपा को तमिलनाडु में मजबूत विपक्षी ताकत बनने की जगह दे सकते हैं. अभी तक, नीट (नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट) और अन्य मुद्दों पर उन्हें तमिलनाडु में जनविरोधी के रूप में देखा जाता है. मूर्ति कहते हैं, ''भाजपा अब भी जमीनी स्तर की राजनीति और तमिलनाडु के मतदाताओं की नीतिगत प्राथमिकताओं को नहीं समझती है. वे मंदिरों और धर्म-केंद्रित राजनीति पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वहां भी मौजूदा स्टालिन सरकार ने उन्हें पछाड़ दिया है. भाजपा का एजेंडा अब भी केवल उनके प्रतिबद्ध ब्राह्मण मतदाताओं को संबोधित करता है, जो पहले से ही उनके पास है. वे यह नहीं मानते कि आज के तमिलनाडु में 'काली कमीज' वाले अयप्पा भक्तों की संख्या द्रविड़ नास्तिक पेरियार आंदोलन से दसियों हजार ज्यादा है.'' भाजपा को आज भी अपने ब्राह्मण समर्थक दृष्टिकोण को छोड़ना और इस वास्तविकता को समझना बाकी है. ■

इश्क में उतरने के नए नियम

टीकाकरण के बाद भारत में डेटिंग भी हाइब्रिड हुई, यानी ऑनलाइन भी और आमने-सामने मिलकर भी

सोनाली आचार्जी / फोटो: बंदीप सिंह

दिल्ली में रहती फ्रेंच अनुवादक शमिता कुलकर्णी ने पूरी महामारी के दौरान सिंगल रहने के बाद छह माह पहले तय किया कि चलो फिर डेटिंग करके देखा जाए. टीके की दोनों खुराक उन्हें लग चुकी थीं. डेट नाइट के बाने में सज-धजकर और मैचिंग मास्क पहनकर उन्हें लगा कि वे डेटिंग के दरिया में डुबकी लगाने को बिल्कुल तैयार है. उन्हें फोडा—'फियर ऑफ डेटिंग अगेन' यानी फिर डेट करने के डर—का जरा अंदेशा नहीं था. उन्हें नहीं पता था कि ऑनलाइन डेटिंग की सलाहियत उनमें कितनी है. लिहाजा अपनी टिंडर प्रोफाइल बनाने और डेटिंग सर्किट में कदम रखने में उन्हें एक महीना लगा.

महामारी के बाद की दुनिया में यह एहसास कई लोगों के लिए जाना-पहचाना है. लव लाइफ तो 'कोविडेटेड' यानी महामारी की वजह से खत्म या तब्दील हो ही चुकी थी, अनेकानेक लोग 'कोविडिवोर्सी' हो गए यानी कोविड की वजह से तलाक हो गया. लोकप्रिय डेटिंग ऐप बंबल ने जून में भारत के अपने 2,000 यूजर में एक सर्वे किया. इसमें 28 फीसद लोगों ने कहा कि महामारी के दौरान उनका ब्रेकअप हो गया. डेटिंग और मेलजोल से लंबे वक्त तक दूर रहकर कई लोग शंकालु हो उठे कि वे भावनात्मक रूप से फिर जुड़ भी पाएंगे या नहीं. मीडिया में कार्यरत 25 वर्षीया मृणि देवनानी कहती हैं, ''महामारी से पहले मैं बहुत सोशल थी. अब लोगों के साथ इमोशनल रिश्तों में बंधने का मन नहीं करता.''

> ''लॉकडाउन के दौरान सभी उम्र के लोगों में वर्चुअल डेटिंग खासी लोकप्रिय हुई. फोन पर नेटफ्लिक्स देखने के अलावा पार्टी ऐप और वीडियो डेट्स डेट करने के नए विकल्प बन गए''
>
> **इलावरासन राजा**
> *पर्सनालिटी और डेटिंग कोच*

मीडिया प्लेटफॉर्म मैशेबल के इस साल के कोविड-19 डेटिंग सर्वे से भी जाहिर हुआ कि डेट करने वाले (डेटर्स) आज फिर नए रिश्ते शुरू करने को लेकर जितने रोमांचित हैं उतने ही नर्वस भी हैं. एक और ऑनलाइन डेटिंग सर्विस मैच डॉट कॉम के अध्ययन से भी इस रुझान की तस्दीक हुई. इस सर्वे में शामिल 38 फीसद सिंगल या अविवाहितों ने माना कि ''असल जिंदगी में दोबारा डेटिंग की बात मन में आते ही उन्हें अपनी सामाजिक सलाहियत को लेकर बेचैनी'' होती है. दिल्ली की मनोवैज्ञानिक और माइंडस्केप सेंटर फॉर काउंसलिंग की संस्थापक डॉ. उपासना चड्ढा कहती हैं, ''यह वही भावना है जो कुछ महीने काम या पढ़ाई करना बंद कर देने पर महसूस होती है. परिस्थितियां बदल जाती हैं और आपको यकीन नहीं होता कि आप कार्यस्थल

डिजिटल इमेजिंग: **अमरजीत सिंह नागी**
मॉडल: **सुहासिनी खट्टर और अभि सोनी**
मेक-अप: **सुजीत कुमार**

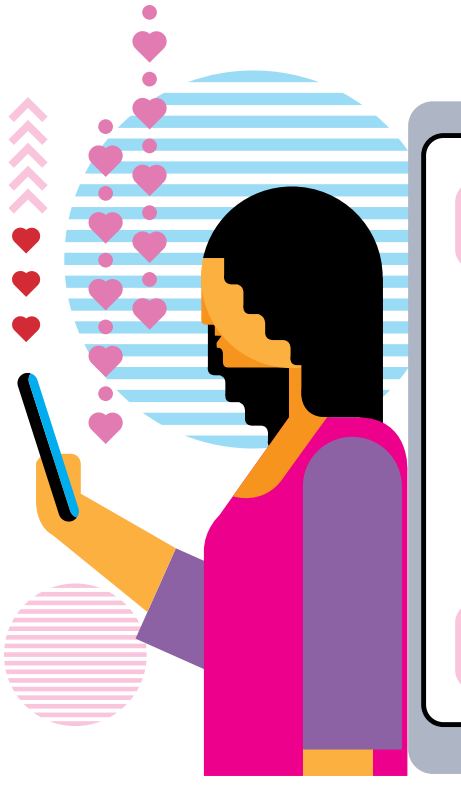

या यूनिवर्सिटी की नई अपेक्षाओं पर खरे उतर पाएंगे या नहीं. मिलने-जुलने के मामले में भी ऐसा ही होता है.''

वर्चुअल कनेक्शन

दूसरी बहुत-सी चीजों की तरह कोविड के दिनों में डेटिंग भी वर्चुअल हो गई. वर्क फ्रॉम होम, सामाजिक दूरी और रेस्तरां, बार व सिनेमाघरों के बंद होने से नए लोगों से मिलने-जुलने की संभावनाएं खत्म हो गईं. ऐसे में आप ज्यादा से ज्यादा वीडियो डेटिंग ही कर सकते थे. 3.1 करोड़ यूजर के साथ भारत में सबसे बड़ा यूजर बेस टिंडर का है. मार्च 2020 में इसने एक दिन में 3 अरब स्वाइप दर्ज किए, जो इसके एक दिन में सबसे ज्यादा स्वाइप थे. ओकेक्यूपिड पर दुनिया भर में मार्च और मई 2020 के बीच डेटों में 700 फीसद का इजाफा हुआ. वहीं बंबल पर 2020 में वीडियो कॉल 70 फीसद बढ़ गए. इन डेटिंग ऐप्स का कहना है कि 2021 में भी ये आंकड़े ऊंचे ही बने हुए हैं. बंबल ने भारत में जिन सिंगल्स से बात की, उनमें से 72 फीसद ने कहा कि अब रू-ब-रू मिले बिना भी ऑनलाइन किसी से प्यार होना मुमकिन है. ओकेक्यूपिड इंडिया की सीनियर मार्केटिंग मैनेजर सितारा मेनन कहती हैं कि असल जिंदगी की रुकावटों के मुकाबले ऑनलाइन डेटिंग में किसी से अचानक मिलने और उसे पाने की खुशी के कहीं ज्यादा क्षण आते हैं. कुलकर्णी के दोस्तों ने भी उन्हें यही बताया. मगर वे यह जानने को उत्सुक थीं कि ऑनलाइन किसी से 'मिलें' कैसे? वे कहती हैं, ''ऑफलाइन आपका ध्यान बंटाने वाली इतनी सारी चीजें होती हैं. आप खाना ऑर्डर कर सकते हैं, माहौल में मन रमा सकते हैं, आसपास के लोगों पर टीका-टिप्पणी कर सकते हैं. ऑनलाइन आप क्या करते हैं? स्क्रीन पर बस एक दूसरे को घूरते रहते हैं?''

इस पसोपेश में कुलकर्णी अकेली नहीं थीं. ऑनलाइन डेटिंग कर रहे दूसरे कई लोगों के मन में भी यही सवाल थे. इसने हिंज, बंबल, टिंडर, मैच, ओकेक्यूपिड और डेटिंग ग्रुप (जो डेटिंग डॉट कॉम, डेटमाइएज, प्रॉमिस और चाइनालव सरीखे कई ब्रांड का मालिक है) सरीखे प्लेटफॉर्म का स्तर ऊंचा उठाने के लिए मजबूर कर दिया. हिंज अब ई-कॉमर्स साइट अनकॉमन गुड्स के साथ मिलकर एक 'वर्चुअल डेट नाइट किट' दे रहा है. किट में तीन डेट नाइट कॉकटेल और चुप्पी तोड़ने तथा बातचीत शुरू करने के तरीकों की लंबी फेहरिस्त है. इन तरीकों में साझा रुचियों, व्यक्तित्व, डेटिंग जिंदगी के बारे में सवाल शामिल हैं. कुलकर्णी को तो इनमें जिंदगी मिल गई. वे कहती हैं, ''मैंने डेट किया. हमने वीडियो पर ड्रिंक बनाए, गेम्स खेले और साथ-मूवी देखने के लिए स्क्रीन भी साझा की.''

बंबल ने यूजर की प्रोफाइल के हिसाब से 150 नए 'इंटरेस्ट बैज' जोड़े. वह 'नाइट इन फीचर' भी लाया, जिसमें दो लोग वीडियो चैट के दौरान ट्रिविया सरीखे इंटरैक्टिव गेम में हिस्सा ले सकते हैं. वीडियो कॉल और वीडियो नोट्स के भीतर स्नैप के एआर (ऑग्मेंटेड रियलिटी) लेंस मजा बढ़ा देते हैं. चेन्नै के डेटिंग और पर्सनैलिटी कोच इलावरासन राजा कहते हैं, ''लॉकडाउन के दौरान वर्चुअल डेटिंग सभी उम्र के लोगों में लोकप्रिय हो गई. फोन पर साथ-साथ नेटफ्लिक्स देखना, पार्टी ऐप और वीडियो डिनर डेट तक अब डेटिंग के नए-नवेले तरीके हैं.'' डेटिंग ऐप ट्रूली मैडली के सह-संस्थापक और सीईओ स्नेहिल खनोर के मुताबिक, ''हमने भविष्य में कम से कम तीन साल लंबी छलांग लगाई है. वर्चुअल डेटिंग को लेकर जिनके मन में ऊहापोह थी, इससे उबरकर उन्होंने पाया कि यह नए लोगों से मिलने के सबसे सुरक्षित तरीकों में से एक है.''

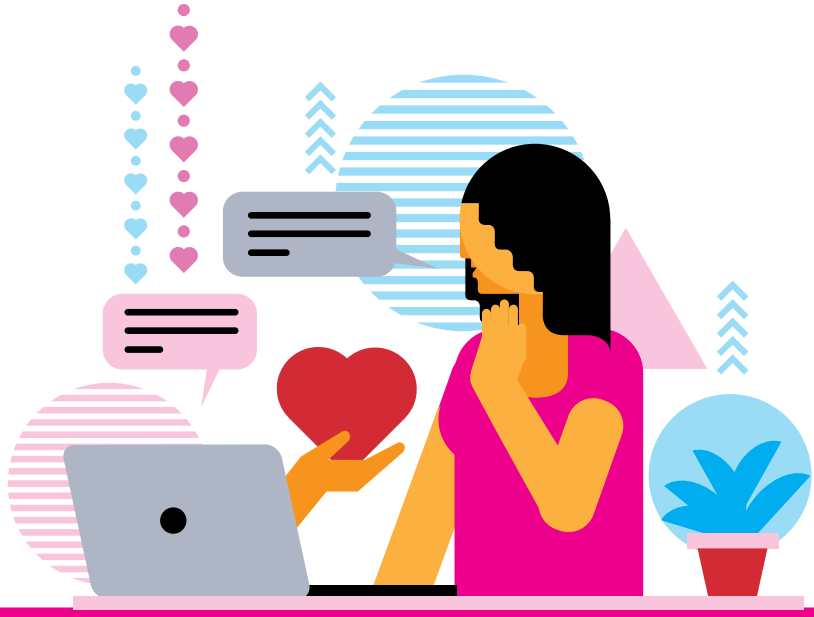

> ''कई अहम मुद्दों को लेकर ज्यादा बातचीत हुई है, मसलन यही कि घर के कामकाज का बंटवारा किस तरह से होना चाहिए और शादी के बाद पत्नी नौकरी करे या नहीं''
>
> **सितारा मेनन**
> *सीनियर मार्केटिंग मैनेजर, ओकेक्यूपिड इंडिया*

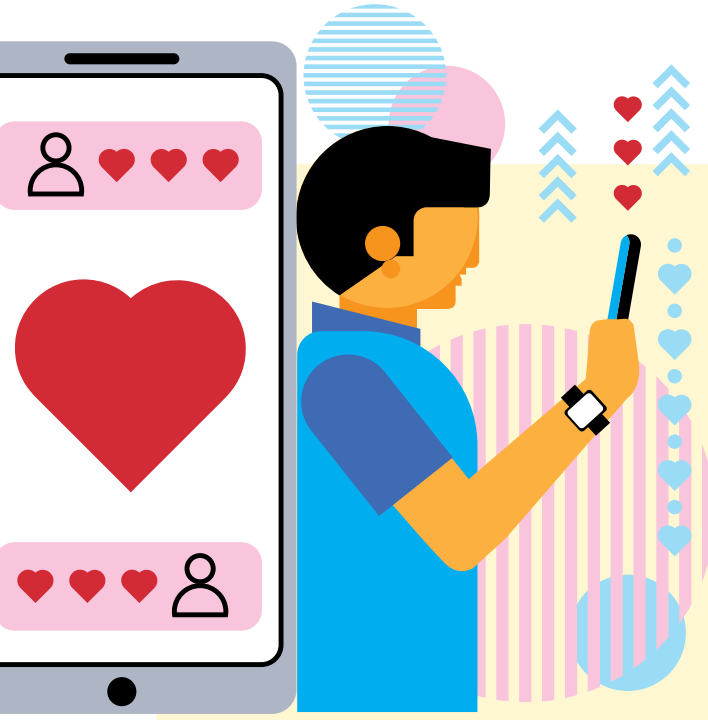

कोविड की डेटिंग डिक्शनरी

- **फोडा (फियर ऑफ डेटिंग अगेन):** महामारी के कारण रिश्तों में लंबे अंतराल के बाद फिर से डेटिंग की चिंता
- **डबल वैक्स्ड:** पूर्ण टीकाकरण यानी टीके की दोनों खुराकें ले ली हों
- **सेक्स-डिस्टेंसिंग:** महामारी के कारण सेक्स के लिए मना करना
- **जंपिंग:** जूम कॉल पर रिश्तों को खत्म करना या किसी को अपनी जिंदगी से बाहर का रास्ता दिखाना
- **कोविडिवोर्सी:** ऐसा व्यक्ति जिसने कोविड महामारी के बीच तलाक लिया/ रिश्ता खत्म किया हो
- **कोविडेटेड:** जब कोविड के कारण प्लान को कैंसिल करना या उसे बदलना पड़े
- **हार्डबॉलिंग:** किसी रिश्ते को लेकर अपनी अपेक्षाओं के बारे में स्पष्ट होना–आप थोड़े समय के लिए या कैजुअल प्रेम संबंध चाहते हैं या फिर रिश्ते को लेकर गंभीर हैं
- **सॉफ्ट गोस्टिंग:** किसी व्यक्ति के साथ रिश्तों को पूरी तरह से खत्म करने के बजाए इमोजी भेजकर या सोशल मीडिया लाइक जैसे तरीकों से, संवाद को कम-से-कम रखते हुए भी रिश्ते को पूरी तरह खत्म न करना
- **ऑर्बिटिंग:** पूर्व प्रेमी या प्रेमिका को यह जताने के लिए कि आप अभी भी उनमें रुचि लेते हैं, उन्हें सोशल मीडिया पर फॉलो करना या बातचीत करना
- **कोविड बैगेज:** सार्थक संबंध बनाने के लिए किसी के साथ महामारी का अनुभव साझा करना
- **एपोकैलिप्सिंग:** हर रिश्ते को अपने आखिरी रिश्ते की तरह मानना या किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बहुत जल्दी सीरियस हो जाना जिससे आप अभी-अभी मिले हैं
- **क्वारंटीन बेइ:** महामारी की अवधि के लिए एक साथी

कोविड के बाद प्यार

मगर अब जब चीजें धीरे-धीरे सामान्य हो रही हैं, डेटिंग का भविष्य क्या होगा? टिंडर का 'फ्यूचर ऑफ डेटिंग सर्वे' कहता है कि यह अस्थिर होगा. बंबल के एक अध्ययन से पता चला कि वीडियो डेटिंग का दौर लंबा चलने वाला है, क्योंकि भारत के उसके 39 फीसद यूजर ने माना कि 2021 में उन्होंने पहली डेट के विकल्प के तौर पर वीडियो डेट को आजमाया. वर्चुअल डेटिंग फोडा से उबरने में भी मदद करती है. मुंबई की ग्राफिक डिजाइनर कृतिका (आग्रह पर बदला हुआ नाम) मार्च 2020 में महामारी की दस्तक के बाद एक भी डेट पर नहीं गईं. उनके माता-पिता लखनऊ में रहते हैं. भीषण अकेलेपन से उकताकर 28 वर्षीय कृतिका ने ''महज नए चेहरे देखने और कुछ गपशप करने के लिए'' डेटिंग और मैचमेकिंग साइटों पर नाम दर्ज किया. वर्चुअल माध्यम से वे एक युवा कारोबारी से जुड़ीं, जिनसे जून में उनकी रू-ब-रू मुलाकात हुई. रिश्ता ज्यादा नहीं चला, पर उन्हें कोई शिकायत नहीं है. वे कहती हैं, ''डेट पर जाने के एहसास भर से मेरा आत्मविश्वास काफी बढ़ा. मुझे लगा कि मैं अब भी लोगों से जुड़ सकती हूं.''

कोविड से दागदार दुनिया में ऑनलाइन डेटिंग सुरक्षित विकल्प भी है. इन दिनों बातचीत शुरू करने के लिए सबसे सामान्य वाक्य है–''मुझे टीके लग चुके हैं.'' बंबल के सर्वे में शामिल 35 फीसद भारतीयों ने कहा कि दूसरी लहर के बाद वे सुरक्षा को लेकर और ज्यादा सतर्क हो गए हैं. बंबल के 38 फीसद यूजर के लिए टीके की स्थिति जानना बहुत जरूरी है. वे किसी ऐसे व्यक्ति के साथ डेट पर जाना या सेक्स करना नहीं चाहेंगे जिन्हें टीके न लगे हों. कई डेटिंग साइट ने ''बैज फीचर'' जोड़ा है जिस पर यूजर टीके की अपनी ताजातरीन स्थिति दर्ज कर सकते हैं या यह भी बता सकते हैं कि ऑफलाइन गतिविधियों में उनकी सहजता का स्तर क्या है. टीके न लगे होना अब पीछे हट जाने की बड़ी वजह है. पुणे के 26 वर्षीय एमबीए छात्र विवेक खन्ना कहते हैं कि उन्हें दूसरे इलाकों, देशों या तलाकशुदा के साथ डेट पर जाना गवारा है पर ऐसे शख्स के साथ नहीं, जिसने टीके न लगवाए हों. वे कहते हैं, ''मुझे लगता है कि इससे व्यक्ति

इलस्ट्रेशनः राज वर्मा

की मानसिकता—पब्लिक हेल्थ, साइंस और मेडिसिन के प्रति उसकी अवहेलना—का पता चलती है. तथ्यात्मक ज्ञान के प्रति निष्ठावान होने के नाते मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसे शख्स के साथ जा सकता हूं जो वैक्सीन के प्रति शंकालु हो.'' खन्ना यह भी कहते हैं कि वे ऑनलाइन ऐसे लोगों से मिले हैं जो उन लोगों को डेट करने को लेकर इतने ही सतर्क हैं जिन्हें टीके नहीं लगे हैं. वे कहते हैं, ''खुशकिस्मती से अब तक जितनों के साथ मेरी जोड़ी बनी, सभी को टीके लगे थे.''

रू-ब-रू मिलने से पहले ऑनलाइन मीटिंग और चैटिंग की सुरक्षा और सहजता महिलाओं को निश्चित रूप से रास आ रही है. स्टैटिस्टा की रिपोर्ट बताती है कि दक्षिण भारत की महिलाएं टिंडर के मुकाबले वू को तरजीह देती हैं. वू महिलाओं को खासी तवज्जो देता है. उनके ब्योरे हमेशा गोपनीय रखे जाते हैं और महिलाएं सीधे ऐप से प्राइवेट कॉल कर सकती हैं. बेंगलूरू की 32 वर्षीया कॉर्पोरेट वकील भावना शास्त्री वू की सक्रिय यूजर हैं. यह उन्हें ''चापलूसों'' से दूर रहने में मदद करता है. वे कहती हैं, ''टिंडर पर आपकी प्रोफाइल देख सकने वालों पर कोई नियंत्रण नहीं है. ऐप को लगता है कि जोड़ी मिलने की संभावना है, तो वे उस व्यक्ति को आपकी प्रोफाइल भेज देंगे. आप अक्सर आखिरकार बिल्कुल अजनबी लोगों से जुड़ जाते हैं, जिनमें से कई फेक (फर्जी) होते हैं. मैंने पाया कि वू ज्यादा सच्चा और प्राइवेट है.''

ट्रूली मैडली के खनोर कहते हैं, ''ऑनलाइन डेटिंग में कम मेहनत, कम जोखिम और ज्यादा सुरक्षा है.'' बंबल के ग्लोबल सर्वे में शामिल सिंगल यूजर में से 45 फीसद ने कहा कि वे वर्चुअल डेट को तरजीह देंगे क्योंकि इससे समय और पैसा बचता है. वर्चुअल डेट से आप अनावश्यक तकलीफ से बच जाते हैं. मुंबई के 28 वर्षीय अरुण वाही कहते हैं, ''कोई आपको ऑनलाइन रिजेक्ट कर देता है, तो आपको ऐसा महसूस नहीं होता कि अरे, उनसे मिलने के लिए आने-जाने में इतना वक्त या तैयार होने और डेट पर (बिल) चुकाने के लिए इतना सारा पैसा बर्बाद कर दिया.'' फिर हैरानी क्या कि ओकेक्यूपिड पर भारत की 38 फीसद महिलाओं और 25 फीसद पुरुषों ने कहा कि महामारी के रुखसत होने के बाद भी डेटिंग के शुरुआती चरण में वे वर्चुअल बातचीत करना ही चाहेंगे.

वर्चुअल माध्यम पर नामुमकिन?

महामारी हो या न हो, अपने से मिलते विचारों

सिंगल्स क्या चाहते हैं

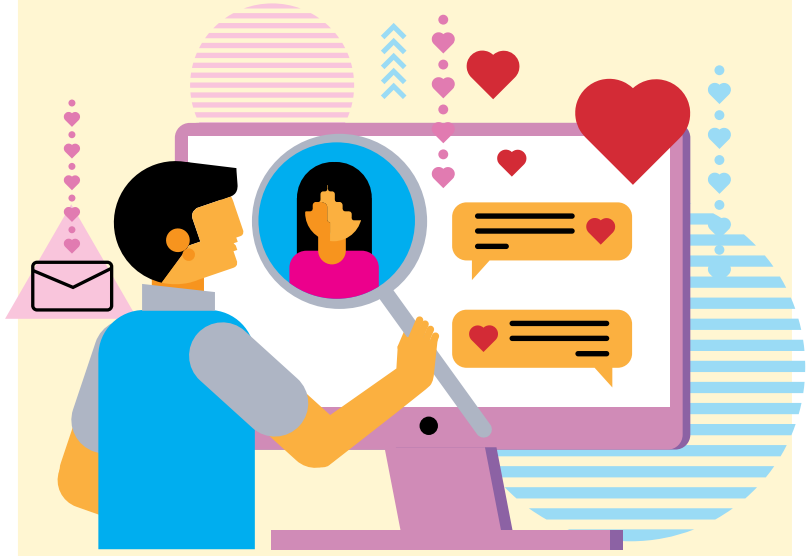

अलग-अलग डेटिंग प्लेटफॉर्म पर कराए गए सर्वे में उभरने वाले नए रुझान

वीडियो डेट्स पर जोर: डेटिंग ऐप बंबल के अनुसार, उनके 39 फीसद यूजर्स ने 2021 में पहली डेट वीडियो डेट के रूप में ही की. ऐप ने जिन लोगों के बीच सर्वे किया उनमें से 48 प्रतिशत कुंवारे भारतीयों का कहना है कि वे वर्चुअल डेटिंग का आनंद लेते हैं क्योंकि इसमें किसी से आमने-सामने मिलने के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित महसूस करते हैं. 45 फीसद भारतीय वर्चुअल डेट्स को पसंद करते हैं क्योंकि इससे समय और पैसा बचता है.

जल्दबाजी नहीं: टिंडर पर ज्यादातर लोग यह देखना चाहते हैं कि ''चीजें कहां तक पहुंचती हैं''. एक सर्वेक्षण में 62 फीसद ने कहा कि उन्हें प्रतिबद्ध रिश्ते की तलाश नहीं बल्कि वे रोमांटिक या कैजुअल डेटिंग वाली दोस्ती पसंद करते हैं.

भावनात्मक रिश्तों पर बल: ओकेक्यूपिड ने पाया कि दुनिया भर के उसके 84 फीसद उपयोगकर्ता शारीरिक संबंध बनाने से पहले भावनात्मक संबंध बनाना चाहते हैं.

साफ-सुथरी डेटिंग: हिंज ऐप के लगभग आधे (45 फीसद) यूजर्स ने बताया कि महामारी ने उनमें स्वस्थ डेटिंग आदतों को बढ़ावा दिया, जिसमें गोस्ट डेटिंग जैसे रुझानों में गिरावट आई. ऐप पर गोस्ट डेटिंग में 27 फीसद कमी आई है.

ईमानदारी पहले: मैचडॉटकॉम पर 63 फीसद यूजर्स अब संभावित पार्टनर को जानने में ज्यादा समय बिताते हैं; 69 फीसद अधिक ईमानदार हैं; 61 फीसद जेनरेशन जेड का शारीरिक आकर्षण पर कम ध्यान रहता है.

कोविड प्राथमिता: टिंडर के एक सर्वेक्षण में 2,000 भारतीय सिंगल्स में से 71 प्रतिशत ने कहा कि वे किसी डेट पर जाने से पहले स्वच्छता की अपनी प्राथमिकताओं को लेकर खुला नजरिया रखते हैं; और 66 फीसद ने कहा कि उनके लिए संभावित प्रेमी से मिलने से पहले उसकी मास्क पहनने की आदतों को जानना महत्वपूर्ण है.

के लोग खोजना हमेशा मुश्किल होता है. जब आप ऐसे लोगों को वर्चुअल माध्यम से खोज रहे हों, तो यह और मुश्किल हो जाता है. यहीं स्लो डेटिंग या धीमे-धीमे डेटिंग की एंट्री होती है, जिसमें युगल एक दूसरे को जानने के लिए पर्याप्त समय लेते हैं और उसके बाद ही डीटीआर ('डिफाइनिंग द रिलेशनशिप' यानी रिश्ते को परिभाषित करने के दौर) में जाते हैं. ओकेक्यूपिड की मेनन कहती हैं, ''मिलेनियल्स (नई सदी में जवान हुए लोग) अब लंबी, गहरी बातचीत और डिजिटल माध्यम पर साझा अनुभवों से प्यार

''भारत में कुंवारे लोग अब डेटिंग के बारे में फैसलों को लेकर ज्यादा मुखर हो रहे हैं. भारत में टीकाकरण बढ़ने के साथ वे सुरक्षा और तालमेल को अहमियत देने लगे हैं''

समर्पिता समद्दर
संचार निदेशक, बंबल इंडिया

खोज रहे हैं.'' छड़े लोग ऐसा जोड़ीदार चाहते हैं जो उनका, वे जैसे हैं और जिंदगी से जो चाहते हैं, उस सबका सम्मान करे. टिंडर के मुताबिक ''पारदर्शिता'' और ''प्रामाणिकता'' अब नए प्रचलित शब्द हैं. मेनन कहती हैं, ''ऐसे मुद्दों पर जागरूकता और बातचीत बढ़ रही है जो बेहद अहम हैं, मसलन घर के रोजमर्रा के कामों का बंटवारा कैसे हो और क्या महिलाओं को शादी के बाद काम करना चाहिए.''

साथ ही, 'पाइ हंटिंग' (जानबूझकर कमजोर लोगों को खोजना) और 'गोस्टिंग' (संभावित साथी से अचानक सारे रिश्ते तोड़ लेना) सरीखे जहर-बुझे डेटिंग व्यवहारों में कमी आई है. खन्ना कहते हैं, ''ऑनलाइन डेटिंग मेरे लिए फुरसत का शगल हुआ करती थी, इसलिए मैंने परवाह नहीं कि मैं बदतमीज था या ऐप पर मिले किसी व्यक्ति से अचानक कट लिया. अब मैं इसे लेकर ज्यादा जागरूक महसूस करता हूं क्योंकि इससे फर्क नहीं पड़ता कि वह व्यक्ति कौन है, कोविड की वजह से वे भी तो उतने ही परेशान होंगे जितना मैं हूं.''

शादी की जल्दबाजी नहीं

महामारी के चलते भावनात्मक लगाव ज्यादा अहम हो गया है, यहां तक कि जब रिश्ता गंभीरता की हद तक न पहुंचा हो, तब भी. मेनन कहती हैं, ''पूरी महामारी के दौरान मिलेनियल्स मृतप्राय रिश्तों को बनाए रखने को लेकर अधीर हो उठे. इसके बजाए वे ऐसे रिश्तों

लोकप्रिय हुई लाइनें

कोविड के दौरान कुंवारों ने आखिर किस तरह की शब्दावली में बातें कीं

- ''चलो हम भी कोविड की ही तरह एक दूसरे को जकड़ लें''
- ''अपने हाथ तो धो लो, जिससे मेरा हाथ ठीक से थाम सको''
- ''मास्क ठीक से लगाओ तो फिर मिलने आ जाओ''
- ''बिना 'यू' और 'आइ' के तो वायरस की स्पेलिंग भी पूरी नहीं हो सकती''
- ''अगर कोरोनावायरस तुम्हें बाहर नहीं ले जा पा रहा, तो क्या मैं यह जहमत उठा लूं?''
- ''क्या तुम कोविड वैक्सीन हो? तुम ही तो हो जिसे मैं कभी मना नहीं कर सकता/सकती''
- ''बिना 'यूआरएक्यूटी' के क्वारंटीन की स्पेलिंग भी तो नहीं पूरी होती''
- ''क्या तुम महामारी हो? क्योंकि तुमने तो मेरे दिल पर लॉकडाउन लगा दिया है''

शब्द जो सबसे ज्यादा चर्चा में रहे

- मास्क, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और एक पैरोडी वीडियो ''रसोड़े में कौन था''
- बनाना ब्रेड तैयार करना और डलगोना कॉफी बनाना– इनसे जुड़े अनुभव सबसे ज्यादा शेयर किए

में निवेश करने लगे जिनमें आगे संभावनाएं हैं.'' इससे 'हार्डबॉलिंग' का रुझान बढ़ा. जेनरेशन जेड या बिल्कुल नई पीढ़ी अब इस बात को लेकर बहुत चौकन्नी नहीं रह गई है कि वे क्या चाहते हैं. यह सब तो उनके बायो में पहले से ही है. खन्ना कहते हैं, ''डेट के मामले अब मुझे संवेदनशील या कमजोर होने का डर नहीं रहा. मैं फर्जी वैकल्पिक व्यक्तित्व सामने रखना नहीं चाहता. ढोंग या झूठे दिखावों की आड़ में न तो लंबे वक्त के रिश्ते बनाए जा सकते हैं और न भावनात्मक सामंजस्य कायम नहीं किया जा सकता, खासकर जब आप उस व्यक्ति से ऑफलाइन नहीं मिल रहे हों.'' टिंडर के मुताबिक, अपने बायो में ''एंग्जाइटी'' शब्द का जिक्र करने वाले यूजर की तादाद 31 फीसद, ''बाउंड्रीज'' का जिक्र करने वालों की तादाद 19 फीसद और ''कंसेंट'' का जिक्र करने वालों की तादाद 11 फीसद बढ़ी है. बंबल इंडिया की कम्युनिकेशंस डायरेक्टर समर्पिता समद्दर कहती हैं, ''भारत में वैक्सिनेशन बढ़ने के साथ सिंगल लोग अब अपने डेटिंग के फैसले ज्यादा सोच-समझकर ले रहे हैं और सुरक्षा तथा सामंजस्य को प्राथमिकता दे रहे हैं.''

लॉकडाउन के दौरान सिंगल मिलेनियल्स के बीच अपने लिए एक 'क्वारंटीन बेइ'—ऐसा व्यक्ति जिसके साथ वे महामारी का वक्त गुजार सकें—खोजने के लिए होड़ मच गई. कइयों ने खुद को 'एपोकैलिप्सिंग' यानी डेटिंग शुरू करते ही किसी के साथ बहुत

चुनिंदा डेटिंग ऐप

*** हिंज**
खास बात: नोबेल पुरस्कार जीतने वाले एल्गोरिद्म पर तैयार यह ऐप सिंगल्स के लिए शानदार ऑफलाइन डेट्स खोजने का वादा करता है; यह पक्का करता है कि रिश्ता वर्चुअल चैट तक सिमटा न रहे, आगे बढ़े
आयु वर्ग: यह उन लोगों के बीच लोकप्रिय है जिन्हें संजीदा रिश्तों की तलाश है. एक अनुमान से पता चलता है कि इसके 90 प्रतिशत उपयोगकर्ता 23 से 32 वर्ष के बीच के हैं.

*** टिंडर**
खास बात: इसका 'वाइब्स' फीचर सिंगल्स को संगीत, कला, खेल या गेमिंग जैसी समान रुचियों को साझा करने वाले लोगों के साथ जुड़ने की अनुमति देता है.

आयु वर्ग: आकलन बताते हैं कि करीब 83 फीसद टिंडर यूजर 34 साल से कम उम्र के हैं.

*** ओकेक्यूपिड**
खास बात: व्यक्तित्व से जुड़ी गहन प्रश्नोत्तरी किसी सिंगल को यह जानने में मदद करती है कि संभावित डेट्स के साथ मिलने की कितनी संभावना है.
आयु वर्ग: भारत के अधिकांश उपयोगकर्ता 25-35 साल के हैं.

*** ट्रुलीमैडली**
खास बात: भारत में 80 लाख से ज्यादा डाउनलोड. यह सभी प्रोफाइल की गहन

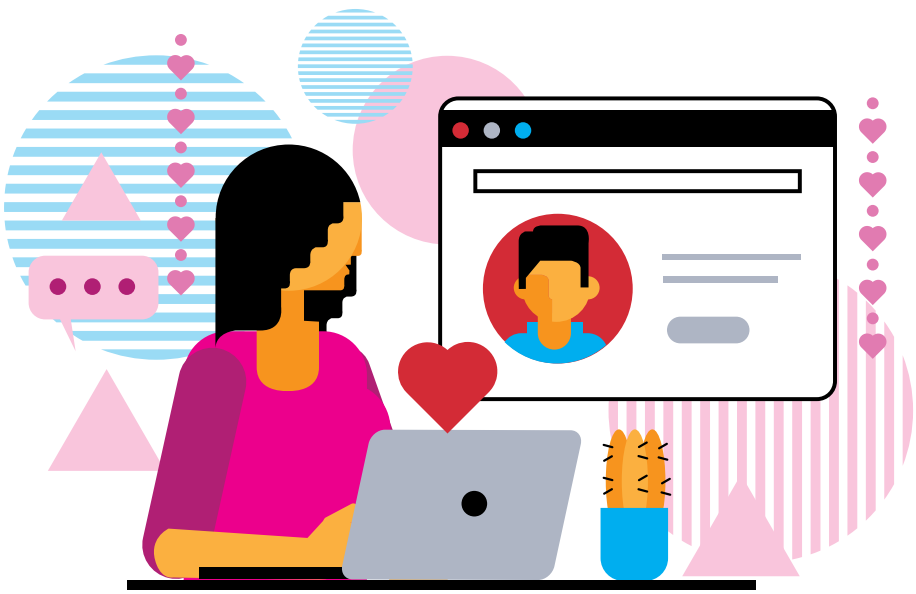

''हमने सीधे तीन साल आगे छलांग लगा दी है. वर्चुअल डेटिंग को लेकर जिन्हें भी झिझक थी, दूर हो गई है और उन्हें एहसास हो गया है कि नए लोगों से मिलने का यह सबसे सुरक्षित तरीका है''

स्नेहिल खानोर
सह-संस्थापक और सीईओ, ट्रूलीमैडली

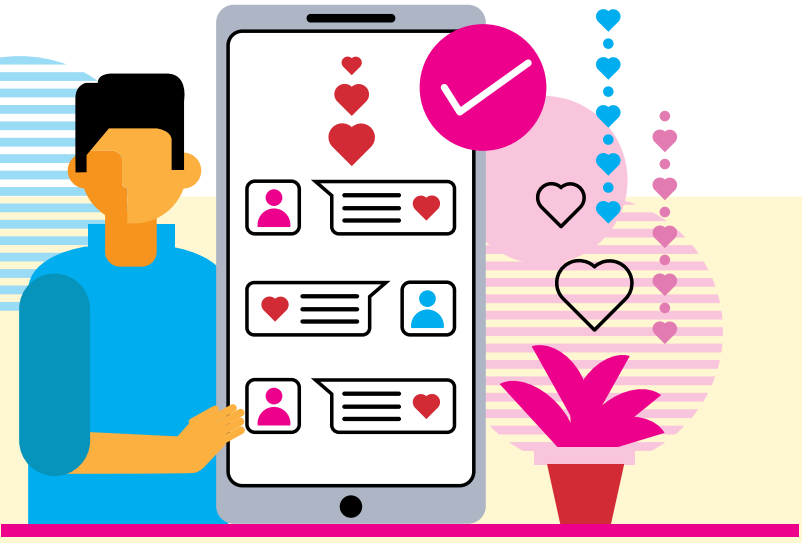

जांच करके यूजर की सुरक्षा पक्की करता है.
आयु वर्ग: उपयोगकर्ताओं का एक बड़ा हिस्सा 18 से 25 वर्ष की आयु के बीच. पर ऐप की योजना 40 से अधिक आयु के और तलाकशुदा सिंगल्स को भी लक्षित करने की.

*** मैचडॉटकॉम**
खास बात: मैचफोन फीचर आपको एक अनाम फोन नंबर देता है जिससे बगैर निगरानी के संभावित डेट्स के साथ चैट की सुविधा मिल जाती है.
आयु वर्ग: 35 से 44 वर्ष के लोग इसके सबसे बड़े यूजर हैं. यह चीज इसे थोड़ी अधिक उम्र वाले सिंगल्स के बीच खासी लोकप्रिय बनाती है.

*** बंबल**
खास बात: अगर मैच हो जाता है तो केवल महिला ही पहला कदम बढ़ा सकती है और आपको हेलो कह सकती है.
आयु वर्ग: 25-30 साल के लोग.

गंभीर होते पाया. यही वजह थी कि प्लेंटी ऑफ फिश के तमाम देशों के सर्वे में शामिल एक-तिहाई लोगों ने कहा कि वे ''हर रिश्ते के साथ ऐसे पेश आ रहे थे मानो यह उनका आखिरी रिश्ता हो''.

टिंडर पर कहीं ज्यादा लोग यह देखने के इच्छुक हैं कि ''नैया किस किनारे लगती है.'' एक वैश्विक सर्वे में 62 फीसद ने कहा कि उन्हें प्रतिबद्ध रिश्ते की तलाश नहीं है बल्कि वे रूमानी संभावना या कैजुअल डेटिंग वाली दोस्ती को तरजीह देंगे. दिल्ली की 19 वर्षीय छात्रा अनन्या पाल (आग्रह पर बदला हुआ नाम) ने अपने ऑनलाइन प्रेमी से तीन महीने चैटिंग और वीडियो डेटिंग की और फिर उससे मिलने का फैसला किया. वे कहती हैं, ''हर शुक्रवार की रात हम एक साथ स्क्रीन शेयर करते और मूवी देखते, हाउसहोल्ड पार्टी ऐप पर वर्चुअल गेम्स खेलते थे.'' जब उनका 'अंतरंग' होने का मन करता, वे जूम के लोकप्रिय और बेहतर सुरक्षा उपायों वाले विकल्प जित्सी मीट पर वीडियो कॉल करते. यहां तक कि दो-एक बार उन्होंने साइबर सेक्स भी किया. ''मैंने सिंड्रेला हैलोवीन मास्क पहना. उसे चेहरा दिखाने में कोई एतराज नहीं था.'' दिल्ली के महरौली इलाके में एक चैरिटी के दवा वितरण अभियान में वॉलंटियर का काम करते हुए अंततः वे मिले. ''हम एक-दूसरे को देखने के लिए और इंतजार नहीं कर सके. यह अपने रिश्ते को ऑफलाइन शुरू करने सार्थक तरीका भी था.'' जब चीजें गंभीर होने लगीं, यह बिखर गया. कोविड की वजह से दादा-दादी को खोने के बाद पाल को लगा कि वे भावनात्मक रूप से तैयार नहीं हैं.

डेटिंग कोच राजा कहते हैं, ''लंबे वक्त तक घर में फंसे रहने की वजह से भी डेटिंग में पहले के मुकाबले बहुत ज्यादा बदलाव आए. अपेक्षाएं बदल गईं, अपने को व्यक्त करने का तरीका भी बदल गया. ऐसे किशोर भी हैं जो गंभीर रिश्तों की तलाश में नहीं हैं, बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति की खोज में हैं जो उनकी निजता का सम्मान करता हो.''

फोडा से उबरने की कुलकर्णी की कोशिशें रंग लाईं. छह महीने ऑनलाइन बातें और वीडियो डेटिंग करने के बाद उन्होंने अंततः अपने ऑनलाइन पार्टनर से मिलने का फैसला किया. उन्हें यकीन था कि उनकी पहली मुलाकात के बाद ही यह खत्म हो जाएगा. ''पर नहीं हुआ. मुझे लगता है शायद इसलिए कि हम एक दूसरे के साथ इतने दोटूक और खुले थे कि इसमें आश्चर्य लायक कोई छिपी बात नहीं थी. चुटकी बजाते हमारा तार जुड़ गया और हमने ऑनलाइन जो नींव रखी थी उसी की बदौलत हम ऑफलाइन मिलने-जुलने पर भी आगे बढ़ते रहे. हमें जल्दी नहीं है. हम शादी या लिव-इन की बात नहीं कर रहे हैं.'' वे फिलहाल खुश हैं और शादी की जल्दबाजी नहीं है.

—साथ में, **संतोष राज सर्वानन, अदिति पै** और **शैली आनंद**

क्या 'राज' दिला पाएंगे राजभर

अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए ओम प्रकाश राजभर ने अखिलेश यादव से हाथ मिला लिया है. इनका गठबंधन सत्ताधारी भाजपा को कितनी चुनौती दे पाएगा?

आशीष मिश्र

मनीष अग्निहोत्री

उत्तर प्रदेश के आगामी विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रभारी के रूप में सितंबर के दूसरे हफ्ते में जिम्मेदारी संभालने वाले केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने भाजपा के वोट बैंक को बढ़ाने की रणनीति बनाई थी. प्रधान ने कुछ छोटी पार्टियों से गठबंधन की संभावनाएं भी तलाशी, जिनमें ओम प्रकाश राजभर की सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) भी शामिल थी. कभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के करीबी नौकरशाह रहे और अब यूपी विधान परिषद में भाजपा के सदस्य अरविंद कुमार शर्मा ने राजभर और प्रधान के बीच लिंक का काम किया. शर्मा के प्रयास से राजभर और प्रधान के बीच 16 अक्तूबर को संभावित गठबंधन को लेकर बातचीत हुई, लेकिन सीटों के बंटवारे पर भाजपा की तरफ राजभर को कोई ठोस आश्वासन नहीं मिल सका. चार दिन बाद इन अटकलों पर अचानक विराम लगा जब राजभर ने 20 अक्तूबर को अपने ट्विटर हैंडल से समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से मुलाकात करते हुए एक फोटो जारी की जिसके ऊपर 'अबकी बार, भाजपा साफ' नारा लिखा हुआ था. इसके कुछ देर बाद सपा के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से भी अखिलेश यादव और राजभर की मुलाकात का वीडियो जारी होते ही यह स्पष्ट हो गया कि 2022 के विधानसभा चुनाव की जंग में सपा को सुभासपा का साथ मिल गया है. 27 अक्तूबर को सुभासपा के 19वें स्थापना दिवस के अवसर पर मऊ जिले के हलधरपुर इलाके के ढोलवन मैदान में आयोजित रैली में बतौर मुख्य अतिथि अपनी मौजूदगी दिखाकर अखिलेश यादव ने राजभर की पार्टी से सपा के गठबंधन पर मुहर लगा दी. अखिलेश यादव ने अपने भाषण में कहा, ''सपा की लाल टोपी और सुभासपा की पीली टोपी अब लाल-पीली होकर एक हो गई है. अगर बंगाल के चुनाव में 'खेला' हुआ है तो पूर्वांचल के लोग भी 'खदेड़ा' यानि भाजपा को सत्ता से भगाकर दिखाएंगे.''

यूपी की सत्ता में वापसी की कोशिश कर रहे अखिलेश यादव के लिए पूर्वांचल में सुभासपा का साथ काफी महत्वपूर्ण है. यूपी विधानसभा की 153 सीटों पर राजभर या इनकी समकक्ष जातियों का प्रभाव है. (देखें ग्राफिक्स) इन सीटों पर 20 हजार से लेकर 90 हजार तक इन जातियों के मतदाता हैं. पूर्वांचल और अवध के 24 जिलों में राजभर समाज से जुड़े मतदाताओं की अच्छी तादाद है. सुभासपा ने वर्ष 2017 का विधानसभा चुनाव भाजपा के साथ गठबंधन करके आठ सीटों पर लड़ा था. इनमें चार पर सुभासपा ने जीत हासिल की थी. मार्च, 2017 में यूपी में भाजपा सरकार बनने के बाद ओम प्रकाश राजभर को पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग का मंत्री बनाया गया था. इसके बाद से लगातार वे पिछड़ों की उपेक्षा का आरोप लगाकर योगी आदित्यनाथ सरकार की आलोचना कर रहे थे. वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में राजभर ने

बातचीत / **ओम प्रकाश राजभर**

''योगी सरकार में मैं अपने समधी का तबादला तक न करवा पाया था.''

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने सपा से गठबंधन के बाद इंडिया टुडे के एसोसिएट एडिटर आशीष मिश्र से अपनी राय साझा की. प्रमुख अंशः

● गठबंधन के लिए आपकी पहली प्राथमिकता भाजपा थी, इसीलिए आप भाजपा के वरिष्ठ नेताओं से मिले थे?

2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने मुझे 22 सीटें देने का वादा किया था, पर केवल आठ ही सीटें दी थीं. इसको मैंने स्वीकार कर लिया था. वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में मैं भाजपा से केवल एक ही सीट मांग रहा था. उन्होंने नहीं दी तो मैंने राजभर समाज के स्वाभिमान को ध्यान में रखकर गठबंधन छोड़ दिया.

अब साथ-साथ
मऊ में 27 अक्तूबर की रैली में
ओम प्रकाश राजभर और अखिलेश यादव

भाजपा के कई नेताओं से मेरे व्यक्तित संबंध हैं तो मैं उनसे मिलता रहता हूं.

● भाजपा सरकार से आपकी नाराजगी क्या है? आप यह भी कह चुके हैं कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के रहते मैं भाजपा से गठबंधन नहीं करूंगा?

मुख्यमंत्री योगी ने विधानसभा सत्र के दौरान यह घोषणा की थी उनकी सरकार पिछड़ी जाति के आरक्षण से जुड़ी 'सामाजिक न्याय समिति-2001' की रिपोर्ट लागू करेगी. इससे पहले भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह भी यही घोषणा कर चुके थे. योगी सरकार रिपोर्ट लागू करने की मेरी मांग से दूर भागने लगी. इतना ही नहीं कैबिनेट मंत्री के तौर पर मैं 200 मीटर सड़क तक नहीं बनवा पाया. मेरे समधी जिला विद्यालय निरीक्षक (डीआइओएस) थे मैं उनका तबादला तक नहीं करवा पाया था. मेरी यही हैसियत रह गई थी.

● आपके पास सपा के पास जाने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया था?

यूपी में भाजपा 14 साल का वनवास काट रही थी, उन्हें जब कोई साथी नहीं मिला था तभी वह मेरे पास आए थे. भाजपा ने मेरा समर्थन लेकर राजभर समाज की पीठ में छुरा भोंकने का काम किया. वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को सबक सिखाने के लिए सुभासपा ने सपा से गठबंधन किया है.

● एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें आप सपा को वोट न देने की अपील कर रहे?

मेरे पुराने वीडियो जारी किए जा रहे हैं. जब मैं भाजपा के साथ था तब सपा को वोट देने से मना कर रहा था.

● भाजपा सुहेलदेव के जरिए राजभर वोटरों को लुभाने की कोशिश कर रही है?

आज से 19 साल पहले कोई सुहेलदेव को नहीं जानता था. भाजपा ने सुहेलदेव को तब जाना जब वे ओम प्रकाश राजभर के संपर्क में आए. अब राजभर समाज को लुभाने के लिए भाजपा सरकार जो भी काम कर रही है वह सब मेरी ही देन है. सारे महापुरुषों के डाकटिकट दिल्ली से जारी होते हैं पर सुहेलदेव पर डाकटिकट प्रधानमंत्री मोदी ने ओम प्रकाश राजभर के विधानसभा क्षेत्र जहूराबाद से जारी किया था.

● सपा से गठबंधन के बाद आपके नेतृत्व में बना भागीदारी संकल्प मोर्चा बिखरता हुआ दिखाई दे रहा है?

भागीदारी संकल्प मोर्चा में केवल सात दल ही शामिल थे. कोई ऐसी प्रेस वार्ता बताइए जिसमें मोर्चा के सदस्य और एआइएमआइएम के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी, आज समाज पार्टी के चंद्रशेखर आजाद या प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (लोहिया) के अध्यक्ष शिवपाल सिंह यादव भी शामिल रहे हों. भागीदारी मोर्चा पूरी तरह एकजुट है. केवल जन अधिकार पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबू सिंह कुशवाहा को शामिल करना बाकी रह गया है. मेरा प्रयास है कि जो भी दल भाजपा को हराना चाहते हैं वह भागीदारी संकल्प मोर्चा के साथ आएं.

● अखिलेश यादव ने अपने चाचा शिवपाल यादव को साथ लेने पर बहुत सकारात्मक रवैया नहीं दिखाया है?

ये अखिलेश यादव के परिवार का मामला है. मेरा मानना है कि परिवार को एक साथ रहना चाहिए. मैं अपनी तरफ से अखिलेश और शिवपाल में एका कराने का प्रयास करूंगा.

● सपा से सीटों के तालमेल पर क्या बातचीत हुई है?

हम एक सीट पर लड़ें या 10 पर, हमें तो मंत्री बनकर रह जाना है. सीएम तो बन नहीं सकता. गठबंधन में जितनी भी सीटें मिलेंगी उनमें ज्यादा जीतने का प्रयास होगा. सरकार बनने पर मंत्री बनकर अपनी पार्टी का प्रसार करूंगा.

विधानसभा चुनाव नहीं लड़ेंगे अखिलेश

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह 2022 का विधानसभा चुनाव नहीं लड़ेंगे. अखिलेश ने एक एजेंसी को दिए गए बयान में कहा कि वे खुद चुनाव न लड़कर पार्टी नेताओं को विधानसभा चुनाव लड़ाएंगे. बीते दिनो मैनपुरी, बदायूं, इटावा में सपा के कई नेताओं ने अखिलेश से उनके जिलों की किसी सीट से चुनाव लड़ने की मांग की थी. इन नेताओं का मानना था कि वर्ष 2022 में सपा सरकार बनने पर अखिलेश की विधानसभा सीट मुख्यमंत्री की हाइप्रोफाइल सीट बन जाएगी, जिससे पूरे जिले में विकास कार्यों को प्राथमिकता मिलेगी. अखिलेश के पिता और सपा के संरक्षक मुलायम सिंह यादव अपने सियासी करियर में आठ बार विधायक रहे हैं. वर्ष 1989 और वर्ष 1993 में जब मुलायम मुख्यमंत्री बने तब वह जसवंतनगर सीट से विधायक भी चुने गए थे. अगस्त, 2003 में मुख्यमंत्री की कुर्सी संभालने के वक्त मुलायम संभल से सांसद थे. मुलायम ने संसद सदस्यता से इस्तीफा देकर गुन्नौर विधानसभा उपचुनाव लड़ा था, जिसे जीत कर विधायक बने थे. वर्ष 2012 में सपा की सरकार बनने पर तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव कन्नौज लोकसभा सीट से सांसद थे. अखिलेश ने संसद की सदस्यता से इस्तीफा देकर विधान परिषद की सदस्यता ग्रहण की थी. 2017 में भी अखिलेश ने विधानसभा चुनाव नहीं लड़ा था. सपा के मुख्य प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी कहते हैं, ''सपा में कौन चुनाव लड़ेगा कौन नहीं इसे तय करने की एक निर्धारित प्रक्रिया है. अभी तक किसी भी उम्मीदवार के चुनाव लड़ने या न लड़ने का फैसला नहीं लिया गया है.'' सियासी विश्लेषक अखिलेश के चुनाव न लड़ने के फैसले के पीछे एक खास रणनीति देख रहे हैं. लखनऊ में कान्यकुब्ज कॉलेज में राजनीतिक शास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर ब्रजेश मिश्र कहते हैं, ''अखिलेश यादव सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ही नहीं बल्कि स्टार प्रचारक भी हैं. सपा का संगठन काफी हद तक अखिलेश पर आश्रित हो चुका है. विधानसभा चुनाव लड़ने से अखिलेश पार्टी के संगठनात्मक कार्यों में ज्यादा समय नहीं दे पाएंगे जिससे पार्टी की संभावनाओं को नुक्सान हो सकता है. 2022 का विधानसभा चुनाव जीतने के बाद अखिलेश एक बार फिर संसद की सदस्यता त्यागकर यूपी विधान परिषद की सदस्यता ले सकते हैं.'' हालांकि मुलायम सिंह यादव परिवार के अन्य सदस्यों को विधानसभा चुनाव में उतारने का मन सपा बना रही है जिनमें बदायूं से पूर्व सांसद धर्मेंद्र यादव और मैनपुरी से पूर्व सांसद तेज प्रताप सिंह यादव के नाम शामिल हैं.

क्यों महत्वपूर्ण हैं राजभर वोट?

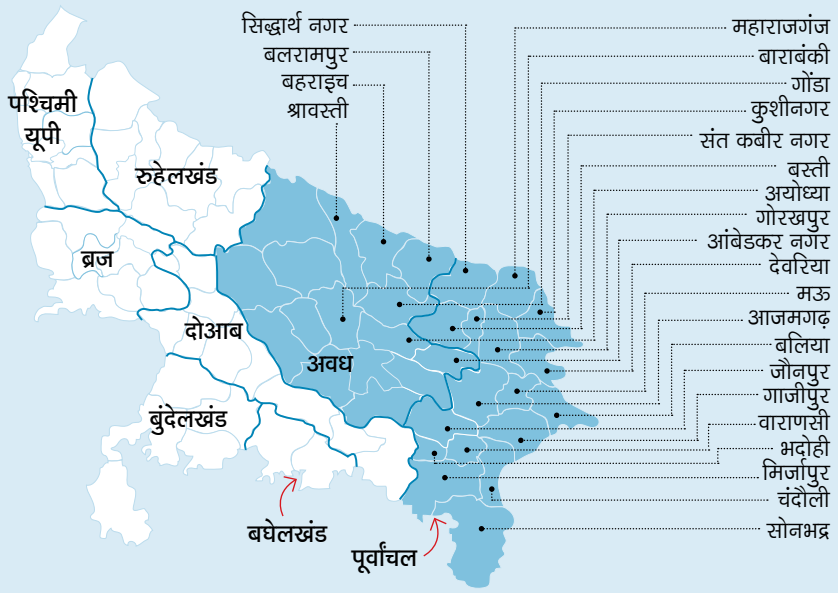

यूपी की 153 विधानसभा सीटों पर राजभर (भर) और इन जैसी जातियों के मतदाताओं का प्रभाव है. इन सीटों पर 20,000 से लेकर 90,000 तक राजभर समाज के वोटर हैं. अवध और पूर्वांचल के 24 जिलों में राजभर मतदाताओं की अच्छी-खासी संख्या है

अर्कवंशी, बारी, खरवार, बियार जातियों को यूपी में भर या राजभर की समकक्ष बिरादरी में गिना जाता है. अर्कवंशी जाति के मतदाता गाजियाबाद, नोएडा, लखीमपुरखीरी, सीतापुर, हरदोई जिलों के अलावा बुंदेलखंड की सभी 19 विधानसभा सीटों पर प्रत्येक में 20,000 से अधिक की संख्या में हैं. बारी और खरवार जाति के मतदाता प्रदेश के सभी 75 जिलों में मौजूद हैं

भाजपा से गठबंधन तोड़कर 39 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे. अब वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव के लिए सपा और सुभासपा का गठबंधन कई मायनों में महत्वपूर्ण है.

बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष और प्रोफेसर शशिकांत पांडे कहते हैं, ''सुभासपा का न केवल राजभर समाज पर प्रभाव है बल्कि बंशी, अर्कवंशी, बिंद, प्रजापति, पाल, विश्वकर्मा जैसी अति पिछड़ी जातियों पर भी उसकी पकड़ है. अगर सपा के मुस्लिम-यादव गठजोड़ को इन जातियों का समर्थन मिलता है तो निश्चित ही सपा-सुभासपा गठबंधन पूर्वांचल में भाजपा के सामने बेहद कठिन चुनौती पेश करेगा.''

रैली से शक्ति प्रदर्शन

वर्ष 2019 का लोकसभा चुनाव सुभासपा ने 39 सीटों पर लड़ा था. इन सभी सीटों पर भले ही सुभासपा उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई हो, पर पूर्वांचल की मछलीशहर, गाजीपुर और बलिया लोकसभा सीट पर सुभासपा के प्रदर्शन ने चौंका दिया था. मछलीशहर लोकसभा सीट पर भाजपा के बी.पी. सरोज ने बसपा के त्रिभुअन राम को बेहद नजदीकी मुकाबले में 181 वोटों से हराया था. इस सीट पर सुभासपा को 11,000 से अधिक वोट मिले थे. इसके बाद अक्तूबर 2019 के जलालपुर विधानसभा उपचुनाव में सुभासपा प्रत्याशी को मिले कुल वोट विजयी सपा उम्मीदवार की जीत के अंतर से काफी अधिक थे. शशिकांत पांडे कहते हैं, ''अकेले चुनाव लड़ने पर भले ही सुभासपा को कम वोट मिले हों लेकिन विधानसभा चुनाव में बड़ी पार्टियों के बीच नजदीकी मुकाबलों में सुभासपा का वोटबैंक अंतर पैदा कर सकता है.'' 27 अक्तूबर को मऊ में रैली करने के बाद राजभर 14 नवंबर को बस्ती, 17 नवंबर को कुशीनगर और 27 नवंबर को हरदोई में सपा-सुभासपा गठबंधन की बड़ी रैली करने की तैयारी में जुटे हैं.

स्पष्ट हो रही सपा गठबंधन की तस्वीर

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव लगातार अपने बयानों में बड़ी पार्टियों की बजाय छोटी पार्टियों से गठबंधन करने की बात कह रहे हैं. राजभर की सुभासपा से गठबंधन के बाद सपा की छोटी पार्टियों से सपा के गठबंधन की तस्वीर कुछ साफ हो

सुभासपा का चुनावी प्रदर्शन

- वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के साथ गठबंधन कर सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) ने 8 सीटों पर चुनाव लड़ा था. इन 8 सीटों पर कुल मिलाकर सुभासपा को 34 फीसद वोट मिला था. सुभासपा ने चार सीटें जीतीं थी जिनमें तीन रिजर्व सीटें थीं
- वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में सुभासपा ने 39 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे. सभी उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई थी. हालांकि, मछलीशहर लोकसभा सीट पर सुभासपा को 11,223 वोट मिले थे (वहां भाजपा जीती थी). गाजीपुर में सुभासपा 33,877 वोट पाकर तीसरे नंबर पर थी. बलिया में भाजपा ने सपा को 15,519 वोटों से हराया था. इस सीट पर सुभासपा को उम्मीदवार को 35,900 वोट मिले थे
- अक्तूबर, 2019 में जलालपुर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में सपा ने बसपा को सिर्फ 776 मतों से हराया था. वहां चौथे स्थान पर रहे सुभासपा उम्मीदवार को 9,040 वोट मिले थे

एएनआइ

चुनावी तैयारी
लखनऊ में 29 अक्तूबर को अमित शाह के साथ योगी

"पर्दाफाश रैली के जरिए ओम प्रकाश राजभर की असलियत राजभर समाज को बताई जाएगी. पर्दाफाश रैली में आने वाली भीड़ स्पष्ट कर देगी कि पूर्वांचल के राजभर मतदाता किसके साथ हैं"

अनिल राजभर, कैबिनेट मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार

रही है. गैर-यादव ओबीसी जातियों को सपा की ओर खींचने के लिए अखिलेश यादव ने स्थानीय रूप से जाति विशेष में प्रभाव रखने वाली छोटी पार्टियों से गठबंधन करने की रणनीति बनाई है. सपा ने केशव देव मौर्य की पार्टी महान दल और संजय चौहान की जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के साथ गठबंधन का ऐलान कर दिया है.

महान दल का यूपी में सियासी आधार बरेली, बदायूं, शाहजहांपुर, पीलीभीत, आगरा, बिजनौर और मुरादाबाद जिले की शाक्य, सैनी, कुशवाहा, मौर्य, कंबोज जैसी अति पिछड़ी जातियों के बीच है. इसी तरह संजय चौहान की जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का सियासी आधार पूर्वांचल के मऊ, आजमगढ़, गाजीपुर, चंदौली, देवरिया जिलों की नोनिया पिछड़ी जाति में है.

प्रोफेसर शशिकांत पांडे बताते हैं, "जिस प्रकार सपा ने छोटी पार्टियों के साथ गठबंधन की रणनीति बनाई है उससे वर्ष 2022 के यूपी विधानसभा चुनाव की लड़ाई भी सपा और भाजपा गठबंधन के बीच सिमटती जा रही है. ऐसा इसलिए भी क्योंकि कांग्रेस और बसपा जैसी पार्टियों के प्रति छोटी स्थानीय पार्टियों का झुकाव नहीं है."

भाजपा का आक्रामक प्रत्युत्तर

ओम प्रकाश राजभर की भाजपा से नाराजगी मार्च 2018 के राज्य सभा चुनाव के बाद शुरू हो गई थी. पूर्वांचल के राजभर वोटरों को लुभाने के लिए भाजपा ने बलिया के नेता सकलदीप राजभर को राज्यसभा भेजा था. तब से सुभासपा और भाजपा के बीच दूरियां बढ़ने लगी थीं. राजभर समाज बहराइच जिले के पौराणिक राजा सुहेलदेव को अपना आदर्श मानता है. कहा जाता है कि उन्होंने वर्ष 1034 में महमूद गजनवी के सेनापति सैयद सालार मसूद गाजी को युद्ध में हरा कर मार डाला था.

ओम प्रकाश राजभर और भाजपा के बीच विवाद उस वक्त चरम पर पहुंच गया जब 28 दिसंबर, 2019 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गाजीपुर में रैली करके सुहेलदेव पर डाक टिकट जारी किया था. सुहेलदेव के जरिए राजभर वोटरों के बीच पैठ बनाने की भाजपा की कोशिश ओम प्रकाश राजभर को पसंद नहीं आ रही थी, इसलिए वह गाजीपुर में मोदी की रैली में शामिल नहीं हुए थे. इसी वर्ष मोदी ने 16 फरवरी को बहराइच में सुहेलदेव के स्मारक का वर्चुअल शिलान्यास किया था. लोकसभा चुनाव के बाद 21 अगस्त को हुए योगी सरकार के पहले मंत्रिमंडल विस्तार में वाराणसी की शिवपुर विधानसभा सीट से भाजपा विधायक अनिल राजभर को राज्यमंत्री पद से प्रमोशन देकर कैबिनेट मंत्री बना दिया गया था. दो महीने बाद 22 अक्तूबर को अनिल राजभर को योगी सरकार के प्रवक्ता की जिम्मेदारी भी देकर पूर्वांचल में राजभर वोटरों को सकारात्मक संदेश देने की कोशिश की गई थी. इसके बाद से अनिल राजभर लगातार पूर्वांचल के राजभर बाहुल्य क्षेत्रों में बैठक कर रहे हैं. सपा और सुभासपा के बीच गठबंधन होने के बाद अनिल राजभर मऊ में 'पर्दाफाश रैली' के आयोजन की तैयारियों में जुटे हैं. अनिल राजभर ओम प्रकाश राजभर पर बांदा जेल में बंद माफिया और मऊ सदर से विधायक मुख्तार अंसारी से मिलीभगत का आरोप लगा रहे हैं. अनिल राजभर कहते हैं, "पर्दाफाश रैली के जरिए ओम प्रकाश राजभर की असलियत राजभर समाज को बताई जाएगी कि किस तरह मुख्तार अंसारी के सहयोग से इनकी विधानसभा क्षेत्र में आने वाले मऊ जिले के हरधरपुर इलाके में 27 अक्तूबर को रैली हुई थी. 'पर्दाफाश रैली' में आने वाली भीड़ यह स्पष्ट कर देगी कि पूर्वांचल के राजभर मतदाता किसके साथ हैं." इस तरह राजभर मतदाताओं को रिझाने की होड़ शुरू हो चुकी है. ■

मुसीबत के भंवर में छोटे कारोबारी

मांग में कमी, कच्चे माल के बढ़ते दाम और आसमान छूती ढुलाई की लागत ने बहुत छोटे, छोटे और मझौले उद्योगों पर ऐसा कहर बरपाया कि कई दिवालिया होने की कगार पर आ गए

एम.जी. अरुण

मुंबई के 51 वर्षीय सुनील कुमार खासे चिंतित हैं. वे आवास क्षेत्र के लिए धातु की फिटिंग के छोटे उत्पादक और निर्यातक हैं. अर्थव्यवस्था के काफी हद तक खुल जाने के बावजूद उनके उत्पादों की मांग में कमी है. पश्चिम एशिया के देशों को निर्यात कई सालों से उनका मुख्य सहारा था, जो इस साल घटकर आधा रह गया और बढ़ने के आसार भी नहीं दिखते. वहीं आगत लागतें, खासकर स्टील के दाम, महामारी के पहले के मुकाबले चार गुना बढ़ गए, जबकि शिपिंग लागतें दोगुनी से ज्यादा हो गईं. हैरान-परेशान कुमार कहते हैं, ''कुछ पक्का नहीं है, महामारी हो या कारोबारी माहौल या सरकारी नीतियां.'' उन्हें उम्मीद है कि त्योहारी सीजन के चलते मांग में सुधार आएगा.

सुनील की तरह लाखों उद्यमी हैं जो कोविड के ज्यादा से ज्यादा टीके लगने और मामलों में कमी आने के साथ अर्थव्यवस्था के खुलने पर आस लगाए बैठे हैं. बड़ी कंपनियों ने तो महामारी से खुद को बचा लिया और यहां तक कि लागतों में कटौती करके मुनाफे की गुंजाइशें बढ़ा लीं. यह जून में खत्म होने वाली तिमाह में जीडीपी में 20 फीसद की उछाल से भी पता चलता है, हालांकि इसकी वजह बहुत ज्यादा निचला आधार भी था. मगर एमएसएमई (बहुत छोटे, छोटे और मझोले उद्यम) क्षेत्र की इकाइयां घाटे से उबरने के लिए अब भी हाथ-पैर मार रही हैं. कई लोगों का कहना है कि भारतीय उत्पादन क्षेत्र की रीढ़ एमएसएमई क्षेत्र में जब तक दोबारा जान नहीं आती, आर्थिक वृद्धि टिकाऊ नहीं होगी. अपने आकार की वजह से ही इस क्षेत्र का कुल निवेश और खपत पर भारी असर पड़ता है और अप्रैल-जून की तिमाही में दोनों ही पिछड़ गए.

भारत के 6.34 करोड़ एमएसएमई की देश के मैन्युफैक्चरिंग उत्पादन में 45 फीसद और इसके निर्यात में 40 फीसद हिस्सेदारी है और यह करीब 12 करोड़ लोगों को रोजगार देता है. 2020 में जब केंद्र ने दुनिया के सबसे सख्त लॉकडाउन में से एक लगाया, तब यह आर्थिक गतिविधियों के एकाएक ठहर जाने की सबसे बदतर मार सहने वाले क्षेत्रों में से एक था. पिछले साल जून में ऑल इंडिया मैन्युफैक्चरर्स ऑर्गेनाइजेशन के सर्वे से पता चला कि भारत के 35 फीसद एमएसएमई और 37 फीसद स्वनियोजित लोगों को महामारी के कारण अपने कारोबार बंद करने पड़े. इस साल मई में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लोकलसर्कल्स के 171 जिलों में फैले 6,000 स्टार्ट-अप पर किए गए एक सर्वे में करीब 60 फीसद उत्तरदाताओं ने आशंका जाहिर की कि अगले छह महीनों के दौरान उन्हें फर्म का काम घटाना, बेचना या बंद करना पड़ सकता है. करीब 41 फीसद ने कहा कि उनकी पूंजी खत्म हो चुकी है या महीने भर से भी कम की पूंजी बची है. अजीब बात तो यह है कि केंद्र कहता है उसके कोविड-19 लॉकडाउन की वजह से कारोबार की नाकामियां सहने वाले एमएसएमई की संख्या के बारे में उसके पास कोई डेटा नहीं है.

चंद्रदीप कुमार

टिकने का संघर्ष
हरियाणा के बहादुरगढ़ में फुटवेयर का सामान बनाने वाली एक एमएसएमई कंपनी शालीमार ओवरसीज में काम करते कर्मचारी

बड़ा दायरा

6.34
करोड़ है भारत में एमएसएमई की अनुमानित संख्या

45%
हिस्सा है एमएसएमई का भारत के मैन्युफैक्चरिंग आउटपुट में

40%
हिस्सेदारी है एमएसएमई की भारत के निर्यात में

12
करोड़ लोगों को रोजगार मिलता है एमएसएमई में

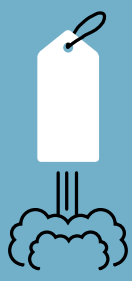

एमएसएमई संकट: समस्याएं और समाधान

मई में, एमएसएमई की स्थिति के आकलन के लिए हुए सर्वे में लगभग 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें लगता है कि अगले छह महीने में उन्हें अपना कारोबार सिकोड़ना होगा या बेचना या बंद करना पड़ेगा

चुनौती
कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि. इस साल जून से स्टील मिलों ने कीमतों में 4,500 रु. प्रति टन तक की बढ़ोतरी की है और साल जनवरी से एल्युमीनियम की कीमतें भी लगातार बढ़ रही हैं.

समाधान
केंद्र को प्रमुख कच्चे माल की कीमतों में उतार-चढ़ाव की निगरानी करने की जरूरत है. जरूरी हो तो मामलों को प्रतिस्पर्धा आयोग के पास भेजना चाहिए. एमएसएमई चाहते हैं कि केंद्र आयात शुल्क युक्तिसंगत बनाए और प्रमुख कच्चे माल पर शुल्क शून्य करे

चुनौती
शिपिंग सुविधाओं में कमी और उच्च परिवहन लागत. शिपिंग का खर्चा विश्व स्तर पर दोगुना हो गया है. दुनिया के कुल माल परिवहन का 80 प्रतिशत से अधिक पानी के जहाजों से होता है. परिवहन लागत में वृद्धि के कारण कीमतों में वृद्धि हुई है

समाधान
भारतीय अधिकारियों को ईंधन पर करों को युक्तिसंगत बनाने की जरूरत है ताकि स्थानीय परिवहन सस्ता हो

चुनौतियां
उच्च एनपीए. एमएसएमई क्षेत्र में संकट से एनपीए (गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां) के बढ़ने की आशंका है. इस साल मार्च में हुए फिक्की-इंडियन बैंक एसोसिएशन के सर्वे में शामिल 84 फीसद उत्तरदाता एमएसएमई क्षेत्र से एनपीए में वृद्धि की संभावना जता रहे थे.

समाधान
केंद्र को एमएसएमई को अभियोजन और दंड से बचाने की जरूरत है जो महामारी के कारण शर्तों का अनुपालन नहीं कर पाए. इसे संभावित एनपीए के संबंध में मौजूदा कानूनों की भी समीक्षा करनी चाहिए ताकि एमएसएमई को उबरने और उनके ऋणों का भुगतान करने के लिए अधिक गुंजाइश मिल सके.

चुनौती
अर्थव्यवस्था के खुलने के बावजूद बंद और घटती मांग ने एमएसएमई के नकदी प्रवाह को प्रभावित किया है, जिससे उनके लिए अपना परिचालन खर्च भी पूरा करना मुश्किल हो गया है

समाधान
अधिकांश एमएसएमई ऐसे उद्यमी चलाते हैं जिन्हें ऋण के आवेदन की प्रक्रिया और लंबी-चौड़ी कागजी कार्रवाई बहुत जटिल लगती है. उनको व्यवसाय फिर से शुरू करने/इनपुट लागत घटाने के लिए तत्काल वित्तीय सहायता की जरूरत है

आसमान छूती लागतें

कच्चे माल की कीमतों में बढ़ोतरी का एमएसएमई पर घातक असर पड़ा. फेडरेशन ऑफ इंडियन माइक्रो ऐंड स्मॉल ऐंड मीडियम एंटरप्राइजेज (एफआइएसएमई) के महासचिव अनिल भारद्वाज कहते हैं, ''स्टील, एल्यूमिनियम, कॉपर और प्लास्टिक सरीखे कच्चे माल (की जरूरत) वाले क्षेत्र परेशानी में हैं.'' स्टील मिलों ने इस साल जून से अपनी कीमतें 4,500 रुपए प्रति टन तक बढ़ा दीं, जिससे हॉट रोल्ड कॉइल की मानक कीमत करीब 68,000 प्रति टन की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई. एल्यूमिनियम की कीमतें जनवरी से ही लगातार बढ़ रही हैं और बीते कुछ हफ्तों में इसकी कीमतें 14 फीसद बढ़कर करीब 2.25 लाख रुपए प्रति टन पर पहुंच गई, जो 2008 के बाद सबसे ज्यादा है. विशेषज्ञ यह देखकर हैरान हैं कि सुस्त मांग के बावजूद कीमतें बढ़ रही हैं. एक वजह तो अंतरराष्ट्रीय बाजारों में चीजों के बढ़ते दाम हैं क्योंकि चीन कच्चे मालों के निर्यात में कटौती कर रहा है.

ढुलाई की ऊंची लागतों और शिपिंग बाजारों के अवरुद्ध हो जाने ने भी आयातों का दम निकाल दिया है. घरेलू उत्पादकों ने मौके का फायदा उठाया और अपने तैयार सामानों की कीमतें बढ़ा दीं. इससे जेएसडब्ल्यू स्टील, टाटा स्टील और हिंडाल्को सरीखी कमोडिटी सेक्टर की बड़ी कंपनियों के हाथ तो खजाना लग गया, नुक्सान उठाना पड़ा एमएसएमई को. भारद्वाज का कहना है कि कीमतों में 10 से 40 फीसद का इजाफा हुआ है. नतीजतन लोहे और स्टील पर बहुत ज्यादा निर्भर इंजीनियरिंग क्षेत्र सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में है. कुमार कहते हैं कि कच्चा माल मिलने में देरी के कारण ऑर्डर भी पूरे नहीं कर पा रहे हैं. वे कहते हैं कि पहले मैन्युफैक्चर सुबह कच्चे माल का ऑर्डर देते थे और दोपहर तक माल आ जाता था.

> **"स्टील, एल्यूमिनियम, कॉपर और प्लास्टिक सरीखे कच्चे माल (की जरूरत) वाले एमएसएमई क्षेत्र परेशानी में हैं"**
>
> **अनिल भारद्वाज**
> *महासचिव, फेडरेशन ऑफ इंडियन माइक्रो ऐंड स्मॉल ऐंड मीडियम एंटरप्राइजेज*

अब विक्रेता माल पहुंचाने में तीन दिन ले रहे हैं, जिससे पूरी उत्पादन शृंखला में नीचे तक देरी होती है.

अहमदाबाद इंजीनियरिंग मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के प्रेसीडेंट अशोक कुमार सी पटेल के मुताबिक, पिग आयरन या कच्चा लोहा, कोल सिलिकन, ग्रेफाइट, मैग्नीशियम और कबाड़ की धातु सहित फाउंडरियों और इंजीनियरिंग उद्योगों के कच्चे माल की कीमतों में तेज बढ़ोतरी हुई है, जिससे तैयार सामानों के दाम भी बढ़े हैं. कच्चे लोहे की कीमत पिछले साल 1 जुलाई को 30,750 रुपए प्रति टन से बढ़कर इस साल 17 सितंबर को 44,450 रुपए पर पहुंच गई. कोयले के दामों में बढ़ोतरी के बाद मेटल कास्टिंग की कीमतें भी 3.50 रुपए प्रति किलो तक बढ़ गई हैं. पटेल कहते हैं, ''फाउंडरी और इंजीनियरिंग

उद्योग (की कई फर्म) बंदी की कगार पर है और इसका असर नौकरियों पर पड़ेगा.''

छोटे वक्त में इन बढ़ती कीमतों का असर यह भी होगा कि ऐसी कंपनियों का मुनाफा घट जाएगी. लंबे वक्त में अगर कच्चे माल के आयातों पर यह असर बना रहता है, तो फर्म कच्चे माल के बजाए ज्यादा से ज्यादा तैयार सामान आयात करने लगेंगी. ऐसे वक्त जब केंद्र आत्मनिर्भर भारत अभियान के जरिए भारत को ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब बनाने पर जोर दे रहा है, यह एक कदम पीछे जाना होगा. इसका लगातार बढ़ता असर नौकरियों और मांग पर पड़ेगा, जो आर्थिक दुष्चक्र की तरफ ले जाएगा, जिसमें कच्चे माल की कमी के चलते फर्म बंद और नौकरियां कम होंगी और फिर इससे मांग और भी कम होती जाएगी.

दिल्ली के गारमेंट उत्पादक/निर्यातक 56 वर्षीय शरद गुप्ता की लुधियाना में एक फैक्ट्री है जिसमें करीब 125 लोग काम करते हैं. वे कहते हैं कि सूती धागे की कीमत बीते दो सालों में दोगुनी से ज्यादा हो गई है, 170 रुपए थी और अब 340 रुपए से ज्यादा है. उनकी फर्म का टर्नओवर, जो महामारी से पहले लगभग 100 करोड़ रुपए था, अब 10 करोड़ रुपए पर आ गया है. वे कहते हैं, ''हालांकि बाजार फिर खुल गए हैं, पर ग्राहक ऑर्डर ही नहीं दे रहे हैं, खासकर फैशनेबल और मॉर्डन गारमेंट की कैटेगरी में.'' उनके उत्पादों में टी-शर्ट और ट्रैक सूट सरीखे बुने हुए कपड़े हैं, जो अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और मध्य पूर्व के देशों को निर्यात किए जाते हैं.

इनपुट कॉस्ट में बढ़ोतरी की एक और वजह शिपिंग लागत बढ़ना है, जो दुनिया भर में दोगुनी हो गई हैं. ब्लूमबर्ग की जून की एक रिपोर्ट के मुताबिक, चीन के शंघाई से कार्गो का 40-फुट का स्टील कंटेनर नीदरलैंड के रोटेरडैम भेजने की ढुलाई रिकॉर्ड 10,522 डॉलर (7.8 लाख रुपए) पर पहुंच गई है, जो बीते पांच सालों के सीजनल औसत से 80 फीसद ज्यादा है. जहां 80 फीसद से ज्यादा व्यापार समुद्री रास्ते होता हो, ढुलाई की लागत में इस बढ़ोतरी की वजह से खिलौनों से लेकर कपड़ों तक और चीनी व कॉफी से लेकर दूसरी खाने-पीने की चीजों तक की कीमतें बढ़ गई हैं. गुप्ता कहते हैं कि महामारी से पहले मुंबई से डरबन तक 20 फुट के कंटेनर का शिपिंग चार्ज करीब 800 डॉलर (60,000 रुपए) था, जो अब 5,800 डॉलर (4.3 लाख रुपए) है, यानी पहले की कीमत से सात गुना ज्यादा.

कोई जादुई इलाज नहीं

एमएसएमई क्षेत्र के ज्यादा कर्ताधर्ता कहते हैं कि सरकार को चाहिए कि एमएसएमई क्षेत्र के लिए एक समग्र नीति लेकर आए. गुप्ता कहते हैं, ''गारमेंट उद्योग बड़ी तादाद में नौकरियां देता है और इसके प्रति सरकार का नजरिया बदलने की जरूरत है.'' वे कहते हैं कि पड़ोसी बांग्लादेश भारत के मुकाबले गारमेंट का पांच गुना ज्यादा निर्यात करता है, क्योंकि भारत में सरकार घरेलू मैन्युफैक्चरर्स को जितना सहारा देती है, उसके मुकाबले वहां उद्योग को सरकार का कहीं ज्यादा समर्थन हासिल है.

संकट में पड़े एमएसएमई की मदद के लिए केंद्र ने जो बड़ी योजना शुरू की, वह आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस)

केस स्टडी

सी.एस. प्रकाश, 50 वर्ष

संस्थापक और एमडी, पुष्पक प्रोडक्ट्स, बेंगलूरू

हेमंत मिश्रा

''दाम नहीं बढ़ा सकते, मुनाफे पर भारी दबाव है''

प्रकाश की 29 साल पुरानी फर्म एयरोस्पेस, इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स सहित सात क्षेत्रों में काम करती है और उसका वार्षिक राजस्व 38 करोड़ रुपए है. फर्म को महामारी के दौरान व्यापार का नया अवसर दिखा और उसने वेंटिलेटर के लिए ट्रॉली और और जानवरों के इअर टैग बनाना शुरू कर दिया. दोनों ही उत्पाद केंद्र सरकार के लिए बनाए जा रहे थे. प्रकाश नए उपक्रमों से अपने राजस्व को तीन गुना करने में सक्षम रहे हैं. उनकी फर्म ने ऑर्डर मिलने के दो से तीन महीनों के भीतर 9,200 ट्रॉलियां बनाईं और एक करोड़ जानवरों के इअर टैग की आपूर्ति की. उन्हें एक करोड़ इअर टैग बनाने का एक और ऑर्डर भी मिला है लेकिन इनपुट की बढ़ी लागत ने उनका मुनाफा निगल लिया.

एक प्रमुख कच्चे माल स्ट्रक्चरल स्टील की लागत पिछले एक साल में दोगुनी होकर 45 रुपए प्रति किलोग्राम से 90 रुपए प्रति किलोग्राम हो चुकी है, जबकि प्लास्टिक की कीमतें एक साल में 290 रुपए से बढ़कर 550 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई हैं. इस बीच, परिवहन लागत दोगुनी हो गई है. पहले बेंगलूरु से नई दिल्ली के लिए ट्रक से ढुलाई का भाड़ा 45,000 रुपए था, जो अब बढ़कर 70,000 रुपए हो गया है. बहरहाल, प्रकाश अपने उत्पाद का मूल्य नहीं बढ़ा सकते. वे कहते हैं, ''जब हमें एल1 टेंडर के आधार पर ऑर्डर मिलता है, तो फिर कीमत बढ़ने की कोई संभावना नहीं होती. लाभ शून्य है, कभी-कभी तो नकारात्मक भी हो जाता है यानी लागत, कीमत से अधिक बैठक रही है.'' चूंकि कम मुनाफे के कारण कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि नहीं की जा सकती इसलिए उनके नौकरी छोड़ने का खतरा भी बना रहता है. वे कहते हैं कि यह समय है कि हम नए अवसरों की पहचान करके अपने व्यवसाय के जोखिम को कम करें ताकि फर्मों का नकदी प्रवाह प्रभावित न हो, भले ही उस क्षेत्र में व्यावसायिक अनिश्चितता ही क्यों न हो. एक अन्य रास्ता, उत्पाद की कीमतों पर बेहतर नियंत्रण रखने के लिए अन्य एमएसएमई के साथ सहयोग करना भी हो सकता है. ■

केस स्टडी

संदीप जैन, 56 वर्ष

एमडी, सोलो ग्रुप, गुड़गांव

यासिर इकबाल

''पता नहीं लागत कहां तक जाएगी''

जैन, जिनका 30 साल पुराना समूह प्रिसीजन मशीन, ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग और एल्यूमिनियम डाई-कास्टिंग में कारोबार करता है, अभूतपूर्व अनिश्चितता के दौर से गुजर रहा है. उनकी फर्में कोविड लॉकडाउन में भी अपना अस्तित्व बचाने में सफल रहीं जब उत्पादन में लगभग 25 प्रतिशत की गिरावट देखी गई थी, लेकिन इनपुट की बढ़ती लागत ने उनके व्यवसाय पर आज कहीं ज्यादा बड़ी चोट की है. पिछले छह महीनों में एल्यूमिनियम की कीमतें 35 फीसदी बढ़कर, 140 रुपए से 205 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई हैं. एक समय तो एल्युमीनियम 220 रुपए प्रति किलो तक हो गया था. जैन के समूह में 180 कर्मचारी काम करते हैं और सालाना कारोबार करीब 30 करोड़ रुपए का है. जैन कहते हैं, ''मैं बता नहीं सकता कि कीमतें कहां तय जाएंगी.'' सितंबर और अक्तूबर के महीनों में फेरो अलॉय के दाम भी दोगुने हो गए. शीट मेटल स्क्रैप, प्लास्टिक और पॉलिमर जैसे अन्य इनपुट की लागत में भी भारी वृद्धि देखी गई है. रही सही कसर शिपिंग की लागत ने पूरी कर दी. 20 फुट कंटेनर के लिए शिपिंग का खर्च 2500 डॉलर (1.8 लाख रुपए) से बढ़कर 5000 डॉलर (3.7 लाख रुपए) हो गया है जबकि शिपिंग की अवधि चार-पांच सप्ताह से बढ़कर आठ सप्ताह से अधिक हो गई है.

जैन जैसे उद्यमियों के सामने दुविधा यह है कि वे अपने आपूर्तिकर्ताओं की ओर से बढ़ाई गई कीमतों के अनुसार अपने उत्पादों की कीमतें नहीं बढ़ा सकते हैं. इस बीच उनके ग्राहकों ने बहुत कम इन्वेंट्री स्तरों पर काम करना शुरू कर दिया है. दुनिया भर में सेमीकंडक्टर की कमी के कारण ऑटो कंपनियों के उत्पादन में कमी आई है. इसने अधिकांश आपूर्तिकर्ताओं को प्रभावित किया है, जिससे उनके नकदी प्रवाह में कमी आई है. लुगदी की कमी के कारण पैकेजिंग सामग्री की भी कमी हो गई थी क्योंकि चीन ने उच्च कीमतों की पेशकश करके भारत से लुगदी उठाना शुरू कर दिया था जिससे भारत सरकार को हस्तक्षेप करना पडा. जैन की फर्म के कुछ आपूर्तिकर्ताओं को बिजली की कमी का भी सामना करना पड़ा. पंजाब में इकाइयां तीन सप्ताह के लिए बंद हो गईं जिससे मजदूरों का पलायन शुरू हो गया. ■

है. इसमें पूरी तरह सरकार की गारंटी पर कारोबारों को कर्ज दिए गए. 23 सितंबर, 2021 तक कुल स्वीकृत कर्ज 2.86 लाख करोड़ रुपए के पार चले गए थे और जो कुल गारंटियां दी गई थीं, उनमें से 95 फीसद एमएसएमई को स्वीकृत कर्ज पर दी गई थीं. मगर करीब महज 15 फीसद एमएसएमई ने ईसीएलजीएस के तहत कर्ज लिए, क्योंकि जब तक उन्हें पक्का पता न हो कि कर्ज कैसे चुकाएंगे, एमएसएमई अपने सिर पर और ज्यादा कर्ज का बोझ लेना नहीं चाहते. यही नहीं, इनमें से ज्यादातर इकाइयां अकेले आंत्रेप्रेन्यौर चलाते हैं, जिन्हें कर्ज के आवेदन और जरूरी कागजी कार्रवाइयां पूरी करने की प्रक्रिया इतनी बोझिल और दुखदायी लगती है कि इसमें जाना ही अर्थहीन लगता है.

हाल में वित्त मंत्रालय ने यह योजना छह और महीनों के लिए 31 मार्च 2022 या 4.5 लाख करोड़ रुपए की कुल सीमा पूरी होने (जो भी पहले हो) तक बढ़ा दी. मगर योजना के साथ दिक्कत यह है कि यह केवल उनकी मदद करती है जिन्होंने बैंक से कर्ज लिया है. कई इकाइयों ने बैंकों से कर्ज नहीं लिए क्योंकि उन्हें भारी-भरकम पूंजी की जरूरत नहीं है. उन्हें तो काम दोबारा शुरू करने भर के लिए वित्तीय सहायता की जरूरत है. बेंगलूरू के आंत्रेप्रेन्यौर ने इंडिया टुडे से कहा कि कुछ मामलों में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक एमएसएमई को कर्ज देने से कतरा रहे हैं. मुंबई के एक अर्थशास्त्री कहते हैं, ''एमएसएमई के मामले में पारदर्शिता बड़ी दिक्कत है, जिसकी वजह से बैंक उन्हें उधार देने में अनिच्छुक होते हैं.''

सितंबर में एफआइएसएमई ने पत्र भेजकर केंद्र सरकार से गुहार लगाई कि वह शीर्ष दस कच्चे माल की कीमतों में उतार-चढ़ावों की कड़ी निगरानी करे और जरूरत हो तो मामले भारत के प्रतिस्पर्धा आयोग को भेजे. यह भी कहा गया कि केंद्र आयात शुल्कों को तर्कसंगत बनाए और प्रमुख कच्चे माल पर शुल्क शून्य करे. इतना ही नहीं, उसका कहना है कि सरकार को महामारी के दौरान 31 मार्च 2022 तक अनुपालन नहीं करने की वजह से आयद अभियोजन और जुर्मानों से एमएसएमई की हिफाजत करनी चाहिए. उसने पहले भी वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन से कहा था कि वे भारतीय रिजर्व बैंक की तरफ से 2014 में लाए गए 'विशेष उल्लेख खातों' की मौजूदा प्रथा की समीक्षा करनी चाहिए ताकि उन खातों को पहचाना जा सके जिनके एनपीए या संकटग्रस्ट संपत्ति में बदलने की आशंका है, क्योंकि इससे एमएसएमई पर और ज्यादा बोझ पड़ता है.

एमएसएमई क्षेत्र की अहमियत तो सब स्वीकार करते हैं, पर फिर भी उनकी तकलीफों का कोई अंत नहीं है और न ही उनकी समस्याएं सुलझाने की कोई रणनीति है. अब वक्त आ गया है कि इस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित किया जाए, जिसका लक्ष्य उनकी फौरी वित्तीय तकलीफें दूर करना और आगत लागतें कम करना हो. यदि ऐसा नहीं किया जाता, तो इस रीढ़ क्षेत्र में संकट का गहरा होना अर्थव्यवस्था को गर्त में धकेल देगा. ■

रेगिस्तान में नखलिस्तान बनता एक नगर

तहसील मुख्यालय पचपदरा थार के रेगिस्तान में नमक की बावड़ियों के लिए जाना जाता था. अब यहां 65,000 करोड़ रुपए की भारत की पहली एकीकृत रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स का काम जोर पकड़ने से इस नगर की कायापलट हो रही है

रोहित परिहार, बाड़मेर में

तेल की धार पर
एचपीसीएल पचपदरा रिफाइनरी कॉम्प्लेक्स में काम तेजी पर

पुरुषोत्तम दिवाकर

क दशक पहले पचपदरा की स्थिति ऐसी थी कि रेगिस्तान में एनएच-112 पर बाड़मेर और जोधपुर के बीच गुजरते हुए उसकी तरफ इशारा करने वाला साइनबोर्ड पलक झपकते ही गायब हो जाए. थार के अंतहीन फैलाव में रेत के बवंडरों के बीच यहां आधा दर्जन दुकानों और कुछेक ढाबों के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता था. आज सड़क के दोनों ओर कम से कम 200 कतारबद्ध दुकानें हैं. खरीदारों की मटरगश्ती के बीच हर दिन हाट बाजार की तरह होता है और दर्जन भर निर्माणाधीन बहुमंजिला इमारतें नया आयाम रच रही हैं.

बाड़मेर जिले का पचपदरा तहसील मुख्यालय पारंपरिक रूप से राजस्थान का शाकाहारी इलाका है. मगर अब यहां मछली और मांस की दुकानें खूब फल-फूल रही हैं. ये दूसरे राज्यों से आए कामगारों की जरूरतें पूरी करती हैं. दिन के ज्यादातर समय हाइवे और गांव की लोगों से अटी रहती हैं. रोज कोई 2,000 वाहन एचपीसीएल के तेजी से बन रहे राजस्थान रिफाइनरी लिमिटेड और पेट्रोकेमिकल्स कॉम्प्लेक्स के चक्कर लगाते रहते हैं.

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) और राजस्थान सरकार (76:24 हिस्सेदारी के आधार पर) का यह साझा उद्यम 4,100 एकड़ जमीन पर बन रहा है. इसकी रूपरेखा मार्च 2013 में बनी थी. तब यह मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का ड्रीम प्रोजेक्ट था. मगर अगले साल सरकार बदलते ही इसे लगभग तिलांजलि दे दी गई.

2018 में परियोजना को दोबारा हरी झंडी मिलने से पहले एचपीसीएल ने बीच के चार सालों का इस्तेमाल परियोजना से पहले के कई कामों को अंजाम देने के लिए किया. निर्माण से पहले की जरूरतें पूरी की गईं और जरूरी बुनियादी ढांचा खड़ा किया गया. राजस्थान के अतिरिक्त मुख्य सचिव (पेट्रोलियम, खनन और ऊर्जा) सुबोध अग्रवाल कहते हैं, ''मुख्यमंत्री गहलोत परियोजना पर नजर रख रहे हैं. पिछले साल लॉकडाउन के दौरान आई अड़चनों के बावजूद रिफाइनरी में उत्पादन 2023 में किसी वक्त शुरू हो जाना चाहिए.'' मुमकिन है कि इसकी लागत 65,000 करोड़ रु. के पिछले अनुमान से ऊपर चली जाए.

प्रोजेक्ट मैनेजर बताते हैं कि फिलहाल 14,000 श्रमिक यहां काम में जुटे हैं. ये इस ग्रामीण कस्बे की मौजूदा आबादी से दोगुने हैं. अगले साल इनकी तादाद बढ़कर 40,000 हो जाएगी, जिनमें 2,500 इंजीनियर होंगे. साथ ही राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास और निवेश निगम लिमिटेड (आरआइआइसीओ/रीको) सहायक इकाइयों के लिए 253 वर्ग किमी में भारत का चौथा पेट्रोलियम केमिकल और पेट्रोकेमिकल निवेश (पीसीपीआइ) क्षेत्र तैयार कर रहा है. 90 मीट्रिक टन सालाना क्षमता वाली यह भारत में अपनी तरह की पहली रिफाइनरी होगी जिसके साथ बिल्कुल शुरुआत से ही पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स जुड़ा होगा. इसका अर्थ है कि निवेश क्षेत्र में उत्पादन शुरू होने के पहले दिन से सहायक इकाइयां भी काम करने लगेंगी.

परियोजना अब भी अहम चुनौतियों से दोचार है. मसलन, रिफाइनिंग प्रक्रिया की

अनिवार्य कड़ी कोक बनाने वाली मुख्य कोक ड्रम यूनिट (सीडीयू) 100 मीटर ऊंचे और पाइप के आकार के चार ड्रमों की प्रतीक्षा कर रही है, जो गुजरात के कच्छ में मुंद्रा पोर्ट से चल चुके हैं. ये ड्रम दोनों तरफ कई सारे पहिये और इंजन लगाकर खास तौर पर बनाए गए वाहनों में पैक करके लाए जा रहे हैं. 500 किमी का सफर पूरा करने में इन्हें तीन महीने लगेंगे. रास्ते में लॉजिस्टिक टीम को साइनबोर्ड और दूसरी रुकावटें हटानी (और फिर लगानी) पड़ेंगी, पुलों को मजबूत करना होगा और कुछ जगह सुरक्षित रास्ता देने के लिए नई सड़कें भी बिछानी होंगी. इन विशाल ड्रमों को यथास्थान स्थापित करने के लिए 2,500 टन क्षमता वाली क्रेनों की जरूरत होगी. क्रेनों को यहां लाना भी भारी-भरकम काम है. 1,250 टन क्षमता वाली क्रेन को पुर्जा-पुर्जा 80 ट्रकों में यहां लाया और जोड़ा गया. सबसे ऊंचा ढांचा चिमनियां हैं, जो 140 मीटर ऊंची हैं. इन्हें भी इसी तरह स्थापित किया जाएगा. भारतीय वायु सेना के लड़ाकू विमानों का अड्डा यहां से 100 किमी दूर उत्तरलाई में है. उसने रिफाइनरी में किसी भी ढांचे के लिए ऊंचाई की सीमा 144 मीटर तय की है.

भारत की 10 कंपनियां और उनके साथ कोई 40 उपठेकेदार निर्माण के कामों से जुड़े हैं. निर्माण स्थल पर कार्यरत 850 इंजीनियरों में से ज्यादातर 15 किमी दूर बालोतरा में रह रहे हैं. यह कस्बा पहले पेटीकोट के कपड़े पॉपलीन की प्रोसेसिंग के लिए जाना जाता था. यहां की शुष्क और खारी हवा इनके लिए उपयुक्त है. घरों की मांग के चलते किराये और जमीनों के दाम आसमान छू रहे हैं. पचपदरा और बालोतरा में हजारों नए मकान भी बन रहे हैं. स्थानीय पत्रकार नीरज सिसोदिया, जिन्होंने रियल एस्टेट का काम भी शुरू कर दिया है, कहते हैं, ''जमीन के दाम पहले बीघे में बताए जाते थे, अब वर्ग फुट में बताए जाते हैं.'' बालोतरा के रियल एस्टेट डेवलपर भारत के. आजाद कहते हैं कि कुछ समय पहले यह सब कल्पना से परे था कि बाहर के लोग आकर ऐसी जगह पैसा लगाएंगे जहां ''हर गर्मियों में डेजर्ट कूलर में एक किलो नमक जमा हो जाता है''. वे बालोतरा में 100 विला बना रहे हैं और उनका मंसूबा उन्हें 27-27 लाख रुपए में बेचने का है. बीते 15 सालों के दौरान वैसे तो पूरे जिले में लेकिन खास तौर पर बाड़मेर में निर्माण, कैटरिंग और लॉजिस्टिक्स के कारोबारों में जबरदस्त उछाल आया है. बाड़मेर के कुछ हिस्सों में कई परिवारों के हाथ खजाना भी लग गया. 2007 से 2012 के बीच केयर्न तेल खुदाई परियोजना के लिए और बाद में ताप बिजली परियोजना और लिग्नाइट की खुदाई के लिए भी उनके बारानी खेतों का अधिग्रहण किया गया. इसका उन्हें तगड़ा नकद मुआवजा मिला. गहलोत कहते हैं कि कई लाभार्थियों ने उस वक्त अच्छी तरह निवेश नहीं किया और इसीलिए वे रेगिस्तान में बसे बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर और जोधपुर जिलों के लिए टिकाऊ विकास मॉडल चाहते थे. वे कहते हैं, ''मैं रेगिस्तान का हूं और इस क्षेत्र की भलाई के लिए स्थायी कायापलट चाहता था. यहां के लोगों को बेहतर आमदनी का हक है. परियोजना बाकी राज्य की भी मदद करेगी.''

बाड़मेर अब ऐसा जिला बन गया है जहां हर अफसर तैनाती चाहता है. विशाल परियोजनाओं के लिए भी यह ज्यादा से ज्यादा प्रशिक्षित लोग भी दे रहा है. मसलन, तन सिंह कंस्ट्रक्शन (सीएससी) के चौहान भाइयों 33 वर्षीय जोगेंद्र सिंह और 30 वर्षीय राजेंद्र सिंह को ही लीजिए. उन्होंने सीडीयू (कंट्रोल्ड डिस्प्ले यूनिट) की 10 फुट मोटी और 30 मीटर ऊंची छत डालने की चुनौती स्वीकार की. इसके लिए उन्हें कोई 600 मजदूर, 450 टन बर्फ और 900 टन कंक्रीट 350 ट्रांसिट मिक्सरों में निर्माण स्थल पर ले जाने पड़े. 13 अगस्त को उन्होंने यह काम 30 घंटे की समय सीमा से 13 घंटे पहले कर दिखाया. जोगेंद्र कहते हैं, ''75वें स्वतंत्रता दिवस का जश्न मनाने का यह हमारा सबसे अच्छा तरीका था.''

स्थानीय लोगों को संभालने में एचआरआरएल के अफसरों को कई चुनौतियां पेश आती हैं. यहां काम कर रहे लोगों में एक वक्त 70 फीसद स्थानीय कामगार थे. वे हेलमेट और सुरक्षा जूते

बड़ा है यह कदम

एचआरआरएल परियोजना:

- पुष्कर झील की क्षमता से आठ गुना अधिक 55 लाख घन मी. ताजा पानी जमा करने के लिए जलाशयों का निर्माण, जिसमें 11 लाख घन मी. कंक्रीट और 2,00,000 मीट्रिक टन स्टील लगेगा
- 28,000 किमी तार बिछने हैं
- 800 किमी की पाइपलाइन बिछ रही है, जिसमें से 222 किमी इंदिरा गांधी नहर से पानी लाने के लिए है. बाकी कच्चे और रिफाइंड तेल के लिए

घरेलू कच्चा तेल तो बस नाम का

लोकप्रिय धारणा के उलट रिफाइनरी में शोधित केवल 5 फीसद (2.5 एमएमटी) तेल बाड़मेर और जालौर में उत्खनन से निकला होगा. बाकी अरब देशों से आयातित कच्चा तेल होगा

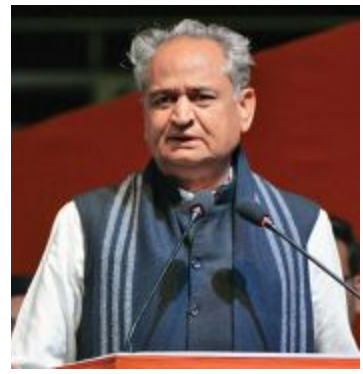

''मैं रेगिस्तानी क्षेत्र से ही हूं और मैं चाहता था कि बेहतरी के लिए इलाके का स्थायी कायाकल्प हो. यहां के लोग बेहतर आमदनी के हकदार है. परियोजना राज्य के शेष भाग के लिए भी लाभकारी रहेगी''

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

कहां गए कुरजां
पचपदरा क्षेत्र में आने वाले हजारों प्रवासी पक्षियों ने अब राह बदल ली है

पुरुषोत्तम दिवाकर

सिकुड़ती क्यारी नमक की

पचपदरा नमक झील के बेसिन में कभी 600 नमक की क्यारियां (साल्ट पैन) बिखरी हुई थीं; इनमें से 200 को अब रिफाइनरी के लिए अधिग्रहीत किया गया है. खारवाल राजपूत समुदाय के लोग परंपरागत रूप से अपनी जमीन के अधिग्रहण से पहले नमक क्षेत्र में काम करते थे. उसके 198 परिवार अब भी मुआवजे की प्रतीक्षा कर रहे हैं. यह स्थान प्रवासी पक्षियों के लिए एक आश्रय स्थल हुआ करता था, लेकिन निर्माण के चलते उनमें से अधिकांश डर गए. मध्य यूरेशिया से हजारों कुरजां (डेमोसाइल क्रेन) और अन्य प्रवासी और स्वदेशी पक्षी यहां हर साल आते थे, क्योंकि यह थार रेगिस्तान के उन कुछ स्थानों में से एक था, जहां जल के स्रोत थे. स्थानीय लोग उन्हें परेशान नहीं करते थे और अवैध शिकार को रोकने में बढ़-चढ़कर भूमिका निभाते थे. लेकिन पिछले कुछ वर्षों में पक्षियों की आमद में कमी आई है.

2018 में जब निर्माण कार्य शुरू होने के समारोह पर सिर्फ एक बाज वहां दिखाई दिया था. ऐसा प्रतीत होता है कि प्रवासी पक्षी मरुस्थली इलाके के दूसरे जल निकायों की ओर जा रहे हैं. पचपदरा साल्ट लेक से करीब 60 किलोमीटर दूर कोरन्ना गांव में पिछले चार साल में प्रवासी पक्षियों की तादाद खासी बढ़ गई है.

पहनने सरीखे सुरक्षा नियम मानने से इनकार कर देते. मगर वक्त बदला. खास किस्म के हुनर की जरूरत के चलते अब राज्य से बाहर के कामगार यहां अधिक हैं. सुरक्षा उपकरण बेचने वाली दुकानें भी इफरात में खुल गई हैं. मालानी टूल्स के सुभाष बिश्नोई बीकानेर में सेल्समैन थे. 2007 में यहां तेल की खुदाई शुरू हुई, तो उनके नियोक्ता ने सुरक्षा उपकरणों की दुकान (पार्टनरशिप में) खोलने के लिए उन्हें बाड़मेर भेज दिया. अब उनकी तीन दुकानें हैं और पिछले साल कोविड लॉकडाउन के बावजूद टर्नओवर 25 करोड़ रुपए था. कई स्थानीय लोग ढुलाई के धंधे में आ गए और कंपनियों की मांग पूरी कर रहे हैं.

बाड़मेर के कलेक्टर लोक बंधु कहते हैं, ''यह शुरुआत है, असल उछाल तो सहायक इकाइयों के आने पर आएगा.'' रीको के एमडी आशुतोष पेणडेकर कहते हैं कि रिफाइनरी कॉम्प्लेक्स से 5 किमी दूर बोरावास कलावां में पीसीपीआइ के लिए जमीन नीलामी के पहले चरण के बाद उन्होंने पेट्रो बाइप्रोडक्ट्स के 70 बड़े उत्पादकों का दरवाजा खटखटाया है. उधर पचपदरा का स्थानीय प्रशासन इस विकास के साथ अब भी कदमताल नहीं कर पा रहा. बिजली आपूर्ति अनियमित और पेयजल नदारद है.

सीवेज नेटवर्क भी बिछाया नहीं गया है. स्थानीय ढाबा मालिक ओम सिंह राजपुरोहित कहते हैं कि उन्होंने 2013 में 30 कमरों का बजट होटल बनाने के लिए एक करोड़ रुपए का कर्ज लिया था, पर पांच साल से लगातार घाटा हो रहा है. होटल से तो अब कमाई हो रही है, पर दिन के आठ घंटे उन्हें जेनसेट चलाने पड़ते हैं और बालोतरा से पानी लाने के लिए रोज 3,500 रुपए चुकाने पड़ते हैं. निर्माण स्थल पर सैकड़ों टैंकरों से पानी की आपूर्ति की जा रही है और तब तक की जाती रहेगी जब तक 220 किमी दूर इंदिरा गांधी नहर से पानी लाने के लिए पाइपलाइन नहीं बिछ जाती. स्थानीय लोगों को उम्मीद है कि पाइपलाइन से उनकी पानी की समस्या हल हो जाएगी.

पैसे और खुशहाली की बाढ़ कुछ बुराइयां भी लेकर आई. कार्यस्थलों पर काम करने वाले सभी पुरुष हैं. लिहाजा वेश्यागमन, शराब की बिक्री, लड़ाई-झगड़े और स्थानीय बनाम बाहरी टकराव बढ़ गए. बालोतरा के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीतेश आर्य कहते हैं, ''भुगतान और ठेकों को लेकर अपहरण और हमले हुए. स्थानीय लोग सड़क हादसों के लिए भारी मुआवजा मांगते हैं. इससे कानून-व्यवस्था की समस्याएं बढ़ रही हैं.'' स्थानीय राजनीतिज्ञ अपने लिए या अपने आदमियों के लिए ठेकों की मांग करते हैं. दबाव में आकर राज्य सरकार ने भी कॉम्प्लेक्स के आसपास निर्माण प्रतिबंधित क्षेत्र 2 किमी से घटाकर 300 मीटर कर दिया. पुलिस और रिफाइनरी के अधिकारियों का सबसे ताजा सिरदर्द तो यह है कि कई युवक शादी के लिए झूठा दावा यह कहकर कर रहे हैं कि उन्हें रिफाइनरी में काम मिल गया है.■

उत्कृष्टता का कारोबार

जब कुछ भी स्थायी नहीं है, बी-स्कूलों में भी शिखर पर उलटफेर स्वाभाविक है. लेकिन यह उन्हें छात्रों को महामारी के बाद की दुनिया के लिए तैयार करने से रोक नहीं रहा

कौशिक डेका

रंधिर गोस्वामी

म्हारा खेल सबसे कमजोर तब होता है जब तुम आगे होते हो.'' यह बात ऑस्ट्रेलियाई टेनिस हस्ती रॉड लेवर ने कही थी. यह इंडिया टुडे ग्रुप की सालाना बी-स्कूल रैंकिंग के 2021 संस्करण में देखे गए सबसे बड़े उलटफेर को भी बयान करती है. प्रमुख मार्केट रिसर्च एजेंसी मार्केटिंग ऐंड डेवलपमेंट रिसर्च एसोसिएट (एमडीआरए) की ओर से तैयार इस साल की रैंकिंग में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कलकत्ता (आइआइएम-सी) ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद (आइआइएम-ए) को शीर्ष पायदान से बेदखल कर दिया. 2016 में गुणात्मक सुधार के लिए अध्ययन की पद्धति में बदलाव किए जाने के बाद ऐसा पहली बार हुआ है.

अपनी अव्वल स्थिति बनाए रखने में आइआइएम-ए ने जो 'कमजोरी' दिखाई, वह देश के प्रमुख प्रबंधन संस्थानों के बीच गहन प्रतिस्पर्धा की तरफ ही इशारा करती है. आइआइएम-ए ने पांच में से तीन—पढ़ने-सीखने का अनुभव, रहने का अनुभव और चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा—मानदंडों पर शीर्ष स्थान हासिल किया, तो आइआइएम-सी बाकी दो में नंबर एक थी, जो हैं प्लेसमेंट परफॉर्मेंस और भविष्य का नजरिया. इसी भविष्य का नजरिया मानदंड में मिले ऊंचे अंकों ने अपने सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी को कुल अंकों में मात्र 0.1 अंक से बेदखल करने और पहली बार दूसरी पायदान से छलांग लगाकर शीर्ष पर आने में आइआइएम-सी की मदद की.

यह बारीक फर्क इस हकीकत को प्रमुखता से बताता है कि आत्मसंतोष या स्थायित्व की कोई गुंजाइश नहीं है और यह बात भारतीय बिजनेस स्कूलों की इस सबसे भरोसेमंद रैंकिंग में अक्सर सामने आई है. शीर्ष

थोड़ा मनोरंजन
आइआइएम-ए कैंपस में गीत-संगीत का आयोजन

टॉप 10 बिजनेस स्कूल

रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट का नाम
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कलकत्ता (आइआइएम-सी), कोलकाता
2	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद (आइआइएम-ए), अहमदाबाद
3	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट बैंगलोर (आइआइएम-बी), बेंगलूरु
4	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट लखनऊ (आइआइएम-एल), लखनऊ
5	एस.पी. जैन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च (एसपीजेआइएमआर), मुंबई
6	एक्सएलआरआइ - जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, जमशेदपुर
7	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट इंदौर (आइआइएम-आइ), इंदौर
8	मैनेजमेंट डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (एमडीआइ), गुरुग्राम
9	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एफएमएस), यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, नई दिल्ली
10	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड (आइआइएफटी), नई दिल्ली

साल-दर-साल प्रदर्शन

2016 के बाद पहली बार आइआइएम-ए ने शीर्ष स्थान गंवाया

इंस्टीट्यूट	रैंक (2021)	रैंक (2020)	रैंक (2019)	रैंक (2018)	रैंक (2017)	रैंक (2016)
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, कलकता, कोलकाता	1	2	2	2	2	2
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद, अहमदाबाद	2	1	1	1	1	1
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट बैंगलोर, बेंगलूरु	3	3	भान*	3	भान	3
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लखनऊ, लखनऊ	4	भान	भान	भान	भान	भान
एस. पी. जैन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च, मुंबई	5	4	4	6	4	5
एक्सएलआरआइ - जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, जमशेदपुर	6	5	3	4	3	4
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, इंदौर, इंदौर	7	6	5	7	7	9
मैनेजमेंट डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम	8	7	6	5	5	6
फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, नई दिल्ली	9	9	8	9	6	7
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड, नई दिल्ली	10	11	10	10	9	11

*भान: भाग नहीं लिया

संस्थानों में एक नया संस्थान दाखिल हुआ है और वह है इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट लखनऊ (आइआइएम-एल), जिसने रैंकिंग में 2016 के बाद पहली बार हिस्सा लिया. अलबत्ता शीर्ष 10 में सरकारी संस्थाओं के दबदबा सरीखे कुछ निश्चित रुझान बदले नहीं हैं. रैंकिंग में शीर्ष 10 में सात सरकारी बिजनेस स्कूल हैं.

औसत वेतन के लिहाज से भी सरकारी स्कूलों ने निजी स्कूलों से बेहतर प्रदर्शन किया. शीर्ष 100 में आए सरकारी प्रबंधन कॉलेजों के छात्रों को मिले औसत घरेलू सालाना वेतन में बीते पांच साल में 40 फीसद से ज्यादा बढ़ोतरी हुई है, जबकि उनके मुकाबले शीर्ष 100 में आए निजी बिजनेस स्कूलों के छात्रों के लिए यह बढ़ोतरी 28 फीसद ही है. निवेश पर प्रतिफल (आरओआइ) इस फर्फ को और तीखा कर देता है. आरओआइ संस्थान के कैंपस प्लेसमेंट

क्षेत्रवार टॉप 5 बी-स्कूल (उत्तर)

क्षेत्रीय रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट का नाम
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट लखनऊ (आइआइएम-एल), लखनऊ
2	मैनेजमेंट डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (एमडीआइ), गुरुग्राम
3	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एफएमएस), यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, नई दिल्ली
4	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड (आइआइएफटी), नई दिल्ली
5	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (आइएमटी), गाजियाबाद

क्षेत्रवार टॉप 5 बी-स्कूल (पूर्व)

क्षेत्रीय रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट का नाम
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कलकत्ता (आइआइएम-सी), कोलकाता
2	एक्सएलआरआइ - जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, जमशेदपुर
3	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट शिलांग, शिलांग
4	जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (एक्सआइएमबी), जेवियर यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर
5	विनोद गुप्ता स्कूल ऑफ मैनेजमेंट (वीजीएसओएम), आइआइटी खड़गपुर, खड़गपुर

क्षेत्रवार टॉप 5 बी-स्कूल (पश्चिम)

क्षेत्रीय रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट का नाम
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद (आइआइएम-ए), अहमदाबाद
2	एस.पी. जैन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च (एसपीजेआइएमआर), मुंबई
3	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट इंदौर (आइआइएम-आइ), इंदौर
4	एसवीकेएम'एस एनएमआइएमएस, स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, मुंबई
5	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (एसआइबीएम), पुणे

शेखर घोष

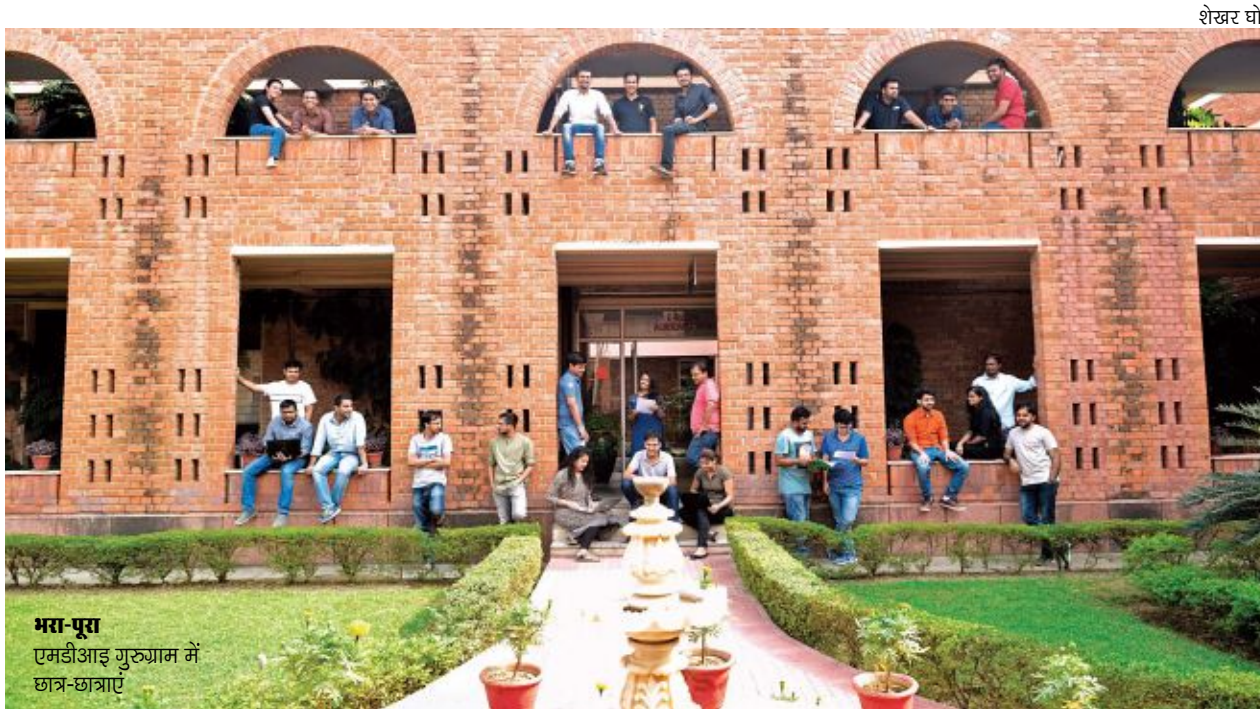

भरा-पूरा
एमडीआइ गुरुग्राम में छात्र-छात्राएं

से अर्जित औसत वेतन में वसूल की गई फीस का भाग देकर निकाला जाता है. निजी संस्थानों के 0.80 के मुकाबले सरकारी संस्थानों का आरओआइ 1.42 है.

इसके अलावा भौगोलिक असमानताएं भी हैं. आइआइएम-सी की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली एक बात यह है कि पूर्वी क्षेत्र के संस्थान लगातार सबसे ज्यादा औसत वेतन दर्ज करते रहे हैं, इसके बावजूद कि इस क्षेत्र में बाकी तीनों के मुकाबले बहुत ही कम बिजनेस स्कूल हैं. वैसे पूर्वी क्षेत्र के संस्थान ज्यादा कोर्स फीस वसूलते हैं, पर उनका आरओआइ भी बाकी देश के मुकाबले कहीं ज्यादा है. इंडिया टुडे-एमडीआरए की बिजनेस स्कूलों की रैंकिंग में ऐसी और भी कई गहरी बातें मिलेंगी, खासकर जब वे संस्थान के इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर पढ़ाई की गुणवत्ता और पैसा वसूल पढ़ाई तक, सबकुछ का जायजा लेते हैं.

शहरवार टॉप 3 बी-स्कूल (मुंबई)

मेट्रो रैंक	इंस्टीट्यूट का नाम
1	एस.पी. जैन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च (एसपीजेआइएमआर)
2	एसवीकेएम'एस एनएमआइएमएस, स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट
3	जमनालाल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (जेबीआइएमएस)

क्षेत्रवार टॉप 5 बी-स्कूल (दक्षिण)

क्षेत्रवार रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट का नाम
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट बैंगलोर (आइआइएम-बी), बेंगलूरु
2	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु
3	ग्रेट लेक्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, चेन्नै
4	टी.ए. पै मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (टीएपीएमआइ), मणिपाल
5	आइसीएफएआइ बिजनेस स्कूल, हैदराबाद

शहरवार टॉप 3 बी-स्कूल (कोलकाता)

मेट्रो रैंक	इंस्टीट्यूट का नाम
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कलकत्ता (आइआइएम-सी)
2	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल वेलफेयर ऐंड बिजनेस मैनेजमेंट (आइआइएसडब्ल्यूबीएम)
3	स्कूल ऑफ बिजनेस ऐंड इकोनॉमिक्स, एडमास (एडीएएमएएस) यूनिवर्सिटी

सर्वे की पद्धति

इंडिया टुडे-एमडीआरए बेस्ट बी-स्कूल रैंकिंग 2021

देश के बिजनेस स्कूलों का 2021 इंडिया टुडे ग्रुप सर्वे दिल्ली की प्रतिष्ठित मार्केट रिसर्च फर्म मार्केटिंग ऐंड डेवलपमेंट रिसर्च एसोसिएट्स (एमडीआरए) ने किया. फुल-टाइम क्लासरूम मैनेजमेंट प्रोग्राम (पीजीडीएम/एमबीए) की पेशकश करने वाले, कम से कम पांच साल पहले स्थापित और न्यूनतम तीन ग्रेजुएट बैच निकाल चुके बी-स्कूलों की विस्तृत सूची अपडेट की गई. हितधारकों को ज्यादा वास्तविक, अद्यतन और सटीक जानकारी देने के उद्देश्य से संस्थाओं से 127 विशेषताओं के बारे में नवीनतम प्रासंगिक सूचना—इस वर्ष का डेटा—पाने के लिए वस्तुपरक प्रश्नावली को चुस्त-दुरुस्त किया गया. सर्वे में हिस्सा लेने के लिए पात्रता की कसौटी पर खरे उतरने वाले देश भर के 2,500 से अधिक बी-स्कूलों से संपर्क किया गया. लॉकडाउन में ज्यादातर बी-स्कूलों के बंद होने के बावजूद 307 संस्थानों ने समय सीमा के भीतर अपना वस्तुपरक डेटा जमा किया. उनमें से पात्रता की कसौटी पर खरे नहीं उतरने वाले दो बी-स्कूलों को अंतिम रैंकिंग सारणी से हटा दिया गया. वस्तुपरक डेटा मिलने के बाद चार प्रक्रियाएं पूरी की गईं. ये थीं डेटा की तर्कसंगत जांच-पड़ताल, पुष्टि, पृष्ठभूमि की जांच और ऑडिट. पहले चरण में, बी-स्कूलों से प्राप्त विवरणों के हर पहलू की उपलब्ध जानकारियों और एमडीआरए के पास मौजूद डेटाबेस के जरिए सावधानी से जांच की गई. दूसरे चरण में, एमडीआरए के शोधकर्ताओं ने सर्वे में भाग ले रहे बी-स्कूलों का सत्यापन और ऑडिट किया. महामारी की वजह से भौतिक सत्यापन करना असंभव था. ऐसे में रिसर्च टीमें डेटा के सत्यापन के लिए वर्चुअली 52 बी-स्कूल गईं और इस डेटा को मूल दस्तावेजों और इन्फ्रास्ट्रक्चर से फिर मिलाया गया. पिछले आठ साल में टीम ने भाग लेने वाली संस्थाओं से दी गई जानकारी के सत्यापन के लिए 550 कैंपसों का दौरा किया है. भौतिक ऑडिट के दौरान मिलीं कुछ अनियमितताओं को दुरुस्त किया गया. फिर मूल्यांकन के पांच मानदंडों के अंकों को जोड़कर प्रत्येक संस्था के कुल वस्तुपरक अंक निकाले गए. मानदंडों के भारांश, जो इस साल की रैंकिंग में भी समान ही थे, इस प्रकार हैं—

मानदंड और भारांश

चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा - **150**

पढ़ने-सीखने का अनुभव - **250**

रहने का अनुभव - **150**

भविष्य का नजरिया - **200**

प्लेसमेंट परफॉर्मेंस - **250**

कुल स्कोर - **1,000**

कई स्रोतों से विभिन्न स्तरों पर पुष्टि के बाद अंतिम रैंक बनी. इन स्रोतों में बीते वर्षों का डेटा, वेबसाइटों पर मौजूद सूचना, सरकारी डेटा, अंतरराष्ट्रीय मान्यता देने वाली संस्थानों से सूचना व भौतिक ऑडिट शामिल हैं. एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अभिषेक अग्रवाल के नेतृत्व में एमडीआरए टीम में प्रोजेक्ट डायरेक्टर अवनीश झा, असिस्टेंट रिसर्च मैनेजर राजन चौहान, रिसर्च एग्जीक्यूटिव सोमेंद्र शाही, असिस्टेंट रिसर्च एग्जीक्यूटिव दक्षिता द्रोलिया व एग्जीक्यूटिव ईडीपी मानवीर सिंह थे

इतने वर्षों के दौरान छात्रों के लिए ज्यादा मूल्यवान होने की कोशिश में सर्वे का दायरा भी बढ़ा है. यह सबसे व्यापक अध्ययन भी है, जिसमें 305 बिजनेस स्कूलों की रैंकिंग की गई है, जो पिछले साल के 293 स्कूलों की तादाद से ज्यादा हैं. ज्यादा अहम बात यह कि यह महामारी की मार से त्रस्त दुनिया में प्रबंधन की शिक्षा में आए बदलावों की व्यापक झांकी पेश करता है. पिछले साल से जारी एक चिंताजनक रुझान सरकारी और निजी दोनों प्रबंधन संस्थानों में आंत्रप्रेन्यौर बनना चुनने वाले छात्रों के प्रतिशत में अचानक आई गिरावट है.

कोविड-19 ने विभिन्न दूसरी शिक्षा संस्थाओं की तरह भारत के बिजनेस स्कूलों में भी शिक्षा चक्र और प्रशिक्षण में जबरदस्त उथल-पुथल मचाई है. लेकिन साथ ही, इस संकट ने बुनियादी ढांचे, शिक्षाशास्त्र और शोध के लिहाज से नवाचार का मौका भी दिया है. शीर्ष कंपनियां उभरती विश्व व्यवस्था के हिसाब से ढलने के लिए अपने बिजनेस मॉडल नए सिरे से गढ़ रही हैं. उन्हें ऐसे मानवबल की तलाश है जो इन मॉडल को चला सकें. ज्यादातर बी-स्कूल इस जरूरत को पूरा करने के लिए आगे आ रहे हैं. महामारी के बाद टेक्नोलॉजी से जुड़े नवाचारों के जरिए कक्षाओं में ढांचागत बदलाव लाने के अलावा बिजनेस स्कूल नए और तेजी से विकसित हो रहे कारोबारी माहौल के लिए नया पाठ्यक्रम ला रहे हैं.

कई उद्योगों ने खुद को कारोबार करने के डिजिटल ढांचे में ढाल लिया है. ऐसे में आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस (एआइ) और मशीन लर्निंग सरीखी डिजिटल टेक्नोलॉजी की अहमियत कई गुना बढ़ गई है. प्रबंधन संस्थानों ने या तो इन पर कोर्स मॉड्यूल शुरू किए हैं या इन्हें पाठ्यक्रम में मिला लिया है. भविष्य में इन संस्थानों का गुणात्मक मूल्यांकन बहुत कुछ इस पर निर्भर करेगा कि वे महामारी के बाद की दुनिया में सिखाने-पढ़ाने के लिए कितनी तेजी से कमर कसते हैं. ■

शहरवार टॉप 3 बी-स्कूल (दिल्ली-एनसीआर)

मेट्रो रैंक	इंस्टीट्यूट का नाम
1	मैनेजमेंट डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (एमडीआइ), गुरुग्राम
2	फैकलटी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एफएमएस), यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, नई दिल्ली
3	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड (आइआइएफटी), नई दिल्ली

शहरवार टॉप 3 बी-स्कूल (चेन्नै)

मेट्रो रैंक	इंस्टीट्यूट का नाम
1	ग्रेट लेक्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट
2	लोयला इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (एलआइबीए)
3	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी

शहरवार टॉप 3 बी-स्कूल (बेंगलूरू)

मेट्रो रैंक	इंस्टीट्यूट का नाम
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट बंगलोर (आइआइएम-बी)
2	जगदीश सेठ स्कूल ऑफ मैनेजमेंट (जेएजीएसओएम)
3	एसवीकेएम'एस नरसी मोंजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एनएमआइएमएस)

शहरवार टॉप 3 बी-स्कूल (पुणे)

मेट्रो रैंक	इंस्टीट्यूट का नाम
1	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (एसआइएबीएम)
2	सिम्बायोसिस सेंटर फॉर मैनेजमेंट ऐंड ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट (एससीएमएचआरडी)
3	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस (एसआइआइबी)

शहरवार टॉप 3 बी-स्कूल (हैदराबाद)

मेट्रो रैंक	इंस्टीट्यूट का नाम
1	आइसीएफएआइ बिजनेस स्कूल
2	नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन मैनेजमेंट (मैनेज)
3	इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एंटरप्राइज (आइपीई)

सरकारी बनाम प्राइवेट इंस्टीट्यूट का अनुपात

टॉप बी-स्कूल	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
टॉप 1-25	44:56	48:52	52:48	56:44	52:48	56:44	52:48
टॉप 26-50	28:72	24:76	24:76	36:64	32:68	32:68	28:72
टॉप 51-75	20:80	20:80	20:80	16:84	12:88	4:96	20:80
टॉप 76-100	8:92	8:92	12:88	20:80	8:92	12:88	12:88

कितना मिलता है वेतन?

कैंपस प्लेसमेंट के जरिए छात्रों को मिलने वाला औसत सालाना घरेलू वेतन

बी-स्कूल की श्रेणी	2015	2016	2017	2018 (लाख रुपए में)	2019	2020	2021
टॉप 1-25	13.12	15.42	15.78	16.98	17.80	19.61	19.63
टॉप 26-50	7.75	7.87	8.46	9.24	9.10	9.82	9.93
टॉप 51-75	5.77	6.27	5.73	6.82	6.71	7.34	7.31
टॉप 76-100	5.14	5.15	5.49	5.55	5.92	5.80	6.19

महामारी के बाद टेक्नोलॉजी से जुड़े नवाचारों के जरिए कक्षाओं में ढांचागत बदलाव लाने के अलावा बिजनेस स्कूल नए और तेजी से विकसित हो रहे कारोबारी माहौल के लिए नया पाठ्यक्रम ला रहे हैं

कैंपस प्लेसमेंट के जरिए विद्यार्थियों को देश में मिला औसत सालाना वेतन

सरकारी बनाम प्राइवेट (टॉप-100 बी-स्कूलों में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
	(लाख रुपए में)						
सरकारी	10.7	12.3	12.2	12.5	13.7	15.5	15.3
प्राइवेट	7	7.5	7.6	8.3	8.5	8.9	9.0

क्षेत्रवार (टॉप-100 बी-स्कूलों में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
	(लखा रुपए में)						
पूर्व	9.8	9.7	10.2	11.2	13.7	12.9	14.2
उत्तर	7.2	7.9	8.4	9	9.1	9.8	10.6
दक्षिण	6.5	7.6	7.3	8.4	7.8	9.2	8.7
पश्चिम	9.3	10.4	10.1	11	11.8	11.9	11.5

शहरवार (टॉप-100 बी-स्कूलों में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
	(लाख रुपए में)						
दिल्ली एनसीआर	8.2	9.9	8.8	9.7	10.5	10.7	10.9
मुंबई	13.5	10.3	14.2	12.5	13.8	14.2	14.1
बेंगलूरु	6.7	8.4	6.2	9.8	7.0	9.8	10.0

बी-स्कूलों में इंजीनियरिंग और गैर-इंजीनियरिंग छात्र-छात्राओं का अनुपात

बी-स्कूलों की श्रेणी	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
टॉप 1-25	84:16	85:15	80:20	78:22	79:21	71:29	68:32
टॉप 26-50	52:48	50:50	47:53	48:52	44:56	50:50	47:53
टॉप 51-75	39:61	36:64	27:73	37:63	35:65	33:67	31:69
टॉप 76-100	27:73	25:75	29:71	22:78	23:77	18:82	19:81

एजुकेशन लोन के लिए बैंकों के साथ गठजोड़ करने वाले संस्थानों का प्रतिशत

बी-स्कूलों	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
टॉप 1-25	84	72	76	72	68	68	64
टॉप 26-50	64	68	64	64	72	60	64
टॉप 51-75	76	84	76	80	80	84	68
टॉप 76-100	80	84	84	84	72	72	72

कारोबारी कौशल की कीमत

बी-स्कूलों की ओर से पूरे कोर्स के लिए लिया जाने वाला औसत फीस (रुपए में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	औसत कोर्स फीस (ट्यूशन + अन्य फीस)
टॉप 1-25	16,88,737
टॉप 26-50	11,06,507
टॉप 51-75	8,51,992
टॉप 76-100	7,93,092

सरकारी बनाम प्राइवेट (टॉप-100 बी-स्कूलों में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	औसत कोर्स फीस (ट्यूशन + अन्य फीस)
सरकारी	10,74,878
प्राइवेट	11,23,772

क्षेत्रवार (टॉप-100 बी-स्कूलों में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	औसत कोर्स फीस (ट्यूशन + अन्य फीस)
पूर्व	13,87,702
उत्तर	10,57,188
दक्षिण	10,27,740
पश्चिम	11,43,122

शहरवार (टॉप-100 बी-स्कूलों में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	औसत कोर्स फीस (ट्यूशन + अन्य फीस)
दिल्ली एनसीआर	10,70,322
मुंबई	11,22,729
बेंगलूरु	11,74,625

खर्च का लाभ कहां सबसे अधिक?

कोर्स फीस के तौर पर खर्च पैसे के प्रतिफल में विभिन्न बी-स्कूलों का प्रदर्शन कैसा है

बी-स्कूलों की श्रेणी	औसत आरओआइ
टॉप 1-25	1.16
टॉप 26-50	0.90
टॉप 51-75	0.86
टॉप 76-100	0.78

नोटः आरओआइ (निवेश का प्रतिफल) को औसत घरेलू सालाना वेतन को पूरे कोर्स की फीस से भाग करके निकाला गया है

सरकारी बनाम प्राइवेट (टॉप-100 बी-स्कूलों में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	औसत आरओआइ
सरकारी	1.42
प्राइवेट	0.80

शहरवार (टॉप-100 बी-स्कूलों में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	औसत आरओआइ
दिल्ली एनसीआर	1.02
मुंबई	1.26
बेंगलूरू	0.85

इस सर्वे का दायरा बढ़ाया गया है. इसमें 305 बिजनेस स्कूलों की रैंकिंग की गई है, जबकि पिछले साल महज 293 स्कूल थे

बैच की औसत क्षमता

मौजूदा एक बैच में दाखिला लेने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या

बी-स्कूलों की श्रेणी	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
टॉप 1-25	283	292	282	306	300	340	369
टॉप 26-50	160	205	261	232	246	188	200
टॉप 51-75	157	150	180	208	189	225	194
टॉप 76-100	151	180	146	157	195	151	178

सरकारी बनाम प्राइवेट (टॉप-100 बी-स्कूलों में)

बी-स्कूलों की श्रेणी	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
सरकारी	159	169	172	183	190	234	214
प्राइवेट	198	219	234	246	248	223	244

बी-स्कूलों की औसत उम्र

बी-स्कूलों की श्रेणी	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
टॉप 1-25	34	36	36	34	37	31	34
टॉप 26-50	28	28	25	26	29	23	22
टॉप 51-75	24	24	27	25	25	21	24
टॉप 76-100	16	17	18	19	19	19	18

आंत्रप्रेन्योरशिप चुनने वाले छात्र-छात्राओं की औसत संख्या

बी-स्कूलों की श्रेणी	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
सरकारी	3.5	10.3	5.1	4.9	5.3	2.2	1.8
प्राइवेट	5.7	6.7	7.7	6.4	6.1	4.9	4.0

पारिवारिक कारोबार चुनने वाले छात्र-छात्राओं की औसत संख्या

बी-स्कूलों की श्रेणी	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021
सरकारी	2.4	3.6	4.3	5.5	3.2	2.3	2.4
प्राइवेट	6.1	6.8	10.4	11.4	11.2	7.3	5.9

ऊंची संगत
आइआइएम कलकत्ता के निदेशक उत्तम कुमार सरकार के साथ वहां के कुछ छात्र

अमीश त्रिपाठी

बेस्ट सेलर लिखने के लिए टायर की चोरी

आइआइएम-सी महज मैनेजमेंट का डिप्लोमा लेने की जगह नहीं बल्कि यह ऐसा ठिकाना है जहां जिंदगी के पाठ पढ़ाए जाते हैं

आखिरकार वह पल आ ही गया. एक ऐसा तथ्य जिसे हम आइआइएम वाले तो हमेशा से जानते थे, लेकिन मीडिया ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया था. इसलिए, मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि इंडिया टुडे ने आखिरकार यह मान लिया है कि इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कलकत्ता (आइआइएम-सी), जहां से मैंने पढ़ाई की, देश का सबसे अच्छा बिजनेस स्कूल है. यह एक पूर्व छात्र का पक्षपातपूर्ण दावा नहीं है. इस महान संस्थान में मैंने जो सीखा और उन नसीहतों ने मेरे सहित हजारों छात्रों के जीवन को जिस प्रकार गढ़ा है, यह दावा मैं उसी के आधार पर कर रहा हूं.

आइआइएम-सी और अन्य प्रबंधन संस्थानों के बीच सबसे बड़ा अंतर यह है कि यहां मात्रात्मक (क्वांटिटेटिव) और संख्यात्मक (नूमेरिकल) पर खास जोर. यह कुछ अन्य शीर्ष बिजनेस स्कूलों के विपरीत है, जो गुणात्मक (क्वालिटेटिव) और प्रस्तुतियों (प्रेजेंटेशन) पर अधिक केंद्रित हैं. इससे पहले कि आप कोई राय बनाएं मैं स्पष्ट कर दूं—मैं यह नहीं कह रहा कि आइआइएम-सी अच्छे प्रेजेंटेशन कौशल पर जोर नहीं देता है या अन्य आइआइएम मात्रात्मक चीजों पर जोर नहीं देते. मेरा आशय प्राथमिक तौर पर जोर दिए जाने से है. एक अच्छा प्रेजेंटर होना महत्वपूर्ण है और एक अच्छा विचारक होना भी उससे कम महत्वपूर्ण नहीं. और डेटा जिस तरह से हमारे दिमाग में स्पष्टता लाता है, कोई और चीज वैसा नहीं कर सकती. जैसा कि कहते हैं ना, भगवान पर हमारी आस्था है लेकिन बाकी सभी चीजों को तभी मानूंगा जब आप मुझे उससे जुड़ा डेटा दिखाएंगे.

एकेडमिक्स, डेटा और संख्याओं पर जोर देने के अलावा आइआइएम-सी की संस्कृति के कई अन्य पहलू थे, जिससे इसके पूर्व छात्रों को संस्थान से बेहतर ढंग से उभरने में मदद मिली. हमारे छात्रावास के वातावरण में खेल, जश्न और पाठ्येतर गतिविधियां भीतर तक समाई थीं. और जब मैं खेल कहता हूं, तो मेरा तात्पर्य केवल फुटबॉल और क्रिकेट से नहीं है; हालांकि वे भी इसमें शामिल थे. दूसरे भी नए खेल थे; मिसाल के तौर पर 'द टायर'. ठहरिए, इसे जरा खोलकर समझाता हूं: एक छात्रावास के प्रवेश द्वार पर एक बड़ा-सा ट्रक टायर रखा गया था और दूसरे छात्रावासों के छात्रों को इसे चुराने का काम सौंपा गया था. जिस छात्रावास के द्वार पर टायर रखा गया था उसमें रहने वाले छात्रों को इसकी रक्षा के लिए कुछ भी करने की आजादी

> कैंपस प्लेसमेंट में नौकरी पाने वाला आइआइएम-सी का छात्र सेलिब्रेट नहीं करता जब तक सभी साथियों को नौकरी नहीं मिल जाती. यानी मैं सभी का और सब मेरे

सुबीर हल्दर

थी. इसकी हिफाजत के लिए जो प्रयास किए जाते थे उनमें से सबसे साधारण स्तर का काम था– पानी में डुबा देना. अन्य रणनीतियां मैं साझा नहीं करना चाहूंगा. हमलावरों और रक्षकों, दोनों के लिए इस खेल को खेलने के लिए बहुत सारी योजनाएं, रणनीति और एक निश्चित मात्रा में जोखिम उठाना पड़ा. उस समय, हम सब कुछ सिर्फ मजे के लिए कर रहे थे. लेकिन बाद में हम सभी ने महसूस किया कि इस अभ्यास ने हमें प्रबंधन के महान सबक दिए हैं. हमने टीमवर्क, नेतृत्व, जोखिम उठाना और तुरंत प्रतिक्रिया करना सीखा (क्योंकि कोई भी योजना जिसे प्रतियोगी ने परख लिया उसे तुरंत बदलने की जरूरत होती है!).

आइआइएम–सी ने हमें सौहार्द भी सिखाया. एक बी–स्कूल के छात्र के लिए एक अच्छी नौकरी हासिल करना बेहद महत्वपूर्ण है और ईमानदारी से कहूं, तो हम एमबीए करते ही इसीलिए हैं. तो अगर आपको एक अच्छी नौकरी मिल गई, जाहिर है कि उसका जश्न मनेगा. पर आइआइएम–सी में ऐसा नहीं है. कोई भी छात्र तब तक जश्न नहीं मनाएगा जब तक सभी छात्रों को प्लेसमेंट नहीं मिल जाता. यह कोई नियम नहीं था; यह एक परंपरा थी. और

टॉप 10 सरकारी बिजनेस स्कूल

रैंक (2021)	संस्थान का नाम
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कलकत्ता (आइआइएम-सी), कोलकाता
2	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद (आइआइएम-ए), अहमदाबाद
3	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट बंगलूर (आइआइएम-बी), बेंगलूरु
4	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट लखनऊ आइआइएम-एल), लखनऊ
5	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट इंदौर (आइआइएम-आइ), इंदौर
6	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एफएमएस), यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, नई दिल्ली
7	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड (आइआइएफटी), नई दिल्ली
8	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट शिलांग, शिलांग
9	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, आइआइटी दिल्ली, नई दिल्ली
10	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु

10 पैसा वसूल सरकारी बिजनेस स्कूल

रैंक (2021)	संस्थान का नाम	आरओआइ
1	डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, नई दिल्ली	33.3
2	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिचर्स, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़	14.09
3	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एफएमएस) यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, नई दिल्ली	13.54
4	एम.एस. पटेल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, वडोदरा	13
5	सिडेनहैम इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, रिसर्च ऐंड आंत्रेप्रन्योशिप एजुकेशन(सिमश्री), मुंबई	8.97
6	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मोतीलाल नेहरु नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमएनएनआइटी), प्रयागराज	4.42
7	द बिजनेस स्कूल यूनिवर्सिटी ऑफ जम्मू, जम्मू	4.14
8	पोस्टग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस मैनजमेंट, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर, आणंद	4.07
9	डिपार्टमेंट ऑफ मैनजमेंट सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, अजमेर	3.9
10	जमुनालाल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनजमेंट स्टडीज (जेबीआइएमएस) मुंबई	3.83

नोटः आरओआइ की गणना देश में औसत वेतन को पूरे कोर्स की ट्यूशन फीस के भाग देकर की गई है

‘आइआइएम में ज्ञान का दायरा बड़ा है’

हर्ष भोगले

मंदार देवधर

“आइआइएम अहमदाबाद की विभूतियों में से एक दिवंगत प्रो. वसंत मोटे के सामने अगर कोई उनके संस्थान को बिजनेस स्कूल कहता तो वे परेशान हो जाते थे. वे याद दिलाते थे कि हम एक प्रबंधन संस्थान हैं क्योंकि इसमें सामाजिक क्षेत्र, सरकार, कृषि, छोटे और मध्यम उद्यम सब शामिल हैं. अच्छी प्रबंधन शिक्षा आपको एक संगठन चलाने के सभी पहलुओं से परिचित करा देती है. और आइआइएम-ए आपको वास्तविक जीवन की स्थितियों के माध्यम से निर्णय लेने में सक्षम बनाने का प्रयास करता है. हम हमेशा तैयार नहीं थे, लेकिन इसने हमें उस प्रक्रिया से अवगत कराया जिसकी अच्छे निर्णय में जरूरत होती है. सिस्टम की सख्ती आपको कठिन परिस्थितियों से उबरने का आत्मविश्वास देती है. वह कठोरता आइआइएम-ए की ताकत में से एक है क्योंकि यह बाहर की दुनिया को बताती है कि आप यहां के स्नातक है तो आप साधारण मिट्टी के नहीं बने हैं. इसने मुझे बदल दिया, मुझे मेरा टेस्ट कैप दिया. मुझे यहां से निकले 36 साल हो गए हैं, लेकिन मैंने इसे कभी नहीं छोड़ा.”

हर्ष भोगले *दुनिया के मशहूर क्रिकेट कमेंटेटरों में से एक हैं. वे आइआइएम अहमदाबाद के छात्र रहे हैं*

रचित गोस्वामी

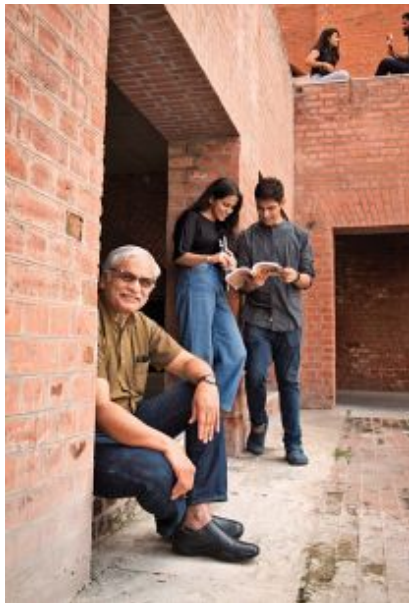

विजनरी आइआइएम अहमदाबाद के निदेशक एरोल डीसूजा संस्थान के कैंपस में

साल-दर-साल सभी ने इसका सम्मान किया है. इसलिए, जब एक छात्र को कैंपस प्लेसमेंट के दौरान नौकरी की पेशकश मिलती, तो वह हॉस्टल के कमरे में लौटकर कैजुअल कपड़े पहनकर प्लेसमेंट सेल में लौटता और अपने साथी छात्रों को नौकरी खोजने में मदद करता. कैसी मदद? आवश्यक कागजी कार्रवाई पूरी करने में मदद, मॉक इंटरव्यू के रूप में या मित्र की किसी भी अन्य की जरूरत के लिए व्यवस्था के रूप में मदद हो सकती है. संदेश छोटा लेकिन स्पष्ट था: मैं सबके लिए, सब मेरे लिए. यानी हर किसी को पूरे समूह के लिए प्रयास करना है और समूह को हरेक के लिए प्रयास करना है.

आइआइएम-सी के छात्रों में आपसी जुड़ाव गजब का है. जीवनभर का बंधन जो कॉलेज परिसर से लेकर उस कैंपस तक फैला हुआ है जिसे जीवन कहा जाता है. हम जीवन के हर पड़ाव पर एक दूसरे के लिए खड़े हैं.

2010 में जब मेरी पहली पुस्तक द

‘इसने रचनात्मक उद्यमी के रूप में मेरी यात्रा शुरू की’

नील माधव पांडा

“जिस चीज ने मुझे आइआइएम की ओर आकर्षित किया, वह थी मेरे पाठ्यक्रम का दिलचस्प नामकरण—क्रिएटिव एंटरप्रेन्योरशिप. कलात्मक प्रयासों से आजीविका कमाना कोई नई बात नहीं थी, लेकिन रचनात्मक उद्यमी के रूप में व्यवसाय करने और तरक्की की अवधारणा जरूर नई थी.

जैसे ही मैंने आइआइएम बंगलूर के परिसर में कदम रखा, मुझे लगा कि मैं सही जगह पर हूं. यहां पाठ्यक्रम रचनात्मक लोगों को अपने ज्ञान और जन्मजात क्षमताओं का दोहन करने, उन्हें आर्थिक रूप से टिकाऊ बनाने के लिए सिखाने को डिजाइन किया गया था. इसने मुझे अर्थशास्त्र की बुनियादी बातें सिखाईं, जिससे मुझे अपने काम को बेहतर ढंग से समझने और संभालने में मदद मिली. जल्द ही मेरी पहली फिल्म *आइ एम कलाम* आई. इसने मुझे न केवल रचनात्मक संतुष्टि दी बल्कि स्वतंत्र फिल्मों के लिए एक अच्छा व्यवसाय मॉडल भी स्थापित हुआ.”

नील माधव पांडा *स्वतंत्र फिल्मकार हैं*

विक्रम शर्मा

हेमंत मिश्र

सफलता की सीढ़ियां आइआइएम बंगलूर कैंपस में छात्र

इम्मोर्टल्स ऑफ मेलुहा (हिंदी अनुवाद *मेलुहा के मृत्युंजय* नाम से प्रकाशित) को 20 से अधिक प्रकाशकों ने छापने से मना कर दिया तो मैंने इसे खुद प्रकाशित करने का फैसला किया. उसके बाद मैंने प्रसिद्ध पत्रकार और आइआइएम-सी के छात्र रहे लेखक संदीपन देब से संपर्क किया. हम एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते थे लेकिन मैं इस आइआइएम-सी वाले जुड़ाव के आधार पर अपनी किस्मत आजमाना चाहता था. मैंने उन्हें अपना परिचय दिया और उनसे मेरी पुस्तक की समीक्षा करने का अनुरोध किया. वे तैयार हो गए और उन्होंने कहा कि आइआइएम के एक साथी के रूप में वे निश्चित रूप से मेरी किताब पढ़ेंगे लेकिन वे अपनी समीक्षा को लेकर पूरे ईमानदार रहेंगे. उन्होंने कहा, ''अगर यह किताब मुझे पसंद नहीं आई तो मैं रत्ती भर भी मुरव्वत नहीं बरतने वाला.'' मेरी खुशकिस्मती थी कि उन्हें पुस्तक पसंद आई और एक लेखक के रूप में मेरी यात्रा शुरू हुई.

मेरे जैसा एक अंजान लेखक उनके कद के किसी व्यक्ति को कॉल करे और उनकी तरफ से इतनी अच्छी और विनीत प्रतिक्रिया मिले, मुझे लगता है यह सौहार्द के उसी सबक के कारण था जो हमने अपने मातृ संस्थान में सीखा था.

इसके अलावा, आइआइएम-सी ने मुझे आर्थिक रूप से मजबूत लेखक बनने में मदद की. हमारे संस्थान के संख्याओं पर जोर देने से मुझे किताबों के सौदों और प्रकाशकों के साथ अनुबंधों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली. इससे मुझे अपने खर्चे पूरे करने के लिए किसी नौकरी की जरूरत के बिना पूर्णकालिक लेखक बनने में मदद मिली.

प्रबंधन शिक्षा का मतलब किसी व्यक्ति को केवल कॉर्पोरेट बोर्डरूम के लिए तैयार करना नहीं है. बी-स्कूलों में जीवन के महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाए जाते हैं जो किसी भी पेशेवर या कलात्मक कामकाज के लिए अहम हैं; वास्तव में यह व्यक्तिगत मोर्चे पर भी उतना ही अहम साबित होता है. विविध क्षेत्रों में आइआइएम-सी के पूर्व छात्रों की उपलब्धियां इस तथ्य का प्रमाण हैं. इसलिए, आइआइएम के सभी आकांक्षियों को देने के लिए मेरे पास केवल एक ही संदेश है- आइआइएम-सी केवल प्रबंधन डिप्लोमा प्राप्त करने की जगह नहीं है. इसकी बजाय इसे जीवन के सबक सीखने के लिए एक अखाड़े के रूप में देखें. जीवन एक दुष्कर यात्रा है. इसमें बड़ी कठिनाइयां हैं. यह किसी के लिए भी आसान नहीं होता. आपको जीवन की लड़ाई लड़ने के लिए इच्छाशक्ति की आवश्यकता है, सैनिक सरीखे साहस की जरूरत है. अंततः सफलता के फल का आनंद लेने और जीवन में उद्देश्य खोजने की आवश्यकता है. इन कौशलों को सीखने के लिए आइआइएम-सी से बेहतर कोई बी-स्कूल नहीं है. खुशी की बात है कि आखिरकार *इंडिया टुडे* भी मेरी राय से सहमत है.

अमीश त्रिपाठी *बेस्ट सेलिंग लेखक और लंदन स्थित नेहरू सेंटर के निदेशक हैं. वे भारतीय प्रबंधन संस्थान कलकत्ता के छात्र रह चुके हैं*

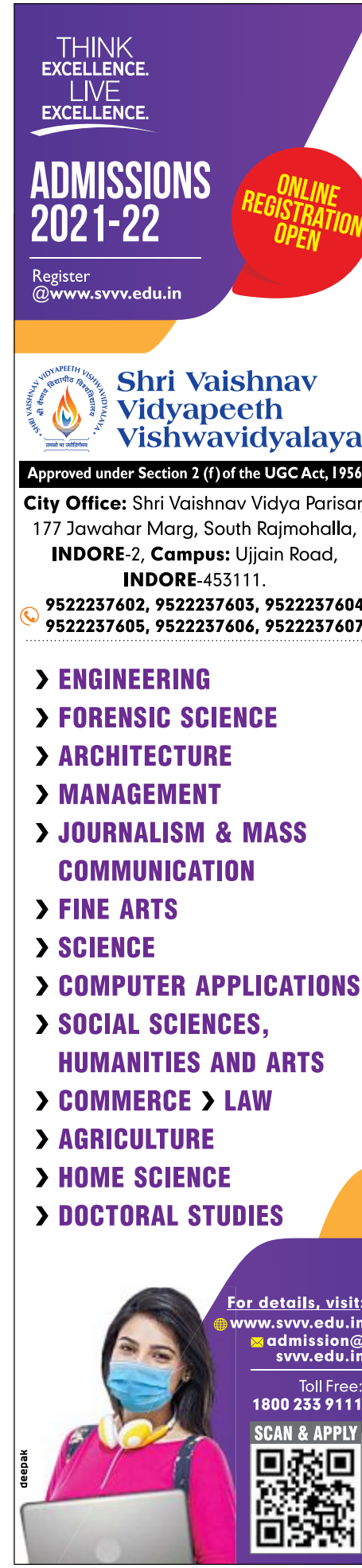

रचित गोस्वामी

भविष्य के गुर
एस.पी. जैन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च की एक क्लास

वरुण नागराज

सीमाओं को तोड़ती समावेशी शिक्षा

दुनिया के दूसरे बड़े संस्थानों के साथ गठजोड़ और नए तौर-तरीके अपनाकर मैनेजमेंट की पढ़ाई सामाजिक और तकनीकी जटिलताओं से निबटने के लिहाज से होगी ज्यादा लचीली और समृद्ध

बहुत-सी दूसरी बातों की तरह शेक्सपियर तब भी सही थे, जब उन्होंने कहा था 'बिवेयर द आइड्स ऑफ मार्च' (मार्च की पंद्रह तारीख से सावधान रहो). मार्च 2020 में महामारी ने भारत को अभूतपूर्व लॉकडाउन के गर्त में धकेल दिया. जब साफ हो गया कि सामान्य हालात जल्दी नहीं लौटेंगे, हर उद्योग और व्यक्ति ने झुककर किसी तरह खुद को बचाया और जिंदा रहने और नए सिरे से उठ खड़े होने का मंसूबा बनाने लगा. चतुराई और सूझ-बूझ की बन आई क्योंकि कई मामलों में डिजिटल टेक्नोलॉजी ने रक्षा की और बिजनेस मॉडल ने इस नई सच्चाई के हिसाब से खुद को ढाला. शिक्षा क्षेत्र ने भी मुस्तैदी से जवाब दिया. एस.पी. जैन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च (एसपीजेआइएमआर) में हम लॉकडाउन के 48 घंटों के भीतर ऑनलाइन मॉडल पर जाने में सफल रहे. हम अपनी विषय सामग्री, पढ़ाई के तौर-तरीकों और समय सारिणियों को नया रूप देकर कार्यक्रम-दर-कार्यक्रम आगे बढ़े और सुचारू ढंग से पूरी तरह काम करने लगे.

टॉप 10 प्राइवेट बिजनेस स्कूल

रैंक (2021)	संस्थान का नाम
1	एस.पी. जैन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च (एसपीजेआईएमआर), मुंबई
2	एक्सएलआरआई - जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, जमशेदपुर
3	मैनेजमेंट डेवपलमेंट इंस्टीट्यूट (एमडीआइ), गुडगांव
4	एसवीकेएम'एस एनएमआइएमएस, स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, मुंबई
5	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (आइएमटी), गाजियाबाद
6	इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (आइएमआइ), नई दिल्ली
7	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (एसआइबीएम), पुणे
8	सिम्बायोसिस सेंटर फॉर मैनेजमेंट ऐंड ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट (एससीएमएचआरडी), पुणे
9	ग्रेट लेक्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, चेन्नै
10	जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (एक्सआइएमबी), जेवियर यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर
10	टी.ए. पाई मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (टीएपीएमआइ), मणिपाल

टॉप 10 पैसा वसूल प्राइवेट बिजनेस स्कूल

रैंक आरओआइ	संस्थान	आरओआइ
1	भारत इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन ऐंड रिसर्च, चेन्नै	4.60
2	इंटरनेशनल स्कूल ऑफ इन्फॉर्मेटिक्स ऐंड मैनेजमेंट टेक्निकल कैंपस, जयपुर	4.44
3	एम.ए.एम. बिजनेस स्कूल तिरुचिराल्ली, तमिलनाडु	4.41
4	डिपार्टमेंट ऑफ एमबीए, सीएमआर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, हैदराबाद	3.91
5	अवंति डिग्री ऐंड पीजी कॉलेज, हैदराबाद	3.60
6	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, बन्नारी अम्मान इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, इरोड, तमिलनाडु	3.38
7	डीकेटीई सोसाइटीज टेक्सटाइल ऐंड इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट, इचलकरंजी, महाराष्ट्र	3.37
8	एमएलआर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, हैदराबाद	3.33
9	डिपार्टमेंट ऑफ एमबीए, सागर इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च ऐंड टेक्नोलॉजी, भोपाल	3.21
10	डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, प्रसाद वी. पोटलुरिक सिद्धार्थ इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, विजयवाड़ा	3.15

नोटः आरओआइ की गणना देश में औसत वेतन में पूरे कोर्स की ट्यूशन फीस को भाग देकर निकाली गई है

एसपीजेआइएमआर ने कक्षा की पढ़ाई को पर्सनल ग्रोथ लैब और ग्रामीण इंटर्नशिप कार्यक्रमों के साथ अनूठे तरीके से मिश्रित किया है

एसपीजेआइएमआर का दृष्टिकोण इस लिहाज से अनूठा है कि इसमें पर्सनल ग्रोथ लैब, ग्रामीण इंटर्नशिप सरीखे इसकी पहचान बन चुके कई कक्षा से इतर शैक्षणिक कार्यक्रमों को कक्षा की पढ़ाई के साथ मिलाया जाता है. कक्षा से इतर गतिविधियों को नए सिरे से ईजाद करना अतिरिक्त चुनौती लेकर आया और हमें रचनात्मक ढंग से इसकी पुनर्रचना करने को विवश कर दिया. हमारे कई छात्र अपने घर लौट गए थे. हमने पक्का किया कि हमारे छात्र जहां भी हों, सभी के पास समुचित टेक्नोलॉजी हो. हमारी प्रोग्राम टीमों की तरफ से छात्र समुदाय के साथ लगातार संवाद ने इस मुश्किल दौर में मनोबल बनाए रखने में प्रमुख भूमिका अदा की. हमारे उद्योग भागीदारों ने भी शानदार प्रतिक्रिया दी—हम इंटर्नशिप और प्लेसमेंट पूरी तरह ऑनलाइन संपन्न कर पाए. पीछे मुड़कर देखने पर यह सोचकर ही दिमाग चकरा जाता है कि हमारे यहां ऐसे छात्र हैं जो अपने सहपाठियों और शिक्षकों से साक्षात मिले बिना ज्यादा समय ऑनलाइन बिताते हुए ग्रेजुएट हो रहे हैं. ज्यों ही थोड़ी आस बंधी, हमने बैक-टू-कैंपस पहल शुरू की ताकि आमने-सामने पढ़ाई फिर शुरू करने के लिए तैयार हो सकें. हमने अव्वल दर्जे के सुरक्षा उपाय और प्रक्रियाएं स्थापित कीं जिनसे हम अपने प्रोग्राम या तो हाइब्रिड यानी मिले-जुले तरीकों से या आमने-सामने पढ़ाई से पूरे कर पाएं. अभी कक्षाएं तो हालांकि ऑनलाइन ही चल रही हैं पर हमारे कई विद्यार्थी कैंपस में सुरक्षित हैं और समुदाय की भावना का फिर लाभ उठा रहे हैं, भले ही उन्हें सुरक्षा नियमों का पालन करना पड़ रहा है. आने वाले दिनों की बात करें, तो जैसे ही स्थानीय सरकार कुछ निश्चित शर्तों के साथ आमने-सामने कक्षाएं फिर शुरू करने की इजाजत देती है, हम मिले-जुले तरीके से कक्षाएं फिर शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं, इस उम्मीद के साथ कि कई छात्र व्यक्तिगत रूप से उनमें हिस्सा लेंगे. महामारी ने हमें शिक्षा क्षेत्र के सामने मौजूद ज्यादा बड़े रणनीतिक बदलावों से निपटने में भी समर्थ बनाया. शिक्षा कैसे और कब दी जाए, इस बारे में उम्मीदों और विकल्पों को लेकर शिक्षा क्षेत्र गहरे बदलाव से गुजर

"एक्सएलआरआइ ने मुझे व्यवसाय चलाने में लोगों के महत्व के बारे में सिखाया"

लीना नायर

एक्सएलआरआइ जाना मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी. यह महाराष्ट्र के कोल्हापुर में मेरे घर से बहुत दूर था. कॉलेज जाने के लिए अभिभावकों खासकर पापा को मनाने के लिए थोड़ी जद्दोजहद करनी पड़ी क्योंकि ट्रेन से 48 घंटे सफर करने जाना था. एक्सएलआरआइ पहुंचने पर मुझे एहसास हुआ कि मैं एक कुएं में रह रही थी. वहां अद्भुत वातावरण था. बहुत ज्यादा समानता थी. मुझे अब हर चीज के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता था. मैं बहुत सारे अवसर देख सकती थी. वयस्क बनने के लिए यह एक शानदार जगह थी. मैंने संगीत का आनंद लेना शुरू कर दिया और बैंड से प्यार करने लगी. मेरे लिए तो जैसे पूरी दुनिया खुल गई.

एक्सएलआरआइ के हर पाठ्यक्रम में संगठन, लोगों, रिश्तों के महत्व पर जोर रहता है. मेरे लिए वहां का सीखने का माहौल, ट्यूटर का पालन-पोषण, पहली बार जीवन को ठीक से अनुभव करने वाला एक युवा होने का आनंद था जिसने इसे इतना खास बना दिया. इसने मुझे उस लायक बनाया, जहां मैं आज हूं.

लीना नायर यूनिलीवर की पहली महिला, पहली एशियाई, सबसे कम उम्र की मुख्य मानव संसाधन अधिकारी और यूनिलीवर लीडरशिप एग्जीक्यूटिव की सदस्य हैं. वे एक्सएलआरआइ-जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट में पढ़ी हैं

रहा है. ये बदलाव नई डिजिटल टेक्नोलॉजी, कई नए शिक्षा प्रदाताओं के उभार, वैकल्पिक एकत्रीकरण और डिलिवरी मॉडल से उत्पन्न हुए हैं और इस उम्मीद से भी कि कौशल में उन्नति आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है. दो वर्ष का एमबीए/पीजीडीएम प्रोग्राम मुख्य रूप से आमने-सामने कार्यक्रम बना रहेगा, वहीं इसकी वैश्विक सहयोग से और पर्यावरण, समाज और टेक्नोलॉजी की अभूतपूर्व जटिलताओं से निपटने के लिहाज से जरूरी नई प्रथाओं और मानसिकताओं को समाहित करके विषय सामग्री को ज्यादा लचीला और समृद्ध बनाया जाएगा. डिजिटल टेक्नोलॉजी के उभार के साथ भौतिक बुनियादी ढांचा अच्छी शिक्षा प्रदान करने में कोई रुकावट नहीं रह गया है. हम पूरी तरह ऑनलाइन या मिले-जुले डिलिवरी मॉडल का उभार देखेंगे और सही समय पर और आजीवन शिक्षा की अपनी खोज में संगठन और व्यक्ति इनका लाभ उठाएंगे. हम उम्मीद करते हैं कि संगठन जूनियर और मध्यम स्तर के अपने और ज्यादा कर्मचारियों को मिले-जुले प्रोग्रामों में नामांकित करेंगे. इसका मतलब व्यापक भिन्नताओं वाले प्रोग्राम भी है जो एसपीजेआइएमआर की तरफ दिए ही जाने चाहिए. लोगों की तरफ से भी आजीवन शिक्षा के अपने लक्ष्य पूरे करने और करियर गढ़ने की और ज्यादा तीव्र इच्छा दिखाई देगी. महामारी से पैदा उथल-पुथल ने लोगों को प्रासंगिक बने रहने के लिए या तो अपने हुनर बढ़ाने या अपने को पूरी तरह नए सिरे से ईजाद करने के लिए मजबूर किया है. यह बात पहले से कहीं ज्यादा प्रमुखता से सामने आई है कि शिक्षा जिंदगी भर चलने वाली प्रक्रिया है. शिक्षा के नए डिलिवरी मॉडल की मौजूदगी के साथ खुद अपनी प्रेरणा से लोगों की ओर से सही समय पर और आजीवन शिक्षा इस क्षेत्र की प्रमुख चालक शक्ति होने जा रही है. विद्यार्थियों के पास विकल्प हैं—उच्च शिक्षा असीमित हो गई है. उद्योग और समाज के साथ और ज्यादा मेलजोल के जरिए और ज्यादा अभ्यास वाले अनुसंधान पर अधिक ध्यान देकर छात्र-केंद्रित बने रहना ही यह सुनिश्चित करने की कुंजी है कि एसपीजेआइएमआर पैसा वसूल शिक्षा देता रहे. यह चुनौतीपूर्ण लेकिन रोमांचक वक्त है. एसपीजेआइएमआर का मिशन—परिपाटियों को प्रभावित करना और मूल्य आधारित विकास को बढ़ावा देना—इससे ज्यादा मौजूं पहले कभी नहीं था.

डिजिटल टेक्नोलॉजी के उभार के साथ भौतिक बुनियादी ढांचा अच्छी शिक्षा प्रदान करने में कोई रुकावट नहीं रह गया है

लेखक 2021 में बेस्ट प्राइवेट मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट की रैंक हासिल करने वाले एस.पी. जैन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च मुंबई के डीन हैं

देश के बेस्ट बी-स्कूल

सरकारी

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट	पढ़ने-सीखने का अनुभव	रहने का अनुभव	प्लेसमेंट परफॉर्मेंस	चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा	भविष्य का नजरिया	कुल स्कोर
		250	150	250	150	200	1000
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कलकत्ता (आइआइएम-सी), कोलकाता	217.4	142.5	222.5	133.2	181.6	897.2
2	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद (आइआइएम-ए), अहमदाबाद	230.3	142.8	222.4	135.3	166.3	897.1
3	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट बेंगलोर (आइआइएम-बी), बेंगलूरु	216.4	142.0	222.0	133.1	171.7	885.2
4	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट लखनऊ (आइआइएम-एल), लखनऊ	211.0	141.4	221.4	132.7	173.0	879.5
5	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट इंदौर (आइआइएम-आइ), इंदौर	198.0	137.3	209.1	129.6	179.7	853.7
6	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एफएमएस), यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, नई दिल्ली	188.2	130.3	212.0	117.9	131.9	780.3
7	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड (आइआइएफटी) नई दिल्ली	185.3	126.8	197.7	117.2	144.2	771.2
8	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट शिलांग, शिलांग	186.9	129.6	194.6	116.1	129.0	756.2
9	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, आइआइटी दिल्ली, नई दिल्ली	183.7	130.8	193.8	113.0	124.7	746.0
10	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट तिरुचिरापल्ली, तिरुचिराल्ली	181.6	127.9	180.9	116.6	135.8	742.8
11	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट उदयपुर, उदयपुर	180.0	127.8	176.9	109.3	146.6	740.6
12	जमनालाल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (जेबीआइएमएस), मुंबई	186.6	117.4	200.3	113.3	121.7	739.3
13	विनोद गुप्ता स्कूल ऑफ मैनेजमेंट (वीजीएसओएम), आइआइटी खड़गपुर, खड़गपुर	184.1	130.6	183.5	113.7	127.2	739.1
14	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट काशीपुर, उधम सिंह नगर	179.9	124.8	181.3	110.7	118.6	715.3
15	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट नागपुर, नागपुर	181.8	124.6	178.9	109.5	118.9	713.7
16	डिपार्टमेंट ऑफ इंडस्ट्रीयल ऐंड मैनेजमेंट इंजीनियरिंग, आइआइटी कानपुर, कानपुर	182.3	116.7	176.4	104.6	127.8	707.8
17	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अमृतसर, अमृतसर	178.2	118.2	174.8	108.4	127.1	706.7
18	सिडेनहम इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, रिसर्च ऐंड आंत्रप्रेन्योरशिप एजुकेशन (एसआइएमएसआरईई), मुंबई	177.7	104.4	168.5	113.0	134.2	697.8
19	नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन मैनेजमेंट (मैनेज), हैदराबाद	180.2	123.9	169.6	103.5	119.1	696.3
20	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट संबलपुर, संबलपुर	173.0	108.8	173.9	111.5	110.0	677.2
21	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट (आइआइएफएम), भोपाल	176.2	129.8	172.3	104.3	89.8	672.4
22	डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, नई दिल्ली	172.3	115.8	164.6	102.7	115.9	671.3
23	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिराल्ली	166.5	132.5	162.3	107.3	100.0	668.6
24	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल वेल्फेयर ऐंड बिजनेस मैनेजमेंट (आइआइएसडब्ल्यूबीएम), कोलकाता	173.1	115.2	140.5	101.7	118.0	648.5
25	वैकुंठ मेहता नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ कोऑपरेटिव मैनेजमेंट (वीएमएनआइसीओएम), पुणे, पुणे	172.3	104.5	165.3	98.3	104.8	645.2
26	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मोतीलाल नेहरू नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमएनएनआइटी), प्रयागराज	173.8	128.3	128.9	98.3	111.4	640.7
27	इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट, बीकानेर	163.3	118.5	151.2	90.1	105.9	629.0
28	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, एनआइटी राउरकेला, राउरकेला	174.2	123.3	130.8	92.8	98.4	619.5
29	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, पोंडिचेरी यूनिवर्सिटी, पुदुच्चेरी	147.6	108.2	137.3	99.2	112.5	604.8
30	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिसर्च, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़	155.1	103.4	132.7	90.5	110.0	591.7
31	इंस्टीट्यूट ऑफ इंश्योरेंस ऐंड रिस्क मैनेजमेंट (आइआइआरएम), हैदराबाद	146.9	105.5	152.9	90.6	95.0	590.9
32	द बिजनेस स्कूल, यूनिवर्सिटी ऑफ जम्मू, जम्मू	143.5	107.9	133.0	98.1	65.3	547.8
33	एम.एस. पटेल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, वडोदरा	102.8	96.7	133.2	82.0	104.1	518.8
34	सरदार वल्लभभाई पटेल इंटरनेशनल स्कूल ऑफ टेक्सटाइल्स ऐंड मैनेजमेंट, कोयंबत्तूर	146.8	85.4	107.8	83.0	91.3	514.3
35	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, अजमेर	146.2	121.1	68.6	91.6	81.5	509.0
36	पोस्टग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर आणंद	127.5	90.8	117.2	76.9	46.3	458.7
37	डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रशन भावनगर यूनिवर्सिटी, भावनगर	83.8	72.3	102.6	78.7	63.6	401.0

सभी इलस्ट्रेशनः राज वर्मा

देश के बेस्ट बी-स्कूल

प्राइवेट

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट	पढ़ने-सीखने का अनुभव	रहने का अनुभव	प्लेसमेंट परफॉर्मेंस	चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा	भविष्य का नजरिया	कुल स्कोर
		250	150	250	150	200	1000
1	एस.पी. जैन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च (एसपीजेआइएमआर), मुंबई	209.3	133.0	221.3	124.3	177.2	865.1
2	एक्सएलआरआइ–जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, जमशेदपुर	205.5	138.6	213.2	132.8	172.2	862.3
3	मैनेजमेंट डेवपलमेंट इंस्टीट्यूट (एमडीआइ), गुरुग्राम	193.1	132.7	202.0	130.3	155.8	813.9
4	एसवीकेएम'एस एनएमआइएमएस, स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, मुंबई	180.1	132.5	195.3	117.3	145.8	771.0
5	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (आइएमटी), गाजियाबाद, गाजियाबाद	189.0	128.6	179.3	113.7	149.1	759.7
6	इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (आइएमआइ), नई दिल्ली, नई दिल्ली	187.8	125.0	177.0	116.2	144.8	750.8
7	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (एसआइबीएम) पुणे, पुणे	188.3	124.3	194.8	108.2	133.0	748.6
8	सिम्बायोसिस सेंटर फॉर मैनेजमेंट ऐंड ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट (एससीएमएचआरडी), पुणे	177.2	121.0	186.1	114.7	145.0	744.0
9	ग्रेट लेक्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, चेन्नै	184.9	128.8	179.2	105.1	142.8	740.8
10	जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (एक्सआइएमबी), जेवियर यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर	185.0	129.4	181.6	114.0	130.2	740.2
10	टी.ए. पै मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (टीएपीएमआइ), मणिपाल, मणिपाल	178.4	127.7	170.5	101.4	162.2	740.2
12	आइसीएफएआइ बिजनेस स्कूल, हैदराबाद, हैदराबाद	184.5	126.1	166.1	115.8	143.6	736.1
13	गोवा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, सांकेलिम	178.9	122.3	169.6	112.8	134.8	718.4
14	के जे सोमैया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, मुंबई	183.5	128.7	161.1	112.8	127.1	713.2
15	जगदीश सेठ स्कूल ऑफ मैनेजमेंट (जेएजीएसओएम), बेंगलूरु	180.3	120.5	160.8	104.1	144.5	710.2
16	इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट आणंद, आणंद	170.8	129.5	175.7	113.0	120.6	709.6
17	एसवीकेएम'एस के नरसी मोंजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एनएमआइएमएस), बेंगलूरु	177.2	118.8	168.2	107.9	136.4	708.5
18	बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (बीआइएमटेक), ग्रेटर नोएडा	182.7	129.9	163.5	112.7	117.5	706.3
19	लाल बहादुर शास्त्री इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, नई दिल्ली	178.4	118.6	165.5	108.1	133.2	703.8
20	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, निरमा यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद	171.5	124.5	163.8	112.8	128.7	701.3
21	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस (एसआइआइबी), पुणे	181.9	120.1	167.9	96.0	128.1	694.0
22	प्रिं. एल.एन. वेलिंगकर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट डेवलपमेंट ऐंड रिसर्च, मुंबई, मुंबई	177.0	108.4	161.9	109.7	134.6	691.6
23	राजगिरी सेंटर फॉर बिजनेस स्टडीज, कोच्चि	177.6	121.2	163.8	99.1	127.9	689.6
24	लोयोला इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (एलआइबीए), चेन्नै	176.2	116.4	160.8	105.0	128.3	686.7
25	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ ऑपरेशंस मैनेजमेंट, नासिक	170.3	115.9	171.6	102.3	125.3	685.4
26	इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एंटरप्राइज (आइपीई), हैदराबाद	180.6	116.0	155.1	103.0	122.0	676.7
27	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी, नागपुर, नागपुर	172.2	130.4	154.1	97.3	122.6	676.6
28	पीएसजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, कोयंबत्तूर	172.7	118.5	154.9	102.7	127.1	675.9
29	एशिया-पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, नई दिल्ली	173.3	117.4	155.2	100.7	128.9	675.5
30	आइआइएलएम इंस्टीट्यूट फॉर बिजनेस ऐंड मैनेजमेंट, गुरुग्राम	175.5	118.6	153.6	99.6	127.0	674.3
31	बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मॉडर्न मैनेजमेंट (बीआइएमएम), पुणे	173.4	123.8	150.4	103.3	120.2	671.1
32	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ डिजिटल ऐंड टेलीकॉम मैनेजमेंट, पुणे	165.6	115.6	168.4	102.0	119.2	670.8
33	ऐमिटी बिजनेस स्कूल, ऐमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा	171.5	129.0	145.7	98.0	126.3	670.5
34	श्री धर्मस्थल मंजुनाथेश्वर इंस्टीट्यूट फॉर मैनेजमेंट डेवलपमेंट (एसडीएमआइएमडी), मैसूरु	165.1	111.9	155.2	109.7	125.7	667.6
35	प्रिं. एल.एन. वेलिंगकर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट डेवलपमेंट ऐंड रिसर्च, बेंगलूरु, बेंगलूरु	174.1	113.9	146.3	100.7	130.0	665.0
36	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, हैदराबाद, हैदराबाद	165.4	119.4	147.4	102.0	130.6	664.8
37	एसआइईएस कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नवी मुंबई	174.9	105.6	156.7	101.0	125.3	663.5
38	स्कूल ऑफ बिजनेस ऐंड मैनेजमेंट, क्राइस्ट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी), बेंगलूरु	163.0	114.0	156.0	101.3	128.6	662.9
39	आइटीएम बिजनेस स्कूल, नवी मुंबई, नवी मुंबई	171.2	116.4	152.2	100.8	116.4	657.0

देश के बेस्ट बी-स्कूल

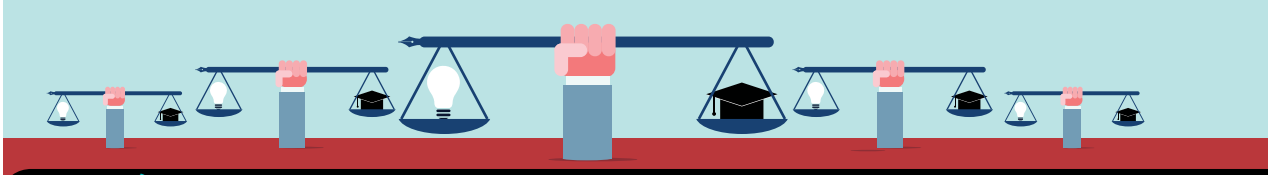

प्राइवेट

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट	पढ़ने-सीखने का अनुभव	रहने का अनुभव	प्लेसमेंट परफॉर्मेंस	चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा	भविष्य का नजरिया	कुल स्कोर
		250	150	250	150	200	1000
40	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट, बिट्स, पिलानी, पिलानी	171.9	122.1	144.6	101.9	116.1	656.6
41	जगन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (जेआइएमएस), नई दिल्ली	178.2	93.1	160.6	105.9	118.5	656.3
42	सॉइल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, गुरुग्राम	172.0	107.4	164.8	96.6	115.2	656.0
43	इंडस बिजनेस एकेडमी (आइबीए), बैंगलोर, बेंगलूरु	173.5	114.5	155.5	93.8	117.2	654.5
44	वीआइटी बिजनेस स्कूल, वेल्लोर	171.5	119.9	133.0	99.2	130.7	654.3
45	पुणे इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (पीआइबीएम), पुणे	176.2	102.5	155.6	95.0	123.0	652.3
46	जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लखनऊ, लखनऊ	164.8	107.7	154.5	103.7	120.1	650.8
47	इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, भुवनेश्वर, भुवनेश्वर	165.6	116.4	160.9	93.6	112.8	649.3
48	गीताम इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, विशाखापत्तनम	164.4	120.6	138.1	103.0	122.6	648.7
49	प्रेस्टीज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च, इंदौर, इंदौर	169.2	111.5	146.6	101.5	119.8	648.6
50	एससीएमएस कोचीन स्कूल ऑफ बिजनेस, एर्णाकुलम	172.8	118.5	135.9	90.5	126.7	644.4
51	इंटरनेशनल स्कूल ऑफ बिजनेस ऐंड मीडिया (आइएसबीएम), पुणे, पुणे	173.9	115.2	155.9	91.8	103.6	640.4
52	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी, हैदराबाद, हैदराबाद	167.3	117.9	149.3	90.2	115.0	639.7
53	जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, नोएडा, नोएडा	164.0	103.3	149.3	94.2	127.9	638.7
54	स्कूल ऑफ बिजनेस-यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम ऐंड एनर्जी स्टडीज, देहरादून	164.3	114.4	144.5	94.0	121.2	638.4
55	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, गाजियाबाद, गाजियाबाद	171.9	106.7	144.3	103.8	110.3	637.0
56	चितकारा बिजनेस स्कूल, राजपुरा	171.6	110.3	144.7	83.9	125.0	635.5
57	एन.एल. डालमिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिसर्च, मुंबई	174.8	96.0	142.5	103.8	118.0	635.1
57	सिम्बायोसिस सेंटर फॉर इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (एससीआइटी), पुणे	163.9	101.1	161.2	93.1	115.8	635.1
59	जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विस (एक्सआइएसएस), रांची, रांची	165.3	92.1	144.5	103.1	127.5	632.5
60	यूनिवर्सल बिजनेस स्कूल, मुंबई	167.3	123.5	147.0	81.8	111.7	631.3
61	फॉर्च्यून इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस (एफआइआइबी), नई दिल्ली	166.3	96.4	143.8	99.4	125.3	631.2
62	सिम्बायोसिस स्कूल ऑफ बैंकिंग ऐंड फाइनेंस, पुणे	154.5	119.3	154.8	87.3	115.2	631.1
63	एम्स स्कूल ऑफ बिजनेस, बेंगलूरु	170.1	116.9	135.1	89.5	118.6	630.2
64	जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जयपुर, जयपुर	163.3	102.3	136.8	101.5	121.8	625.7
65	स्कूल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, आइआइएचएमआर यूनिवर्सिटी, जयपुर	167.2	112.6	144.8	90.1	109.9	624.6
66	जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड आंत्रप्रेन्योरशिप, कोच्चि	168.8	113.5	137.5	86.2	117.2	623.2
67	बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट (बीआइएमएचआरडी), पुणे	158.5	105.5	153.1	90.9	113.0	621.0
68	मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, मणिपाल	165.6	121.9	122.7	86.6	122.4	619.2
69	क्रिस्टु जयंती कॉलेज, बेंगलूरु	152.6	126.4	139.8	82.4	116.4	617.6
70	आइआइईबीएम, इंडस बिजनेस स्कूल, पुणे	158.7	108.2	149.1	92.2	109.0	617.2
71	जी.एल. बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनजेमेंट ऐंड रिसर्च, ग्रेटर नोएडा	170.0	102.0	147.3	81.4	112.8	613.5
72	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मानव रचना इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च ऐंड स्टडीज, फरीदाबाद	169.4	115.2	126.6	92.5	109.2	612.9
73	आचार्य बैंगलोर बी स्कूल, बेंगलूरु	155.1	108.9	142.6	90.7	115.5	612.8
74	आइ.टी.एस स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, गाजियाबाद	166.6	111.0	132.5	90.8	110.9	611.8
75	पंजाब कॉलेज ऑफ टेक्निकल एजुकेशन, लुधियाना	163.2	103.1	141.0	84.6	115.7	607.6
76	जगन्नाथ इंटरनेशनल मैनेजमेंट स्कूल, नई दिल्ली	171.3	82.2	141.0	95.9	116.2	606.6
77	जे.के बिजनेस स्कूल, गुरुग्राम	162.4	120.3	147.3	81.7	94.5	606.2
78	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, डी.वाई. पाटिल (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी), नवी मुंबई	142.8	117.2	136.0	91.0	118.3	605.3
79	एमिटी बिजनेस स्कूल, ग्वालियर, ग्वालियर	160.6	123.1	129.7	75.2	116.1	604.7

रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट	पढ़ने-सीखने का अनुभव	रहने का अनुभव	प्लेसमेंट परफॉर्मेंस	चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा	भविष्य का नजरिया	कुल स्कोर
		250	150	250	150	200	1000
80	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी, चेन्नै	165.6	121.3	126.9	81.6	108.9	604.3
81	एमिटी बिजनेस स्कूल, गुरुग्राम, गुरुग्राम	165.9	115.1	120.5	87.6	113.3	602.4
82	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, हिंदुस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ऐंड साइंस, चेन्नै	160.2	120.0	127.3	92.2	101.8	601.5
83	नेविल वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिसर्च, पुणे	153.6	116.0	132.6	82.1	117.0	601.3
84	एमिटी यूनिवर्सिटी, छत्तीसगढ़, रायपुर	165.3	120.7	120.8	79.5	114.6	600.9
84	जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, इंदौर, इंदौर	162.9	107.8	146.1	82.2	101.9	600.9
86	यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ बिजनेस, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, मोहाली	163.2	103.5	142.4	85.8	105.4	600.3
87	एम.एस. रमैया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, बेंगलूरु	147.7	104.5	139.6	90.4	117.5	599.7
88	सीएमएस बिजनेस स्कूल जैन (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी), बेंगलूरु	147.0	111.2	151.8	79.8	108.7	598.5
89	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, बन्नारी अम्मान इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, इरोड	163.0	115.8	134.6	83.0	101.8	598.2
90	किर्लोस्कर इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड मैनेजमेंट स्टडीज, पुणे, पुणे	151.7	107.2	144.5	87.7	106.7	597.8
91	ज्ञान ज्योति इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड टेक्नोलॉजी, मोहाली	161.4	91.6	144.9	78.6	121.1	597.6
92	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी, जयपुर	160.6	114.1	130.9	81.0	110.7	597.3
93	रुंगटा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, भिलाई, भिलाई	165.6	112.2	118.9	90.6	109.8	597.1
94	जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, गाजियाबाद, गाजियाबाद	147.9	99.0	139.0	97.6	113.5	597.0
95	सूर्यदत्त इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, पुणे	165.0	102.1	136.9	79.2	113.2	596.4
96	बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस (बीआइआइबी), पुणे	162.7	113.1	126.8	94.4	98.8	595.8
96	श्री राम मूर्ति स्मारक इंटरनेशनल बिजनेस स्कूल, लखनऊ	163.2	113.5	127.5	89.8	101.8	595.8
98	तक्षशिला बिजनेस स्कूल, जयपुर	145.9	108.3	154.9	87.1	99.5	595.7
99	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, आइटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर, ग्वालियर	163.9	108.5	125.7	81.4	116.1	595.6
100	आर.वी. इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, बेंगलूरु	161.2	83.3	139.4	90.1	121.5	595.5
101	कलकत्ता बिजनेस स्कूल, बिष्णुपुर	147.0	110.3	141.1	78.5	118.3	595.2
102	प्रेस्टीज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर, ग्वालियर	166.1	105.0	124.1	89.5	110.2	594.9
103	बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ टेलीकॉम ऐंड मैनेजमेंट, पुणे	151.0	110.3	148.1	95.5	89.8	594.7
104	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मेप्को श्लेंक इंजीनियरिंग कॉलेज, शिवकाशी	153.5	110.0	134.0	95.0	102.1	594.6
105	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, आइएमएस यूनिसन यूनिवर्सिटी, देहरादून	151.2	92.8	145.7	87.1	117.5	594.3
106	सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ कंप्यूटर स्टडीज ऐंड रिसर्च, पुणे	147.1	104.9	147.5	88.5	106.2	594.2
107	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नोएडा, नोएडा	163.3	102.5	131.6	91.0	105.7	594.1
108	भारत इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन ऐंड रिसर्च, चेन्नै	162.2	105.1	145.2	91.1	90.3	593.9
109	भारती विद्यापीठ'स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिसर्च, नवी मुंबई	164.3	114.5	117.9	93.0	104.0	593.7
110	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट ऐंड कॉमर्स, पूर्णिमा यूनिवर्सिटी, जयपुर	164.9	105.2	129.9	85.6	107.8	593.4
111	अजय कुमार गर्ग इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, गाजियाबाद	170.0	105.0	139.7	74.7	103.6	593.0
112	के.एल. बिजनेस स्कूल, के.एल.ई. फाउंडेशन (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी), गुंटूर	147.1	103.1	133.5	91.1	116.5	591.3
113	कोंगु बिजनेस स्कूल, इरोड	159.5	107.7	117.5	92.7	113.7	591.1
114	इंटरनेशनल स्कूल ऑफ इन्फॉर्मेटिक्स ऐंड मैनेजमेंट टेक्निकल कैंपस, जयपुर	160.0	107.1	128.5	78.9	115.8	590.3
115	ऐमिटी बिजनेस स्कूल, जयपुर, जयपुर	165.5	117.5	106.1	83.1	116.8	589.0
116	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, रेवा यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु	158.6	104.8	134.9	79.2	109.6	587.1
117	ध्रुव कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, हैदराबाद	160.8	116.1	122.8	93.6	93.6	586.9
118	एमआइटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, पुणे	153.7	115.6	124.4	80.5	111.4	585.6

प्राइवेट

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट	पढ़ने-सीखने का अनुभव	रहने का अनुभव	प्लेसमेंट परफॉर्मेंस	चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा	भविष्य का नजरिया	कुल स्कोर
		250	150	250	150	200	1000
119	श्री रामदेवबाबा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड मैनेजमेंट, नागपुर	160.2	93.3	125.6	82.5	121.6	583.2
120	श्री साईराम इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, चेन्नै	159.9	107.6	119.3	87.0	107.6	581.4
121	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, वेल टेक रंगराजन डॉ. शकुंतला आर ऐंड डी इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी, चेन्नै	146.6	115.8	117.0	90.2	110.4	580.0
122	सेंट एलॉयसियस इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, मंगलूरु	136.6	114.0	126.0	91.8	110.3	578.7
123	आइसीबीएम स्कूल ऑफ बिजनेस एक्सीलेंस, हैदराबाद	158.9	90.0	136.2	83.9	108.4	577.4
124	डिपार्टमेंट ऑफ एमबीए, केएलएस गोगटे इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, बेलागवी	157.3	102.2	126.5	83.4	107.5	576.9
125	आइसीएफएआइ बिजनेस स्कूल, देहरादून, देहरादून	137.3	109.3	136.0	83.5	110.1	576.2
125	एससीएमएस स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी, एर्णाकुलम	135.2	102.6	131.8	91.8	114.8	576.2
127	ऑरोरा'स बिजनेस स्कूल, हैदराबाद	159.6	93.8	137.8	74.8	110.1	576.1
128	डॉ. एसएनएस राजलक्ष्मी कॉलेज ऑफ आर्ट्स ऐंड साइंस (स्वायत्त), कोयंबत्तूर	168.1	106.9	113.8	80.5	106.7	576.0
129	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट ऐंड कॉमर्स, संस्कृति यूनिवर्सिटी, मथुरा	159.6	107.6	119.0	84.7	104.8	575.7
130	क्वांटम स्कूल ऑफ बिजनेस, क्वांटम यूनिवर्सिटी, रुड़की	152.0	104.9	135.9	88.2	93.7	574.7
131	सेंटगिट्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, कोट्टयम	160.2	110.4	97.3	89.9	116.7	574.5
132	इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस स्टडीज ऐंड रिसर्च (आइबीएसएआर), नवी मुंबई	168.0	99.9	149.8	68.3	87.2	573.2
133	आइसीएफएआइ यूनिवर्सिटी त्रिपुरा, अगरतला	156.0	110.4	121.2	76.8	106.8	571.2
134	लॉयड बिजनेस स्कूल, ग्रेटर नोएडा	159.3	89.7	139.9	78.5	103.6	571.0
135	कलैग्नारकरुणानिधि इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कोयंबत्तूर	153.3	116.0	113.2	81.8	106.5	570.8
136	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट इन्फॉर्मेशन साइंस, भुवनेश्वर	162.1	108.6	128.2	88.4	82.2	569.5
137	दून बिजनेस स्कूल, देहरादून	151.6	101.8	128.9	80.7	106.1	569.1
138	नारायण बिजनेस स्कूल, अहमदाबाद	138.1	89.7	145.3	86.0	109.9	569.0
139	आइटीएम बिजनेस स्कूल, चेन्नै, चेन्नै	159.2	89.8	116.3	89.2	114.1	568.6
140	ससमीरा'ज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिसर्च, मुंबई	163.4	82.5	122.2	87.2	113.0	568.3
140	एमिटी बिजनेस स्कूल, मुंबई, मुंबई	151.4	107.6	119.6	72.9	116.8	568.3
142	स्कूल ऑफ बिजनेस ऐंड इकोनॉमिक्स, एडमास यूनिवर्सिटी, कोलकाता	170.3	119.4	92.9	71.2	114.4	568.2
143	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट ऐंड कॉमर्स, के.आर. मंगलम यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम	146.3	90.9	137.1	77.9	115.6	567.8
144	आइआइकेएम द कॉर्पोरेट बी-स्कूल, चेन्नै	160.0	92.9	126.0	79.2	109.3	567.4
145	विज्ञान ज्योति इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, हैदराबाद	150.6	95.3	125.1	93.1	103.1	567.2
146	विवेकानंद एजुकेशन सोसाइटी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिचर्स, मुंबई	161.5	90.7	131.9	84.6	97.3	566.0
147	स्कूल ऑफ बिजनेस, गलगोटियाज यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा	122.7	102.4	136.7	82.5	121.4	565.7
148	सविता स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, चेन्नै	155.7	99.9	113.5	81.9	114.5	565.5
149	आइसीएफएआइ यूनिवर्सिटी, झारखंड, रांची	164.9	111.5	125.3	80.2	83.4	565.3
150	आइएसबीआर बिजनेस स्कूल, बेंगलूरु	145.6	91.6	126.8	92.0	109.2	565.2
151	भारतीय विद्या भवन्'स उषा लक्ष्मी मित्तल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, नई दिल्ली	157.2	72.0	144.3	82.9	108.5	564.9
152	आइआइएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा	150.3	104.5	133.2	82.3	94.3	564.6
153	विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, कोयंबत्तूर	153.7	111.5	125.3	70.8	103.0	564.3
154	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, एमआइटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी, पुणे	112.7	113.0	138.0	89.6	109.9	563.2
155	आइपीएस एकेडमी, इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च, इंदौर	150.7	93.0	121.5	85.2	112.7	563.1
156	डीजे एकेडमी फॉर मैनेजरियल एक्सीलेंस, कोयंबत्तूर	149.6	117.2	120.3	79.4	96.3	562.8

रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट	पढ़ने-सीखने का अनुभव	रहने का अनुभव	प्लेसमेंट परफॉर्मेंस	चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा	भविष्य का नजरिया	कुल स्कोर
		250	150	250	150	200	1000
157	दयानंद सागर कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट ऐंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, बेंगलूरु	127.5	104.3	136.0	94.3	100.2	562.3
158	सेंट जोसफ्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, बेंगलूरु	141.8	88.1	133.1	96.8	102.4	562.2
159	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, श्री सरस्वती त्यागराज कॉलेज, कोयंबत्तूर	165.5	111.9	125.4	79.4	79.8	562.0
160	आदित्य स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, कोयंबत्तूर	155.9	110.0	126.9	70.8	98.1	561.7
161	चंडीगढ़ बिजनेस स्कूल ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, मोहाली	145.1	97.3	113.5	86.8	118.3	561.0
162	एफएमएस-विजडम, बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली	145.7	85.1	111.8	97.7	120.6	560.9
162	शिवा सिवानी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, हैदराबाद	136.9	102.0	121.4	94.0	106.6	560.9
164	एक्सिस इंस्टीट्यूट ऑफ प्लानिंग ऐंड मैनेजमेंट, कानपुर	138.4	102.4	134.4	77.1	108.5	560.8
165	विवेकानंद एजुकेशन सोसाइटी बिजनेस स्कूल, मुंबई	152.7	89.1	131.8	78.2	107.5	559.3
166	हिंदुस्तान कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, कोयंबत्तूर	161.9	108.2	93.0	87.2	108.1	558.4
167	एग्रीकल्चर ऐंड फूड मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, मैसूरु	161.9	102.6	140.9	78.8	73.2	557.4
168	डिपार्टमेंट ऑफ एमबीए, एसएनएस कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, कोयंबत्तूर	144.4	103.4	124.2	84.4	99.7	556.1
169	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट, जेईसीआरसी यूनिवर्सिटी, जयपुर	159.6	108.6	115.8	69.9	101.9	555.8
170	हिंदुस्तान कॉलेज ऑफ आर्ट्स ऐंड साइंस, कोयंबत्तूर	142.8	83.0	127.5	79.5	122.9	555.7
171	प्रेस्टीज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट देवास, देवास	161.6	93.7	118.3	87.5	92.5	553.6
172	नेहरु स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, त्रिशूर	132.1	108.7	131.4	83.6	97.4	553.2
173	डीकेटीई सोसाइटी'ज टेक्सटाइल ऐंड इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट, इचलकरंजी	120.6	115.6	126.1	85.5	105.1	552.9
174	तीर्थंकर महावीर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड टेक्नोलॉजी, मुरादाबाद	158.9	97.9	125.2	77.5	92.7	552.2
175	लाला लाजपतराय इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, मुंबई	137.9	85.0	138.3	83.1	104.1	548.4
176	वेल्लालर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, इरोड	150.9	102.4	110.4	80.9	102.0	546.6
177	एमएलआर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, हैदराबाद	154.1	109.5	112.9	81.4	88.1	546.0
178	आइईएस'एस मैनेजमेंट कॉलेज ऐंड रिसर्च सेंटर, मुंबई	132.0	94.2	127.5	94.7	97.5	545.9
179	केसीटी बिजनेस स्कूल, कोयंबत्तूर	129.1	106.9	118.3	81.5	109.0	544.8
180	डिपार्टमेंट ऑफ एमबीए, सीएमआर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, हैदराबाद	157.1	88.6	113.2	90.3	95.0	544.2
181	आइबीएमआर बिजनेस स्कूल, गुरुग्राम	130.4	86.0	133.5	82.7	110.7	543.3
182	लीड कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, पालक्काड	151.4	82.5	126.1	79.4	102.3	541.7
183	दुर्गादेवी सराफ इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मुंबई	153.3	90.5	105.9	81.8	109.7	541.2
184	एमएम इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (एमएमआइएम), अंबाला	132.6	110.7	115.3	90.1	91.5	540.2
185	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट साइंस, श्री राम मूर्ति स्मारक कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, बरेली	151.1	110.0	117.3	88.1	72.9	539.4
186	इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड मैनेजमेंट, कोलकाता	156.3	85.3	84.9	95.1	114.2	535.8
187	टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, नई दिल्ली	158.1	97.1	89.0	93.7	97.6	535.5
188	एसजीपीसी'ज गुरु नानक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मुंबई	140.9	76.4	125.4	92.6	98.9	534.2
189	श्री रामकृष्ण आर्ट्स ऐंड साइंस कॉलेज, कोयंबत्तूर	152.0	102.3	106.2	80.1	92.9	533.5
190	ओम कोठारी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च, कोटा	147.0	96.7	117.1	82.1	89.5	532.4
190	एमिटी बिजनेस स्कूल, लखनऊ, लखनऊ	134.5	122.1	102.6	80.9	92.3	532.4
192	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट, रतिनम कॉलेज ऑफ आर्ट्स ऐंड साइंस, कोयंबत्तूर	161.8	109.1	99.4	77.6	83.7	531.6
193	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, जी पुलैया कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी (स्वायत्त), कुरनूल	148.9	106.7	108.1	65.5	101.7	530.9
194	सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट रिसर्च ऐंड डेवलपमेंट, नागपुर	159.8	81.6	79.3	95.6	113.7	530.0
195	मेडी-कैप्स यूनिवर्सिटी, इंदौर, इंदौर	125.2	98.2	119.1	86.8	98.4	527.7

प्राइवेट

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट	पढ़ने-सीखने का अनुभव	रहने का अनुभव	प्लेसमेंट परफॉर्मेंस	चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा	भविष्य का नजरिया	कुल स्कोर
		250	150	250	150	200	1000
196	भारतेश एजुकेशन ट्रस्ट'स ग्लोबल बिजनेस स्कूल, बेलगाम	161.8	100.7	112.2	90.0	62.6	527.3
197	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिसर्च सेंटर, बीएमएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बेंगलूरु	131.0	95.8	122.3	92.7	84.6	526.4
198	एमआइईटी बिजनेस स्कूल, मेरठ	129.6	98.6	108.6	82.0	107.4	526.2
199	तुला'ज इंस्टीट्यूट, देहरादून	137.2	112.6	121.0	66.8	86.6	524.2
200	पारुल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च, वडोदरा	121.4	88.5	119.3	71.3	122.6	523.1
201	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, ईश्वरी इंजीनियरिंग कॉलेज, चेन्नै	142.4	98.8	108.1	89.5	81.2	520.0
202	डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, गांधी इंस्टीट्यूट फॉर टेक्नोलॉजीकल एडवांसमेंट (जीआइटीए), भुवनेश्वर, भुवनेश्वर	143.6	108.6	121.8	86.2	58.9	519.1
203	द ऑक्सफोर्ड कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, बेंगलूरु	127.8	98.7	107.9	90.1	93.8	518.3
204	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, मॉडल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, जम्मू	137.8	89.6	113.1	80.5	96.1	517.1
205	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, प्रेसिडेंसी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु	117.9	90.4	112.3	89.8	105.8	516.2
206	इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, जीएलए यूनिवर्सिटी, मथुरा	120.7	97.4	104.7	79.6	110.4	512.8
207	तिलक राज चड्ढा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड टेक्नोलॉजी, यमुना नगर	121.8	102.8	118.1	92.5	74.8	510.0
208	जागरण लेकसिटी बिजनेस स्कूल, जागरण लेकसिटी यूनिवर्सिटी, भोपाल	147.8	107.0	114.0	71.8	69.1	509.7
209	आइए स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, बेंगलूरु	121.5	103.9	108.9	84.6	89.7	508.6
209	सेंट जोसेफ'ज पीजी कॉलेज, हैदराबाद	127.0	74.7	110.1	86.9	109.9	508.6
211	डिपार्टमेंट ऑफ एमबीए, ग्रेटर नोएडा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, ग्रेटर नोएडा	110.1	93.6	132.8	75.9	96.1	508.5
212	हिंदुस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कोयंबत्तूर	117.4	128.0	124.8	78.5	59.1	507.8
213	राजश्री इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी, बरेली	138.5	112.0	77.7	74.8	101.6	504.6
214	इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च (आइबीएमआर), हुबली	126.3	78.7	126.9	63.2	106.9	502.0
215	इंदिरापुरम इंस्टीट्यूट ऑफ हायर स्टडीज, गाजियाबाद	156.6	95.5	99.2	71.1	78.4	500.8
216	स्कूल ऑफ बिजनेस ऐंड मैनेजमेंट, एनएसएचएम नॉलेज कैंपस, दुर्गापुर	113.7	97.6	116.4	75.1	97.0	499.8
217	सीएमआरयू स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, बेंगलूरु	110.7	100.3	129.2	71.3	86.8	498.3
218	कर्नाटक लॉ सोसाइटी'ज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एजुकेशन ऐंड रिसर्च, बेलागवी	135.0	91.0	117.3	84.5	70.1	497.9
219	आइटीएम बिजनेस स्कूल, वारंगल, वारंगल	112.6	102.4	132.2	76.2	72.6	496.0
220	डॉ. वी. एन. बेडेकर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, ठाणे	145.6	60.6	116.7	82.2	83.8	488.9
221	फ्रांसिस जेवियर डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, (एफएक्सडीओएमएस), तिरुनेलवेली	152.5	92.8	88.1	80.2	75.1	488.7
222	एक्रोपोलिस फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च, इंदौर	136.6	52.2	123.0	93.0	77.5	482.3
223	पोद्दार मैनेजमेंट ऐंड टेक्नीकल कैंपस, जयपुर	147.0	83.7	106.4	76.8	67.8	481.7
224	डॉ. डी.वाइ. पाटिल विद्यापीठ ग्लोबल बिजनेस स्कूल रिसर्च सेंटर, पुणे	137.6	89.6	67.7	79.9	105.8	480.6
225	जीएनवीएस इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, मुंबई	129.2	77.5	112.4	75.0	85.6	479.7
226	बी.एल.डी.ई. एसोसिएशन'स ए.एस. पाटिल कॉलेज ऑफ कॉमर्स (स्वायत्त), विजयपुरा	139.9	115.7	56.9	76.7	86.3	475.5
227	जीआरजी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, पीएसजीआर कृष्णम्मल कॉलेज फॉर विमेन, कोयंबतूर	130.9	84.5	67.4	84.8	104.8	472.4
228	नेताजी सुभाष इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, जमशेदपुर	139.4	109.9	111.8	74.6	32.1	467.8
229	फैकल्टी ऑफ कॉमर्स बिजनेस मैनेजमेंट, आम्रपाली इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी साइंसेज, हल्द्वानी	122.9	107.9	88.7	77.3	65.8	462.6
230	एस.वी. इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, कडी	96.4	102.6	112.0	79.2	67.8	458.0
231	लक्ष्मी नारायण कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, भोपाल	107.8	89.7	114.9	89.1	56.4	457.9
232	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट, प्रेसिडेंसी कॉलेज, बेंगलूरु	103.7	82.5	108.6	80.5	79.4	454.7

रैंक (2021)	इंस्टीट्यूट	पढ़ने-सीखने का अनुभव	रहने का अनुभव	प्लेसमेंट परफॉर्मेंस	चयन प्रक्रिया, संचालन और सांचा-ढांचा	भविष्य का नजरिया	कुल स्कोर
		250	150	250	150	200	1000
233	गुरु नानक कॉलेज (स्वायत्त), चेन्नै	115.0	105.3	64.4	93.0	76.9	454.6
234	पीपल्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च, भोपाल	76.9	89.1	136.4	76.4	72.9	451.7
235	डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन ऐंड रिसर्च, श्री संत गजानन महाराज कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, शेगांव	112.7	113.3	76.9	90.4	57.4	450.7
236	साउ लीना किशोर ममीद्वार इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिसर्च, चंद्रपुर	114.4	64.4	101.5	85.3	83.1	448.7
237	प्रणवीर सिंह इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कानपुर	97.1	98.9	106.3	80.5	60.1	442.9
238	डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, कानपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कानपुर	108.9	98.5	96.5	76.0	62.4	442.3
239	सहरदया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, त्रिशूर	115.5	108.1	88.8	71.7	57.7	441.8
240	रॉयल स्कूल ऑफ बिजनेस, रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, गुवाहाटी	123.0	102.6	67.2	82.0	65.9	440.7
241	एम.ए.एम. बिजनेस स्कूल, तिरुचिरापल्ली	96.9	85.6	116.5	69.0	71.8	439.8
242	विरुधुनगर हिंदू नाडर्स सेंथीकुमारा नाडर कॉलेज, विरुधुनगर	132.3	92.7	110.8	78.7	25.2	439.7
243	ग्लोबल बिजनेस स्कूल, हुबली	112.5	60.5	102.9	82.8	79.0	437.7
244	बाबा फरीद कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट ऐंड टेक्नोलॉजी, बठिंडा	101.9	92.0	111.2	69.8	62.5	437.4
245	शेषाद्रिपुरम इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, बेंगलूरु	97.7	62.9	111.4	84.0	81.0	437.0
245	डिपार्टमेंट ऑफ एमबीए, सागर इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च ऐंड टेक्नोलॉजी, भोपाल	120.5	89.5	97.0	78.2	51.8	437.0
247	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट साइंस, एस.ए. इंजीनियरिंग कॉलेज, चेन्नै	125.9	92.4	72.7	81.6	62.8	435.4
248	सी.के. शाह विजापुरवाला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, वडोदरा	83.6	79.0	102.7	92.8	77.0	435.1
249	जेएसपीएम'स जयवंत इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, पुणे	83.8	91.5	108.3	70.8	78.2	432.6
250	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, द ऑक्सफोर्ड कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बेंगलूरु	123.5	90.2	82.3	90.1	46.1	432.2
251	पिरामिड कॉलेज ऑफ बिजनेस ऐंड टेक्नोलॉजी, फगवाड़ा	106.5	40.6	135.7	53.8	95.0	431.6
251	एस.बी.जैन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट ऐंड रिसर्च, नागपुर	120.6	78.9	91.1	71.0	70.0	431.6
253	सिंहगढ़ बिजनेस स्कूल, पुणे	122.4	55.0	111.2	78.8	62.0	429.4
254	आस्था स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, भुवनेश्वर	146.3	87.5	85.0	75.7	24.1	418.6
255	अवंति डिग्री ऐंड पीजी कॉलेज, हैदराबाद	90.6	44.2	113.0	78.1	92.1	418.0
256	सनशाइन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, राजकोट	104.3	47.4	89.2	75.1	100.0	416.0
257	डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, प्रसाद वी पोटलुरी सिद्धार्थ इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, विजयवाड़ा	100.7	88.0	91.7	79.9	51.8	412.1
258	टी. जॉन कॉलेज, बेंगलूरु	117.2	97.7	56.5	83.4	54.0	408.8
259	डी.ए.वी. इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, फरीदाबाद	127.2	58.3	86.2	80.7	56.3	408.7
260	सुराना कॉलेज, बेंगलूरु	105.3	66.3	90.8	85.5	60.2	408.1
261	आइटीएम वोकेशनल यूनिवर्सिटी, वडोदरा	96.9	71.2	100.5	72.1	62.8	403.5
262	चेतन बिजनेस स्कूल, हुबली	132.4	42.2	97.6	71.9	57.8	401.9
263	इंदौर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट ऐंड रिसर्च सेंटर, इंदौर	102.1	31.2	113.9	66.9	86.3	400.4
264	श्री वैष्णव इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, इंदौर, इंदौर	124.7	99.5	62.5	85.3	27.8	399.8
265	एआइएसएसएमएस इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, पुणे	113.4	72.6	79.6	73.6	44.2	383.4
266	अमजद अली खान कॉलेज ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, हैदराबाद	78.1	47.9	75.8	76.0	86.6	364.4
267	डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स, कॉमर्स ऐंड मैनेजमेंट, मार्टिन लूथर क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, शिलांग	110.1	51.7	24.3	70.4	93.3	349.8
268	सरोजिनी नायडू वनिता महाविद्यालय, हैदराबाद	98.3	63.0	65.0	79.5	34.2	340.0

रैंकिंग केवल ऑब्जेक्टिव डेटा पर आधारित है केवल उन्हीं कॉलेजों की रैंकिंग की गई है जिन्होंने अपना ऑब्जेक्टिव डेटा जमा किया था. आइआइएम-कोझिकोड, आइएसबी हैदराबाद आदि इंस्टीट्यूट जिन्होंने अपना ऑब्जेक्टिव डेटा समय पर जमा नहीं किया या फिर इसमें शामिल होने से मना कर दिया, उनकी रैंकिंग नहीं की गई है. रैंकिंग में भाग लेने के लिए केवल उन्हीं कॉलेजों को योग्य माना गया जिन्होंने निम्नलिखित मानक पूरा किया था:

i. कम-से-कम तीन बैच उत्तीर्ण होकर निकले हों; ii. जो मैनेजमेंट में फुलटाइम पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम ऑफर करते हों सभी स्कोर की गणना दशमलव के एक अंक तक ही की गई है, ऐसे में मानकवार स्कोर जोड़ने में हो सकता है कि त्रुटियां दिख जाएं एनपीः नॉट पार्टिसिपेटेड (भाग नहीं लिया)

जसिंता केरकेट्टा

आदिवासी लेखिका

अंधकार है उम्मीद जहां

शहर में हर पर्व का संबंध प्रायः किसी की जीत-हार, हत्या, अंधकार-प्रकाश से होता है लेकिन आदिवासी समाज में त्योहार प्रकृति के उत्सव के प्रतीक होते हैं. अंधकार बुराई का नहीं बल्कि नए जीवन की आस, मनुष्य की आस्था और समर्पण का चिन्ह है

उन दिनों पिता का तबादला बिहार के किसी न किसी जिले में हो जाता. तबादले के कारण हम अलग-अलग जिलों में रहते. कभी पटना, कभी सिवान, कभी बेतिया. कुछ समय संताल परगना के कई जिलों में भी रहना हुआ. बचपन में मां के साथ रोहतासगढ़ से लेकर औरंगाबाद तक घूमना हुआ. कई परिवारों के बीच रहना हुआ. दीवाली के दिन हम सहेलियां खूब पटाखे फोड़ती, फुलझड़ी जलातीं. मैं सहेलियों को देखकर अपने घर के पास घरौंदा बनाती. दीया जलाती. अपने आदिवासी समाज में कौन-कौन से पर्व-त्योहार हैं? यह समाज कैसा है? इसका कुछ पता नहीं था.

झारखंड अलग राज्य बनने के पहले मां हमें लेकर गांव आ गई. एक छोटा-सा मिट्टी का घर बनाया. मैंने मिट्टी के ऊपर सीमेंट की पतली परत चढ़ाने को कहा ताकि बरसात में घर बचा रहे. दीवाली से पहले मैंने पूरे घर को सफेद रंग से पोचड़ा कर दिया. मां ने खेती के लिए एक जोड़ी बैल खरीद लिया. अपने घर में बैलों के आने से पहले काका के काड़ा-काड़ी से ही हमारे खेत जोते जाते. हम मुर्गी, बत्तख, बकरी पालने लगे. पास ही दूसरे प्रखंड के स्कूल में मेरा दाखिला हो गया. मैं अब हर पूजा छुट्टी में अपने गांव आती. काकी इसे दीवाली नहीं कहती. वह इसे सोहराय कहती. काकी कहती, ''ई दिवारी न लागे. गाय-गोरू केर परब सोहराय हिके. (यह दीवाली नहीं है. यह गाय-बैलों का पर्व सोहराय है.) काकी मुझे पटाखा भी फोड़ने नहीं देती, कहती ''काड़ा- काड़ी, छगरू-पठरू मन डराय जबाएं.'' (भैंसा-भैंसी, उनके बच्चे डर जाएंगे.)

काकी दीवाली के दूसरे दिन अपने काड़ा-काड़ी, गाय-बैल, छगरू-पठरू सबको नहलाती. फिर उनके गोहार घर को साफ-सुथरा करती. काड़ा-काड़ी, गाय-बैल, बकरी, छगरू-पठरू सबको फुंदना, माला से सजा देती. उनको बच्चों की तरह खिला-पिलाकर, झुककर उनको प्रणाम करती. काकी कहती, ''उकरे कमाई जुन हमरे मन सालों भईर खइला.'' (उनकी कमाई ही तो सालों भर हम खाते हैं.) काड़ा-काड़ी, गाय-बैल सबको खिलाने के बाद चावल के डुंबू हम लोग भी खाते. यह उस कहानी से अलग था जो मैंने सुनी थी. यहां लोग राम के अयोध्या से लौटने की खुशी में दीया नहीं जला रहे थे, न इसे अंधकार पर प्रकाश के विजय का पर्व बता रहे थे.

शहर में पर्व का संबंध किसी के जीतने, किसी के हारने, किसी के मारे जाने से जुड़ा था, लेकिन कोई त्योहार पशुओं का सम्मान करने,

आदि पर्व

संगठित धर्म जिन मूल्यों पर जोर देता है, उन्हें आदिवासी समाज बड़ी सहजता से जीता है

चित्र: महेश वर्मा

उनके प्रति कृतज्ञ होने के लिए भी हो सकता है, यह मैंने आदिवासी समाज के निकट आकर जाना. मेरे लिए यह अद्भुत था. मैंने अपनी जड़ों को जानने, उसकी ओर लौटने की शुरुआत वहीं से की.

स्कूली शिक्षा के दौरान मां-बाबा संगठित धर्म में चले गए थे. बचपन से हमें बताया गया था कि आदिवासी भूतों की पूजा करते हैं, लेकिन बड़े होते हुए जाना कि जो भूत दिखते हैं वह न दिखने वाले भूतों से ज्यादा खतरनाक होते हैं. ये अंधकार में नहीं उजाले में घूमते हैं और आदिवासी समाज को लूटते हैं. संगठित धर्म में जाने के बाद हम जिन जीवन-मूल्यों की बातें सुनते, उनका पालन करते हुए घर के लोगों को नहीं पाते. लौटकर गांव में अपने काका-काकी को देखा कि वे ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं, किसी संगठित धर्म का हिस्सा नहीं हैं, लेकिन काका काकी का बहुत सम्मान करते हैं. वे सहज हैं, सरल हैं. काका कहते कि एक स्त्री जो घर संभालती है, दूसरे घर से आकर नए घर को अपनी मेहनत से बनाती है, उसका सम्मान सबसे जरूरी है. मैंने देखा वे शाम को थोड़ा हड़िया भी पीते तो मांदर लेकर चूल्हे के पास मांदर बजाते रहते और काकी रोटी पकाती हुई, गीत गाती रहती. काका जैसे काकी की मेहनत का सम्मान करते, वैसे ही भर बरसात खेत में मेहनत करने वाले अपने घर के काड़ा-काड़ी , गाय-बैल, छगरू-पठरू सबका सम्मान करते. यही नैसर्गिक जीवन मूल्य है, जो आदिवासियों में बचा हुआ है. संगठित धर्म जिन मूल्यों पर जोर देता है, उन मूल्यों को आदिवासी समाज बड़ी सहजता से जीता है. अच्छा इनसान होने के लिए किसी धर्म की जरूरत नहीं है.

बचपन में बताया गया था कि आदिवासी भूतों की पूजा करते हैं. बड़े होने पर जाना कि दिखने वाले भूत न दिखने वालों से ज्यादा खतरनाक होते हैं.

नैसर्गिक मूल्यों का पालन करते हुए भी धरती पर आदमी एक बेहतर जीवन जी सकता है.

आदिवासी इलाकों में देखा, लोग पेड़ और पहाड़ों की पूजा कर रहे हैं. उनके धार्मिक स्थलों के चारों ओर कोई दीवार नहीं है. मुझे लगा यही ऐसा विश्वास है जो आसमान की तरह फैला हुआ है और कोई भी इसके नीचे आकर खड़ा हो सकता है. एक ऐसा समाज जो पूजा नहीं करता, वह प्रकृति की सेवा करता है. आदिवासी ''पूजा'' और ''धर्म'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कम ही करते. वे पूजा के लिए ''सेवा'' जैसे शब्द का प्रयोग करते. उनका हर त्योहार कृतज्ञता प्रकट करने, पुरखों, पेड़-पौधों, जानवरों की सेवा करने से शुरू होता. उनमें और संगठित धर्म के बीच यह बड़ा फर्क देखा.

मैंने आदिवासियों के बीच अंधकार का अर्थ बदला हुआ पाया. अंधकार बुराई का प्रतीक नहीं है. आदिवासी कहते हैं अंधकार नींद के लिए जरूरी है, भोर की उम्मीद के लिए जरूरी है. अंधकार सुकून, समर्पण, भरोसे का प्रतीक है. गांव के चारों तरफ मुंडा आदिवासी रहते हैं. काका मुंडा आदिवासियों की सृष्टि-कथा सुनाते: हमारे प्रथम पुरखा के समय धरती पर चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश था. रात नहीं होती थी. दिन भर प्रथम पुरखा काम करते थे. सिंगबोंगा (मुंडा आदिवासी अपने सर्वोच्च भगवान को सिंगबोंगा कहते हैं) ने प्रथम पुरखा से पूछा, ''तुम आराम क्यों नहीं करते?'' तब प्रथम पुरखा ने कहा, ''कैसे आराम करें? सूरज तो डूबता नहीं है. चारों तरफ दिन ही दिन है.'' तब सिंगबोंगा को अपनी गलती का एहसास हुआ. फिर उसने अंधेरे को बनाया. मगर अंधेरे में घर लौटते वक्त लोग रास्ता भूल जाते थे. तब सिंगबोंगा ने चांद और तारे बनाए. हमारे प्रथम पुरखा अब शाम होते ही अपने घर लौटते और खा-पी कर जल्दी सो जाते. अब वे दिन भर मेहनत करते और रात को गीत गाते, नाचते-गाते. इसलिए रात और दिन, प्रकाश और अंधकार दोनों एक समान हैं. कोई छोटा-बड़ा नहीं है.

सोहराय के दूसरे दिन शाम को गाय-बैल को गायटाड़ (वह स्थल जहां सोहराय के समय कई गांवों के लोग गायों को एकत्र करते हैं) लाया जाता है. गायटाड़ में एक सुअर बंधा होता है. गाय-बैल गायटाड़ में दौड़ते हैं. उनके सींग से सुअर की मौत होने पर लोग उसे उठाकर ले जाते हैं. सोहराय कई तरीकों से मनाया जाता है. संताल जहां तीन या पांच दिनों तक इसे मनाते हैं, वहीं उरांव आदिवासी इसे दो दिनों तक मनाते हैं. कहीं-कहीं गाय और भैंस के लिए अलग तरीके से भी सोहराय मनाया जाता है. झारखंड के अलग-अलग हिस्सों में भी थोड़ा फर्क पाया जाता है, जैसे लातेहार जिले के आस-पास लोग सारे मवेशियों को सजा कर एक जगह एकत्र करते हैं. वहीं उनकी पूजा या सेवा होती है.

आदिवासियों के सारे पर्व जमीन, जंगल, नदी, पहाड़ के इर्द-गिर्द घूमते हैं. खेती-किसानी से जुड़े हैं. क्या होगा जब विकास के नाम पर प्रकृति उजाड़ दी जाएगी? तब वर्चस्ववादी संस्कृति तो जय-पराजय का पर्व मनाती रहेगी लेकिन आदिवासी किसकी सेवा करेंगे? क्या पूजा की जगह वे विलाप करेंगे? जैसे दशहरा के वक्त असुर आदिवासी समुदाय के लोग विलाप करते हैं. उनका विलाप कैसा होगा? क्या लोग उस विलाप को सुन सकेंगे या वह त्योहारों के शोर में वह गुम हो जाएगा? ■

अनुकृति उपाध्याय

कहानीकार और कवयित्री

जब रावण पर हावी हुई सीता

हांगकांग में स्कूली बच्चों के साथ रामायण मंचित करते हुए इस सत्य से परिचय हुआ कि महान कथाएं विभिन्न व्याख्याओं के जरिए खुद को उद्घाटित करती हैं

मेरा शहर जयपुर एक कदीमी शहर है. वहां आश्विन अंत से ही हवाओं में दीपावली की सरगर्मियां गूंजने लगतीं. दीपावली माता की कहानी कही जाती—एक बार माता राजा के नगर में निकलीं, तो उन्हें न किसी ने आसन दिया न पानी, न रोली-मोली से सत्कारा, न खील-बताशे परोसे. कहानी कहने वाले के अनुरूप कहानी की नायिका कभी ब्राह्मणी, कभी चौधराइन और कभी कृषक-पत्नी होती.

देश छोड़ने पर पहला प्रवास दक्षिण चाइना सागर के हांगकांग में हुआ. पहली दीपावली से वहां कोई उम्मीद नहीं थी. घर की दीपावली का बचपन वाला भोला, अनाविल टटकापन तो भारत में भी खोने लगा था. कुम्हार के दीयों, मालिन की फूलमालाओं की जगह चीन में बना सस्ता-भड़कीला प्लास्टिक का सामान आ गया था. वैसे भी हांगकांग के अंतरराष्ट्रीय इंवेस्टमेंट बैंक में दीपावली की छुट्टी कौन देता और बेहिसाब काम के बीच क्या दीपावली मनती? जो शहर विविधरंगी रौशनियों में नित्य ही सजाधजा रहता हो, वहां दीपावली की मंद झनकती आहट कहां सुनाई देती.

लेकिन दीपावली के माह भर पहले से हमवतन प्रवासियों में उमंग उठने लगी. ताश-पार्टियों और भोजों के निमंत्रण आने लगे. चिम्सा चोई की भारतीय सामान की दुकानों में दीपक और लक्ष्मी पूजन का सामान भारत से आए मसालों, प्रेशरकुकर और स्टील के बर्तनों के बीच सजने लगा. एक परिचिता ने किसी अंतरराष्ट्रीय स्कूल में दीपावली की कथा सुनाने और नृत्य-नाटक का आयोजन करने में सहायता के लिए कहा. मैंने सोचा अनेक देशों के ये कार्टून-प्रेमी बच्चे जिनके लिए दुनिया हथेली पर रखा आमलक फल है, उन्हें रामायण में कहां रस आएगा? लेकिन मना नहीं कर पाई. शायद बचपन में देखी रामलीला की स्मृति पुनर्नवा करने का लालच भी रहा हो. खैर, एक शनिवार हांगकांग द्वीप के हरे छोर पर बने नामी पुराने स्कूल जा पहुंची. नाटी पहाड़ियों और असीम सागर की पृष्ठभूमि में रंग-बिरंगे वस्त्र पहने बच्चे स्कूल के मंच पर आ जुटे. आरंभिक कक्षाओं के इन बच्चों को मैं राम-रावण के महासमर की कहानी सुनाने लगी—एक-दूसरे का हाथ थाम कर बैठे विभिन्न भाषाओं, देशों और वर्णों के बच्चों की आंखें फैलती गईं. दशरथ की तीन पत्नियों पर प्रश्न हुआ, और उनके समाधान भी खोजे गए:

एक साथ तीन पत्नियां? राजा ने जरूर दो को तलाक दिया होगा.

अगर नहीं दिया था, तो पुलिस ने राजा को पकड़ लिया होगा.

नहीं पकड़ा होगा, राजा तो खुद ही पुलिस था!

वनवास के प्रसंग पर दशरथ और कैकेयी को धिक्कारा गया. राम पर भी प्रश्न उठे:

अनफेयर! उन्होंने अपने पिता की अन्यायपूर्ण बात क्यों मान ली?

मारीच-वध और सीता हरण पर तूफान खड़ा हो गया.

गोल्डन डियर? हाओ? कैसे?

राम तो भगवान थे, उन्हें कैसे बुद्धू बना दिया?

हनुमान की कारगुजारियों पर किलकारियां गूंजी.

गोल्ड की लंका को जला दिया तब तो सोना पिघल गया होगा? सब लोगों के पैर पिघले सोने में चिपक गए होंगे! फिर हनुमान को कैसे पकड़ा?

यानी हनुमान सुपरमैन थे!

इस कथा ने सभी भिन्नताओं को परे कर साझा संवेदनाओं को जगा दिया. मुझे लगा कि बच्चों ने जो कथा सुनी, वह उससे भिन्न थी जो मैंने सुनाई थी. चरित्रों के प्रति सहानुभूति और उदासीनता उनकी अपनी थी. वे श्रद्धा के बोझ के बिना कथा की व्याख्या और समाधान कर रहे थे.

जब पात्र चुनने का समय आया तो सबसे अधिक दरख्वास्त हनुमान और रावण के लिए आईं— सबसे स्ट्रांग तो हनुमान और रावण हैं, न! कथा की ऐसी अनायास पहचान और उससे ऐसा पूर्वाग्रहविहीन जुड़ाव इन बच्चों के लिए ही संभव था.

राम-लक्ष्मण के चरित्र के लिए दो बच्चियां आईं: हम बेस्ट फ्रेंड हैं.

लेकिन राम-लक्ष्मण भाई थे, बहनें नहीं.

तो क्या! लकड़ियों को ये रोल क्यों नहीं मिल सकता? दो बहनें भी रावण को हरा सकती हैं.

मैं निरुत्तर. तय हुआ कि रामलीला के पूर्वार्ध में वे राम-लक्ष्मण बनेंगी और दूसरे भाग में दो लड़के.

लेकिन कोई सीता नहीं बनना चाहता

था. जब एक घूंघरदार बालों और काली आंखों वाली बच्ची को कहा, तो उसका ताम्बई मुख तमतमा गया. नो, नो, उसने होंठ फुला लिए—सीता तो बिल्कुल लड़ी नहीं. मैं तो रावण को डंडा मार कर भगा देती.

मुझे मानना पड़ा कि सीता का रावण को डंडे से न मारना, जबकि जंगल में छड़ियों की भरमार रही होगी, बेहद संदिग्ध था. लेकिन शायद सीता को लड़ना सिखाया ही न गया हो?

काली आंखों में संशय घिरा रहा. सीता तो गॉडेस थीं, उन्हें तो जरूर लड़ना आता होगा.

कभी-कभी हम अपनी शक्ति भूल जाते हैं, मैंने कहा, जैसे हनुमान को भी जांबवान ने याद दिलाया था कि वे कितने शक्तिशाली हैं .

सीता के मम्मी-पापा ने क्यों नहीं कहा कि वह देवी है और उसमें बहुत गर्ल-पावर है?

यह प्रश्न मेरी बिसात से बड़ा था. मैंने आसान राह पकड़ी और सीता की सुंदर पोशाक, बालों में गुंथे फूलों और झनकती चूड़ियों का जिक्र करने लगी. नहीं, नहीं, उस बच्ची ने अपना सिर नकार में हिलाया और वानर सेना वाली कतार की ओर बढ़ गई. ऐसा ही लालच दे कर सीता की भी गर्ल पावर भुला दी गई होगी, उसने जाते-जाते शगूफा छोड़ा. अंत में सीता के चरित्र को बदल दिया गया, तब जाकर लड़कियां तैयार हुईं. यह सीता रावण को घूंसे मारती थी, वानर सेना के साथ नाचती-कूदती थी.

मुझे याद नहीं कि नृत्य-नाटिका सफल रही या नहीं, लेकिन मैं मानना चाहती हूं कि वे प्रश्नाकुल बच्चे जीवन में जरूर सफल हुए होंगे. उन बच्चों ने बड़ी सरल रीति और निरपेक्ष भाव से रामायण के मर्म को समझ लिया था—निडर और बेहिचक जिज्ञासा आपको अगर सच नहीं तो सच के निकट जरूर ले जाती है. ■

चित्रः महेश वर्मा

चित्रः महेश वर्मा

महादेव टोप्पो

आदिवासी लेखक

ग्रंथ से परे हमारा धर्म

आदिवासी होने के अपने सुख, दुख, तकलीफें और त्रासदियां हैं. कई बार आप स्कूल, कॉलेज, दफ्तर और समाज में उपेक्षित हो सकते हैं, अपमानित किए जा सकते हैं. आपकी पहचान एक अजीब या अजनबी व्यक्ति के रूप में हो सकती है. कई बार आदिवासियों के बीच भी धर्म, जाति, क्षेत्र या भाषा के नाम पर आपकी पहचान प्रश्नांकित हो सकती है. जीवन भर यह झेलता रहा हूं. कोई कहता है ईसाई हूं, कोई कहता है हिंदू हूं. बचपन में पिताजी ने कहा था हम इन दोनों से अलग हैं और ''संवसार'' या ''सरना'' कहे जाते हैं. तब हमारे समाज के ही कुछ लोग हमें शैतानपूजक भी कहते थे क्योंकि हमारे अधिकांश अनुष्ठान ''बलि'' दिए बगैर पूरे नहीं होते थे. कुछ लोगों का मानना था कि हमारा कोई धार्मिक, आध्यात्मिक अस्तित्व नहीं है. आज विश्व भर में आदिवासी इतिहास, जीवन, परंपरा को नए सिरे से समझा जा रहा है और जिस जीवन को पैगनिज्म, एनीमिज्म आदि कहा जाता था, उसकी सम्मानजनक व्याख्या की जा रही है कि बिना पैगंबर, अवतार, धर्मग्रंथ, भव्य आराध्य-स्थल के बगैर भी आस्था संभव है.

जिस आस्था का कभी कोई अस्तित्व नहीं समझा गया था, सन् 2011 की जनगणना के अनुसार उन आदिवासी ''सरना'' धर्मावलंबियों की संख्या भारत में पचास लाख के करीब है. कई आदिवासी त्योहारों को हिंदू पर्वों के साथ जोड़ दिया जाता है. स्कूलों में शायद ही कभी आदिवासी त्योहारों के बारे पढ़ाया जाता है. उनके नायकों, भाषा, पर्वों की जानकारी पाठ्यक्रमों में लगभग नहीं है. ''फग्गु'' को होली तथा ''सोहराई'' को दीवाली से जोड़ दिया जाता है. आदिवासियों के अधिकांश त्योहार पृथ्वी या प्रकृति से जुड़े हैं. ये त्योहार किसी राजा के आगमन, किसी शत्रु की हत्या पर आनंद मनाने के लिए नहीं मनाए जाते, बल्कि प्रकृति के विविध रूपों की वंदना, उनके ईश्वर (सिंगबोंगा, धरमेस, बड़ादेव) के प्रति कृतज्ञता और आत्मीयता दर्शाने के लिए है. झारखंड के कई आदिवासी समुदाय ''आसाढ़ी पूजा'' करने के बाद जंगल नहीं जाते, क्योंकि तब जंगल में नये बीजों से अंकुर निकल आते हैं, पशु, पक्षियों के नन्हें बच्चे बड़े हो रहे होते हैं.

झारखंड में आदिवासियों के त्योहार सरहुल में आदिवासी मांदर, ढोल बजाते, नाचते, गाते शामिल होते हैं. सरहुल को आदिवासी भाषाओं में बाहा, बा (फूल), खेखेल बेंज्जा (धरती विवाह) भी कहा जाता है. लेकिन जब इसकी शुरुआत प्रसिद्ध आदिवासी नेता व अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद के संस्थापक कार्तिक उरांव ने 1967 में की थी तो मुश्किल से सौ लोग शामिल हुए थे. बाद में प्रसिद्ध शिक्षाविद रामदयाल मुण्डा भी अपनी अमेरिकी पत्नी के साथ इस जुलूस में शामिल होने लगे. इसने आदिवासियों में आत्मबोध और गौरव पैदा किया. त्योहारों की नई व्याख्या की जाने लगी. संयुक्त राष्ट्र संघ 2022 से आदिवासी भाषा दशक मनाने की घोषणा कर चुका है. इससे आदिवासी दर्शन, परंपरा और विरासतों को समझने में सहायता मिलेगी. ■

इंडिया टुडे RPG खुशी की खोज

अजय गोवले, 36 वर्ष

वाइस प्रेसिडेंट (कम्युनिटी इंपैक्ट), यूडब्ल्यूएम

मुंबई

भविष्य का *रास्ता*

यूनाइटेड वे मुंबई ने शहर के नौ समुद्रतटों को गोद लिया है. यह संस्था उन्हें साफ रखने और यहां आने वालों को इन जटिल पारितंत्रों की अहमियत समझाने में मदद करती है

किरण डी. तारे

सितंबर के आखिरी दिनों की बादलों भरी एक सुबह करीब 40 छात्राएं मुंबई के माहिम बीच पर एकत्र हुईं. गणेशोत्सव के दो दिन बाद वे एनजीओ यूनाइटेड वे मुंबई (यूडब्ल्यूएम) के बैनर तले सफाई कार्यक्रम के लिए आई थीं. उन्होंने कचरा बीना और यूडब्ल्यूएम के कार्यकर्ताओं को सौंप दिया. उन्होंने उसे छांटकर रिसाइक्लिंग सेंटरों पर भेज दिया.

यूडब्ल्यूएम ने 2017 में मुंबई के तटों की सफाई शुरू की थी. संस्था शहर के 16 किमी लंबे सुगम समुद्रतटों सरीखी सार्वजनिक जगहों को अपनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना चाहती थी. यह एनजीओ 130 साल पुराने वैश्विक संगठन यूनाइटेड वे वर्ल्ड का हिस्सा है. इसने तटों के सफाई अभियानों से 11,000 वॉलंटियर को जोड़ा और 9,000 लोगों को शहर के समुद्रतटों के समृद्ध जीवन के बारे में शिक्षित किया है. इसने शहर के तटों से 3,43,000 किलो कचरा साफ किया और 98,000 किलो कचरा रिसाइक्लिंग सेंटरों को भेजा.

यूडब्ल्यूएम ने मुंबई में मलाड से दादर के बीच नौ समुद्रतटों को गोद लिया. इनमें से हरेक तट पर तीन वेतनभोगी कार्यकर्ता, जिन्हें वह 'सफाई साथी' कहता है, और एक सुपरवाइजर नियुक्त किया. उनकी कई जिम्मेदारियां हैं. उनमें एक तटों से बीने गए प्राकृतिक ढंग से नष्ट न होने वाले कचरे (जो मुख्यत: प्लास्टिक है) को धोना भी है ताकि छांटकर एकत्र करने पर उसके साथ रेत न आ जाए.

यूडब्ल्यूएम के वाइस प्रेसिडेंट (कम्यूनिटी इंपैक्ट) अजय गोवले कहते हैं, ''तटीय शहर होने के नाते मुंबई के तटों को साफ रखना म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के लिए चुनौती है. हम उनकी मदद कर रहे हैं.'' गोवले तटों पर सफाई कामों की देखरेख करते हैं. वे कहते हैं कि सबसे बड़ी चुनौती कचरे की अंतहीन बाढ़ है. ''हर ज्वार तट पर ढेर कचरा लेकर आता है. इससे कचरा प्रबंधन के उद्दंड किस्म के तौर-तरीके विकसित हो गए हैं. शहर के नदी-नालों का ज्यादातर कचरा समुद्र (में डाल दिया जाता) है. उसे शुरुआती जगह पर ही रोक दें तो तट (पर आधा कचरा) अपने आप (गायब) हो जाएगा.''

खुशी का मंत्र

''अच्छी चीजें सीखने और करने में मैं खुशी की तलाश करता हूं. किसी समस्या को सुलझाने में भले ही मेरा योगदान नगण्य क्यों न हो मैं अपने प्रयास करने से खुश रहता हूं''

यूडब्ल्यूएम ने तटों की महत्ता और उन्हें साफ रखने की अहमियत के बारे में लोगों को संवेदनशील बनाने की पहल की. इनमें तटों के आसपास दीवारों पर पेंटिंग बनाने से

मेरा शहर, शहर की सेवा
यूएमडब्ल्यू के अजय गोवले (बाएं से चौथे) 21 सितंबर को मुंबई के माहिम बीच में वॉलंटियर्स के साथ

मंदार देवधर

लेकर अपील बोर्ड लगाना भी है. दादर चौपाटी तट पर उसने स्नैक स्टॉलों के मालिकों को कचरापेटियां बांटीं और अपील की कि तट पर कचरा नहीं फेंकने के लिए अपने ग्राहकों को प्रोत्साहित करें. गोवले कहते हैं, ''अपनेपन का एहसास गायब है. लोग तटों को मनोरंजन की जगह मानते हैं और (मौज-मस्ती के बाद अपने हाल पर) छोड़कर चले जाते हैं. लोग तटों का पारिस्थितिकीय मोल नहीं जानते. हम उन्हें तटों का पारितंत्र समझाकर संवेदनशील बनाने की कोशिश कर रहे हैं.''

यूडब्ल्यूएम ने 2017 में मुंबई के शायद सबसे उपेक्षित तट चिंबई पर पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की पहचान के लिए सर्वे किया. इसमें मैरीन विशेषज्ञों की मदद ली. उन्हें करीब 115 प्रजातियां मिलीं. ये दूसरे बीचों पर मिलने वाली प्रजातियों से दोगुनी थीं. गोवले कहते हैं, ''वहां मिली प्रजातियां मंत्रमुग्ध करने वाली हैं. हमें जिंदा ऑक्टोपस तक मिला है.'' यूडब्ल्यूएम ने एक 'मैरीन फील्ड गाइड' भी बनाई है. यह आगंतुकों को निश्चित तटों के बारे में अधिक जानकारी देती है.

यूडब्ल्यूएम की दूसरी गतिविधियों में 'शोर-वॉक' की पहल भी है. इसमें आगंतुकों को निश्चित इलाकों के समुद्रतटों की जिंदगी के बारे में बताया जाता है. इसमें यह विद्यार्थियों और साथ ही कॉर्पोरेट और सरकारी कर्मचारियों को निश्चित तटों के मौजूदा समुद्री जीवन के बारे में शिक्षित करने के लिए कक्षा सत्र चलाती है. गोवले कहते हैं, ''समुद्रतट जटिल (पर्यावरण) हैं. हमारा लक्ष्य उनमें सुधार लाना है.'' ■

खुशी की तलाश: *खुशियां बांटने की बेमिसाल पहलकदमियों का जश्न मनाने के लिए इंडिया टुडे और आरपीजी ग्रुप का साझा उपक्रम*

बुजुर्गों के लिए *खुशी के सूत्र*

डॉ. अनिरुद्ध देव
मनोचिकित्सक,
मौन फाउंडेशन से संबद्ध

''अगर आपका अपना परिवार मौजूद नहीं है तो नए दोस्त ढूंढिए. वे आपके पड़ोसी, दूधवाला, या पालतू जानवर हो सकते हैं. गरीब बच्चों को पढ़ाने जैसे किसी कल्याणी काम शुरू कर दीजिए''

1. **लोगों से जुड़ें** उम्र चाहे जितनी हो, उन लोगों की संगत में रहें जो आपको व्यक्ति के नाते आपको मूल्यवान मानते हैं और आपकी सलाह और परामर्श को अहमियत देते हैं. बुजुर्ग अक्सर कहते हैं कि उन्हें लगता है वे 'बेकार' और 'फालतू' हैं. इस भावना से लड़ने का एक तरीका उन लोगों को साथ रखना है जो आपको खुश महसूस कराते हैं और आपके जीवन में अहम हैं
2. **याद रखें, आप अकेले नहीं हैं** बढ़ती उम्र आपको दूसरों से पृथक महसूस करवा सकती है. आपकी जिंदगी के इस पड़ाव का हिस्सा बनने को तैयार लोगों से दोस्ती करें. असल में उन लोगों के साथ दोस्ती रखें जिनकी बुढ़ापे को लेकर वही चिंताएं और सरोकार हैं जो आपके हैं और साथ ही आपको सकारात्मक तरंगों और ऊर्जा से भर दें.
3. **नए शौक विकसित करें** अपनी शारीरिक हालत के अनुरूप नए शौक बनाएं. आप विश्व भ्रमण या पैदल लंबे सफर अब भले न कर पाते हों, पर खुली जगहों पर टहलकर या ड्राइव पर जाकर प्रकृति के प्रति अपना प्रेम बनाए रख सकते हैं. बागबानी या खुद अपनी सब्जियां उगाने सरीखे शौक संतोषदायक अनुभव हो सकते हैं
4. **समाज को लौटाएं** पढ़ने-लिखने में बच्चे की मदद करें या अपनी घरेलू नौकर को साक्षर बनने या नए हुनर सीखने में सहायता दें. दूसरों की और खासकर साधनहीन लोगों की मदद करने का प्रयास करें.
5. **'परिवार' की अपनी अवधारणा को व्यापक करें** आपके बच्चे उस इलाके में नहीं रहते जहां आप रहते हैं, तब भी जरूरी नहीं कि आप अकेले रहें. पड़ोसियों, उनके बच्चों या देखभाल करने वालों से मजबूत जुड़ाव विकसित करें और उन दोस्तों से भी जो आपको परिवार का हिस्सा महसूस कराते हैं .

सवाल + जवाब **उम्रभर का काम**

***शशि थरूर** का लेखन विविधतापूर्ण है और विस्तृत भी. अपना नया संकलन* प्राइड, प्रीजुडिस ऐंड पंडिट्री *आने के मौके पर इस लेखक-राजनेता का कहना है कि अभी कई किताबें उनके दिमाग में हैं*

● आपकी कई किताबें आ चुकी हैं पर इस संकलन में आपको क्या कुछ ख़ास लगता है?

किताब लिखने पर हर बार आप यही उम्मीद करते हैं कि यह स्थायी महत्व का काम होगा. पर इस संकलन को स्थायी महत्व का बनाने का ठोस प्रयास किया गया है. इसके लिए 40 साल में छपी किताबों और लेखों में से चुना गया है. इसमें मेरा कुछ उम्दा गद्य—फिक्शन और नॉन फिक्शन—है और डेविड देवीदार के कहने पर कुछ कविताएं भी डाली हैं. यह रचनात्मक जीवन को समग्रता में समेटने वाला संकलन है.

● समय की कमी या लेखकीय झिझक सरीखी चीजें आपको बिल्कुल परेशान करती नहीं दिखतीं.

जब आपने किसी से लिखने का वादा कर रखा हो और उसकी डेडलाइन हो तो सब तरफ से ध्यान हटाकर आपको लिखना ही पड़ता है. इस मामले में मैं खुद पर अमेरिकी व्यंग्यकार ए.जे. लिबलिंग की कहावत लागू करता हूं: मैं किसी भी तेज लिखने वाले से बेहतर लिखता हूं और किसी भी बेहतर लिखने वाले से तेज लिखता हूं.

● आपने जिन दो संस्थानों—संयुक्त राष्ट्र और कांग्रेस—के लिए काम किया, हाल के दिनों में वे दोनों ही साख के संकट से गुजरते दिखे हैं. क्या उनके बारे में लिखकर उनकी प्रतिष्ठा बहाल करने का ख्याल आपके दिमाग में कभी आया?

संयुक्त राष्ट्र में रहते हुए मैंने शांति रक्षा पर कुछ शोधपूर्ण लेखन किया था. सियासी दुनिया में रहते हुए मैंने किताबें और 100 से ज्यादा लेख लिखे और कांग्रेस का बचाव या उसे प्रोमोट करने से उनका कोई वास्ता न था. देखिए, मैंने अपने सिद्धांत अपनी पार्टी से नहीं लिए हैं, राजनैतिक प्रतिबद्धता लेकर मैं इसमें दाखिल हुआ था. यही चीज मुझे उन ज्यादातर नेताओं से अलग करती है जिनकी प्रतिबद्धता पार्टी में रहते हुए बनती है न कि विचारों के साथ मुठभेड़ से.

● आपका पिछला उपन्यास 20 साल पहले आया था. फिक्शन लिखना छोड़ तो नहीं दिया आपने?

साहित्य रचने के सुख से अपने को हमेशा के लिए वंचित कर लूं, ऐसी मेरी बिल्कुल मंशा नहीं है. लेकिन राजनैतिक जीवन के जिस मकाम पर अभी मैं खड़ा हूं, वहां बहुत सारा और अधूरा काम पड़ा है जिसे करना जरूरी है. ऐसे में किसी बड़े उपन्यास के उपक्रम में गंभीरता से जुट पाना मेरे लिए अभी संभव नहीं.

—श्रीवत्स नेवटिया

वंदीप सिंह